# उपोद्घात

"ज्ञानक्रियाभ्यां मोक्षः"ना अति निष्पक्ष सूत्रनुं उद्घोषन करनार जैनदर्शनमां ज्ञान अने क्रियाने समान महत्त्व आपवामां आव्युं छे; अने तेनुं ज ए परिणाम छे के जैन साहित्यना अति विशाळ खजानामां ज्ञाननुं महत्त्व समजावता जेटला ग्रंथो मळे छे तेटला ज ग्रन्थो क्रियानुं प्राधान्य जणावनारा मळे छे. आ बन्ने प्रकारना ग्रन्थोनुं सर्जन करवामां आपणा पूज्य पूर्वाचार्योए कोई जातनी खामी राखी नथी.

प्रस्तुत-बिंबप्रवेश विधि-ग्रंथने आपणे क्रिया बतावनार ग्रंथ तरीके ओळखी शकीए.

अत्यार अगाउ आ पुस्तक कोई पण सज्जन तरफथी के कोई पण संस्था तरफथी प्रसिद्ध करवामां आव्युं न हतुं. आम थवानुं एक अने कदाच मुख्य कारण तो ए छे के आवो, अनेक प्रकारना मंत्रोथी भरेलो, विधिविधाननो ग्रंथ छपावतां दरेक अचकातुं हतुं अने ए मंत्राक्षरो वगेरे बधुं शुद्ध रीते मळी आवे अने शुद्ध रीते छपाय ए माटे दरेकने वसवसो रहेतो हतो. आ रीते आ पुस्तक पहेलवहेलुं ज मुद्रित थाय छे.

आ पुस्तकने छपाववानो विचार घणा वखतथी हतो, परन्तु अनुकूळ संयोगोना अभावे तेमज जरूरनी बधी साधनसामग्री भेगी थवाना अभावे ए विचारने अमलमां मूकतां आटलो विलंब थयो छे. महुवा मुकामे पूज्य आचार्य महाराज श्री विजयनेमि-

सूरीश्वरजी महाराजना चतुर्मास दरम्यान महुवाना संघे अने शेठ श्री कशळचंद कमळशीभाईए अठाइमहोत्सव कर्यो हतो ते प्रसंगे अष्टोत्तरी स्नात्रनी विधि माटे मने भावनगरथी महुवा तेडावेल. आ अवसरे पूज्य आचार्य महाराज श्री विजयोदयसूरीश्वरजी महाराजनी साथे आ पुस्तकने छपाववा संबंधी वातचीत थई हती अने तेओश्रीनी आ पुस्तकने छपाववा माटे संमति होवाथी ए पुस्तकने छपाववानो मारो विचार वधु पाको बन्यो हतो. आ विधिनी मारी पासेनी प्रतमां मंत्रो तेमज श्लोको वगेरेमां जे कांई अशुद्धि तेओश्रीना जोवामां आवी ते तेमणे चार दिवस बेसीने सुधरावी हती. वळी तेओश्रीना जावाल(मारवाड)ना चतुर्मास दरम्यान बिंबप्रवेशविधिनी हस्तलिखित प्रतनी एक नकल करावीने मने मोकलवानी तेओश्रीए कृपा करी हती. आ रीते आ पुस्तक प्रगट थवामां तेओश्रीनी मोटी प्रेरणा गणी शकाय! आ माटे मारे तेओश्रीनो उपकार मानवो ज जोईए.

आ पुस्तकने छपावीने प्रसिद्ध करवामां, ते दरेक रीते शुद्ध छपाय ते माटे खास काळजी राखवानी हती, अने आ माटे में पूज्य आचार्य महाराज श्री विजयोदयसूरीश्वरजी महाराजे मने जावालथी जे प्रत मोकली हती तेनो अने मारी पासेनी सुधारेली प्रतनो ज मुख्यत्वे उपयोग कर्यो छे. अने आ विषयना जाणकार पूज्य आचार्य महाराजो तथा अनुभवी गृहस्थोने पूछीने, तेमज अत्यारे प्रचलित विधिमार्गने लक्षमां राखीने आ पुस्तकने तैयार कर्युं छे. एटले आ पुस्तकमां जेटलो भाग शुद्ध जणाय तेनो यश तेओनो समजवो अने जे कांई अशुद्ध जणाय ते मारी अल्पमतिनो दोष समजवो.

आपणा समाजमां, ज्यां दर वर्षे अनेक प्रतिष्ठाओ अने बृहत्स्नात्र–शांतिस्नात्रादि थतां रहे छे त्यां आवा संपूर्ण विधिने बतावता पुस्तकनी उपयोगिता विषे बे मत होई ज न शके. एटले ते संबंधी अत्रे विशेष लखवुं जरूरी नथी लागतुं.

आ पुस्तकमां दरेक पूजन के क्रियानी विधि अलग अलग आपेल छे ते विधिकारकनी अनुकूळताने ध्यानमां राखीने आपेल छे. वळी आमां विधिओनो जे क्रम आप्यो छे ते पण अत्यारे मोटे भागे जे क्रमथी प्रतिष्ठा कराववामां आवे छे तेने ध्यानमां राखीने ज आपेल छे. आम छतां दरेक वखते आ पुस्तकमां दर्शावेल क्रम प्रमाणे ज बधी विधिओ करवी एवो नियम न करी शकाय ! सगवड अगवड के अनुकूळताने हिसावे अमुक अमुक विधिना क्रममां फेरफार पण थई शके छे. दाखला तरीके आ पुस्तकमां जळयात्राविधि पहेलां आपीने नवग्रह पूजननी विधि पछी आपेल छे, पण जरूर जणातां नवग्रहपूजन पहेलां करीने पछी जळयात्रानी विधि करी शकाय छे. छतां अमुक अमुक विधि तो निश्चित क्रम प्रमाणे ज करवानी होय छे ते ध्यान बहार न जवुं जोइए. अनुभवी विधिकारको आ बधी वस्तु बराबर समजता होय छे, एटले आ पुस्तक पासे होवा छतां प्रतिष्ठानुं कार्य तो अनुभवी जाणकारो पासे ज कराववुं एवी मारी विज्ञप्ति छे.

आ पुस्तकमां जे विधि जे रीते आपेल छे ते विधि जुदा जुदा मतोथी बीजा पुस्तकमां कदी जुदी रीते पण जोवामां आवे परन्तु तेटला मात्रथी आ विधिनी शुद्धता माटे शंका करवानी जरूर नथी. मतभेद के मतांतरना कारणे भेद पण होई शके छे.

पुस्तक विशेष उपयोगी थाय अने संपूर्ण माहितीथी भरेलुं थाय ते माटे पुस्तकना अंतमां जुदां जुदां परिशिष्टो आपवामां आव्यां छे. मने लागे छे के आ परिशिष्टो विधिकारकोने माटे बहु उपयोगी नीवडशे अने तेमना कार्यने वधु सरळ बनावशे.

आ पुस्तकने अंगे अमुक खुलासानी जरूर जणातां, पूज्य वयोवृद्ध आचार्य महाराज श्री विजयसिद्धिसूरीश्वरजी महाराज पासे मारे जवुं पडेलुं, अने तेओश्रीए प्रेमपूर्वक तेनो खुलासो आपीने मने आभारी कर्यो छे. पूज्य आचार्य महाराज श्री विजयनीति-

सूरीश्वरजी महाराजे आ पुस्तकने अंगे जरूरी पुस्तक आदिनी साधनसामग्रीनो उपयोग करवा दईने तेमज पुस्तकने तैयार करवामां मने विशेष उत्साहित करीने ऋणी बनाव्यो छे. तेथी तेमनो तथा पूज्य आचार्य महाराज श्री विजयसिंहसूरीश्वरजी महाराजे तथा पूज्य आचार्य महाराज श्री विजयलाभसूरिजी महाराजे आ ग्रंथने अंगे जे कंई सहायता करी छे ते माटे तेमनो मारे उपकार मानवो जोईए. आ उपरांत श्रीयुत भाई फूलचंद खेमचंद वळाद, शेठ श्री कुंवरजी आणंदजी भावनगर, शास्त्री श्री जेठालाल हरिभाई भावनगर, भाई भोगीलाल पोपटलाल अमदावाद, पंडित श्री भगवानदास हरखचंद अमदावाद; आ बधा गृहस्थोए मने आपेल सहकारनी मारे आभार साथे नोंध लेवी जोईए. आ सिवाय जे जे सज्जनोए परोक्ष के प्रत्यक्ष रीते मने थोडो के घणो सहकार आप्यो होय तेमनो हुं आभार मानुं छुं.

मारे कहेवुं जोईए के आ सर्व विद्वानोना सहकार वगर आ पुस्तकने प्रगट करवानी हुं हाम न भीडी शकत.

दरेक जातनी सावधानी राखवा छतां, दृष्टिदोष के अल्पमतिना कारणे आमां जे कंई अशुद्धि के दोष रही गयां होय ते तरफ आ विषयना जाणकारो मारुं ध्यान दोरशे तो बीजी आवृत्तिमां ते भूल सुधारी लेवामां आवशे.

पंचभाईनी पोळ—अमदावाद.
पोष सुदी १५, १९९४

पोपटलाल साकरचंद शाह

# अनुक्रमणिका


| विधिनुं नाम | पृष्ठ संख्या | विधिनुं नाम | पृष्ठ संख्या |
|---|---|---|---|
| १ कुंभस्थापन विधि | १ | ११ नंद्यावर्त पूजन विधि (संक्षिप्त) | ५७ |
| २ दीपस्थापन विधि | ३ | १२ ध्वजारोपण विधि | ६६ |
| ३ जवारा वाववानी विधि | ४ | १३ कलश प्रतिष्ठा विधि | ७८ |
| ४ जळयात्रा विधि | ४ | १४ देवी प्रतिष्ठा विधि | ८७ |
| ५ जलानयन विधि | ११ | १५ मंडपपीठ स्थापन विधि | ९८ |
| ६ नवग्रहपूजन विधि | १२ | १६ प्रतिष्ठा (बिंब प्रवेश) विधि | १०० |
| ७ दश दिक्पालआह्वान विधि | ३१ | [नवीन प्रासादे नवीन जिनबिंब तथा प्राचीन जिनबिंब स्थापन विधि] | ११८ |
| ८ दश दिक्पालपूजन विधि | ३२ | १७ अष्टोत्तरशत स्नात्र (बृहत् स्नात्र) विधि | १२२ |
| ९ अष्टमंगळपूजन विधि | ५० | १८ शांतिस्नात्र विधि | १३५ |
| १० दश दिक्पालआह्वान बृहद् विधि | ५२ | | |

| विधिनुं नाम | पृष्ठ संख्या |
|---|---|
| १९ विसर्जन विधि | १५९ |
| २० जिन अभिषेक | १६३ |
| २१ परिशिष्टोः— | |
| १ चोवीश तीर्थंकरोनां वर्णादिकनी विगत | १६७ |
| २ चोवीश तीर्थंकरोनां लांछन, राशि नक्षत्र, वर्ग, योनि तथा राशिमेळ | १७५ |

| विधिनुं नाम | पृष्ठ संख्या |
|---|---|
| ३ मुद्राओनी समजण | १७७ |
| ४ बीजाक्षर कोष | १७९ |
| ५ बिंब प्रवेश, अष्टोत्तरी स्नात्र के शांतिस्नात्रमां जोईता सामाननी यादी | १८१ |
| शुद्धिपत्रक | १९५ |

नोंध—आ पुस्तकना अंतमां आपेल शुद्धिपत्रक प्रमाणे पहेलां पुस्तकमां सुधारो करीने पछी ज पुस्तकनो उपयोग करवो.

# बिंब प्रवेश विधि

## १ अथ कुंभस्थापन विधि

प्रथम कुंभ एक माटीनो-काळा डाघ रहित, अष्टमंगळ चितरेलो धोइ धूपीने कंठे ग्रीवासूत्र बांधी पछी *अघेडानी लेखणथी कुंभ उपर मंत्र लखवो. "ॐ ह्रीं श्रीं सर्वोपद्रवान् नाशय नाशय स्वाहा"॥ आ मंत्र केसरथी लखी कुंभ मध्ये केसरनो साथियो करवो. पछी कुंभ मध्ये धूप देवो. कुसुमांजलिए वधाववो. कंकुना छांटा नांखवा. कुंभनी अंदर चोखा, सोपारी, रूपियो अने पंचरत्ननी पोटली स्थापवी.[1] पछी उभा थई नवकार अथवा मोटी शांति गणतां अबोट जळनी अखंड धाराए कुंभ परिपूर्ण भरवो. पछी नागरवेलनां पान चार कंठे मूकी, उपर श्रीफळ मूकी, लीलो-रातो रेशमी ककडो गज सवा ढांकी ग्रीवासूत्रथी[2] बांधीए. पछी उपर केसर अने फूले पूजीए. सोना रुपाना वरख छापीए. फूलनो हार पहेरावीए. पछी जे ठेकाणे कुंभ स्थापवो होय त्यां कंकुनो साथियो[3] करी चोखा सोपारी पूरी उपर ब्रीहि शेर सवानो साथियो करावीए. पछी देरासर फरती त्रण प्रदक्षिणा दई कुंभने गाजते वाजते

१ पंचरत्न-माणेक, मोती, प्रवाळ, त्रांबु, सोनुं॥ २ मींढळ, मरडासींगी, धरो, डाभ अने नाडुं॥ ३ बिंब जे स्थाने होय तेनी जमणी बाजुमां अथवा जे स्थळे बिंब स्थापवानां होय तेनी जमणी बाजुमां कुंभ स्थापवो. * अथवा सरेडानी जाणवी.

"ॐ ह्रीं ठः ठः ठः स्वाहा" ए मंत्र सात वार भणी, श्वास स्थिर राखी, कुंभने स्वस्तिक उपर स्थापवो. कुंभस्थानके दीप अखंड राखवो, धूप त्रण काळ करवो. कुंभने वासक्षेपथी पूजी कुसुमांजलि लई काव्य बोलवुंः

पूर्णं येन सुमेरुशृंगसदृशं चैत्यं सुदेदीप्यते,
यः कीर्तिं यजमानधर्मकथनप्रस्फूर्जितां भाषते ।
यः स्पर्धां कुरुते जगत्त्रयमहादीपेन दोपारिणा,
सोऽयं मंगलरूपमुख्यगणनः कुम्भश्चिरं नन्दतात् ॥१॥

आ काव्य बोली कुंभने वधाववो.

पछी कुंभ आगळ त्रण टंक सौभाग्यवती स्त्री पासे गहुंली करावची. मार्जार प्रमुख हिंसक जीवने त्यां आववा देवा नहीं. रजस्वला प्रमुख मलिन स्त्रीनी दृष्टि पडवा देवी नहीं. सुवासण स्त्रीओ पासे उत्तम धवळ मंगळ गीत गवराववां. गानारी स्त्रीओने तंबोलादि देवां. श्रावक तथा श्राविकाओए त्यां नरकादि दुःखगर्भित, जिनमुनिना उपसर्गगर्भित, आलोयणना स्तवन तथा राजिमती प्रमुखना विलापगर्भित गीत गावां नहीं. अनित्य अशरण भावनानां गीत वर्जवां. कुंभ पासे त्रण टंक सात स्मरण[1] धूप दीप सहित गणवां.

॥ इति कुंभस्थापन विधि ॥

[1] सात स्मरण आ प्रमाणे समजवां-१ नवकार, २ उवसग्गहरं, ३ संतिकरं, ४ तिजयपहुत्त, ५ नमिऊण, ६ अजियसंती अने, ७ भक्तामर ॥

## २ अथ दीपस्थापन विधि

प्रथम तांबानुं दीपपात्र शेर सवा घी माय तेवुं, जीभवाळुं, धोइ धूपी, कंकुथी पूजी कुसुमांजलि अने चोखाथी वधावी तेमां सोपारी, रूपियो अने पंचरत्ननी पोटली मूकी पछी मींढळ मरडाशिंगी बांधी १०८ अथवा २७ तारनी दीवेट मूकी घृत मंत्र भणतां सौभाग्यवती स्त्री पासे घृत पूरावीए तेनो मंत्र—

ॐ घृतमायुर्वृद्धिकरं भवति परं जैनदृष्टिसम्पर्कात् । तत्संयुक्तः प्रदीपः पातु सदा भावदुःखेभ्यः ॥१॥ स्वाहा ।

ए मंत्र त्रण वार कही घृत पूरावीए. पछी दीप प्रगटाववो तेनो मंत्रः—

ॐ अर्हं पञ्चज्ञानमहाज्योतिर्मयाय ध्वान्तघातिने । द्योतनाय प्रतिमाया दीपो भूयात् सदाऽर्हते ॥१॥

ए मंत्र त्रण वार कही दीप प्रगटाववो. पछी कुंभनी जमणी बाजुए ज्यां दीपने स्थापवो छे त्यां कंकुनो साथियो करी उपर पलाळेली माटीनुं स्थान करीए. ते उपर दीप स्थापी वासक्षेप लइ मंत्र बोलीएः—

"ॐ अग्नयोऽग्निकाया एकेन्द्रिया जीवा निरवद्या अर्हत्पूजायाम् । निर्व्यथाः सन्तु, निष्पापाः सन्तु, सद्गतयः सन्तु न मे संघट्टनहिंसाऽर्हदर्चने ॥"

ए मंत्र त्रण वार भणी दीप तथा अग्नि शुद्ध करीए.

॥ इति दीपस्थापन विधि ॥

## ३ अथ जुवारा वाववानो विधि

जुवारीया चार तथा शरावलां चार, आठ अथवा बार काळा डाघ विनानां धोळावी ते मध्ये पैसो सोपारी मूकी काची माटी अने अडाया छाणांनो भूको पूरी तेमां सात धान्य ववरावीए. सात धान्य आ प्रमाणे समजवां–१ जव, २ जुवार, ३ वरी, ४ चणा, ५ अडद, ६ मग अने ७ घउं. तेमांना शरावलां चार कुंभनी चार बाजुए मूकवां. तेमां दररोज जोइए ते प्रमाणे पाणी सिंचवुं.

॥ इति जुवारा वाववानो विधि ॥

## ४ अथ जळयात्रा विधि

श्री शांतिनाथजीनी अथवा श्रीपार्श्वनाथजीनी प्रतिमा नवग्रह युक्त परिकरवाळी पालखीमां पधरावी खोड तथा डांम वगेरे रहित उत्तम स्नात्रीया पासे पालखी उपडावी महोत्सव पूर्वक छत्र, चामर, ध्वज, घोडा, हाथी, नाना प्रकारना वाजित्र वागता वागता वरघोडो चडावीने पाछळ सधवा स्त्रीओ धवल मंगल गाता एक निर्दोष सधवा स्त्रीना हाथमां रामणदीवो आपी वरघोडो चालतो

---

१ चांसना जवारीया चार सात सात खानांवाळां ॥ २ मात्र कुंभस्थापन शांति स्नात्रादि विधि प्रसंगे करवानुं होय त्यारे चार शरावलामां जवारा वाववा ॥ ३ जो शांतिस्नात्रादिनी साथे ध्वजादंड पूजन होय तो आठ शरावलामां जवारा वाववा ॥ ४ जो प्रतिष्ठाविधि बिंबप्रवेशविधि अने चैत्यप्रतिष्ठा होय त्यारे बार शरावलामां जवारा ववराववा ॥

करवो. मार्गमां जेटलां देवस्थानक आवे त्यां (गामनी प्रवृत्ति होय तो) एक एक श्रीफळ चडाववुं. मार्गमां चालतां कोरां बलि-बाकुल, फुल मेवा सहित उछाळतां आ गाथा कहेवी–

ॐ भुवणवइवाणमंतर–जोइसवासी विमाणवासी य ।
जे केइ दुट्ठदेवा, ते सव्वे उवसमंतु मम स्वाहा ॥१॥

एम भणतां उद्यानादिक पवित्र स्थाने जइए, त्यां कुसुमांजलि जन्माभिषेक कळश विधिपूर्वक स्नात्र भणाववुं. विस्तारपूर्वक मालोद्‌घट्टन करवुं. अथ भूमि शुद्ध करवानो मंत्र–"ॐ भूतश्रीर्भूतधात्रि विश्वाधारे नमः"। ए मंत्र सात वार भणी वास पुष्पे भूमि पूजीए. अथ पीठिका स्थापननी भूमिनो मंत्र–"ॐ ह्रीँ श्रीँ अर्हत्पीठाय नमः"। आ मंत्र सातवार गणवो. अथ बाजोठ स्थापन मंत्र–"ॐ ह्रीँ अरणं अस्मिनद्वि पृथ्वीमंडलाय स्वाहा" बोली नवकार गणी बाजोठ स्थापीए. तेनी उपर परनाळीयो बाजोठ स्थापवानो मंत्र–"ॐ स्थिराय शाश्वताय निश्चलाय पीठाय नमः" त्रण वार कहीए. अथ भूमिशुद्धि मंत्र–"ॐ ह्रीँ क्ष्मां सर्वोपद्रव रक्ष रक्ष स्वाहा"। सात वार कहीए. अथ जळशुद्धिनो मंत्र–"ॐ आपोऽप्काया एकेन्द्रिया जीवा निरवद्या अर्हत्पूजायां निर्व्यथाः सन्तु, निष्पापाः सन्तु, सद्गतयः सन्तु, न मेऽस्तु संघट्टनहिंसापापमर्हदर्चने स्वाहा"। एम कही वासक्षेप अंजलि मध्ये लइने–"ॐ सूर्यसोमाङ्गारकबुधगुरुशुक्रशनैश्चरराहुकेतुप्रमुखा ग्रहा इह जिनपादाग्रे समायान्तु पूजां प्रतीच्छन्तु।" नवग्रहनो पाटलो होय तो ते ठेकाणे, न होय तो परमेश्वर बेठा होय ते पट्ट उपर वासक्षेप करीए, पछी

अष्ट द्रव्यथी पूजा करवी. ते आ रीते–"आचमनमस्तु १, गन्धोऽस्तु २, पुष्पमस्तु ३, अक्षतोऽस्तु ४, फलमस्तु ५, नैवेद्यमस्तु ६, धूपोऽस्तु ७, दीपोऽस्तु ८"। ए रीते पूजे. पछी हाथमां फुल लइ–"ॐ सूर्यसोमाङ्गारकबुधगुरुशुक्रशनैश्चरराहुकेतुप्रमुखा ग्रहाः सुपूजिताः सन्तु, सुग्रहाः सन्तु, पुष्टिदाः सन्तु, तुष्टिदाः सन्तु, मंगलदाः सन्तु, महोत्सवदाः सन्तु"। एम कही ग्रहो उपर पुष्पो चडाववां.

ए ज रीते दश दिक्पालनी पूजा करवी–"ॐ इन्द्राग्नियमनैर्ऋतवरुणवायुकुबेरेशाननागब्रह्मलोकपालाः सविनायकाः सक्षेत्रपाला इह जिनपादाग्रे समायान्तु पूजां प्रतीच्छन्तु"। एम कही पूजाना पाटला उपर लोकपालने वासक्षेपपूजाविधि नवग्रहनी रीते करीए. इति श्री आचारदिनकरे नित्यपूजाविधि मध्ये कह्युं छे. पछी ज्ञान, दर्शन, चारित्र पूजीए. आरती, मंगळदीवो करीए. पछी चैत्यवंदन करीए—

नमो त्थु णं कहीने पछी अरिहंत चेइयाणं० अन्नत्थ० कही एक नवकारनो काउस्सग्ग करी नमोऽर्हत्० कही नीचेनी स्तुति बोलवी.

अर्हंस्तनोतु स श्रेयः–श्रियं यद्ध्यानतो नरैः।
अप्यैन्द्री सकला त्रै हि, रंहसा सह सौच्यते ॥१॥

पछी लोगस्स० सव्वलोए अरिहंत चेइयाणं० अन्नत्थ० कही एक नवकारनो काउस्सग्ग करी नीचेनी स्तुति बोलवी.

ॐ मिति मन्ता यच्छा-सनस्य नन्ता सदा यदंह्राश्च ।
आश्रीयते श्रिया ते, भवतो भवतो जिनाः पान्तु ॥२॥

पछी पुक्खरवरदी० वंदणवत्तीआए० अन्नत्थ० कही एक नवकारनो काउस्सग्ग करी नीचेनी स्तुति बोलवी.

नवतत्त्वयुता त्रिपदी, श्रिता रुचिज्ञानपुण्यशक्तिमता ।
वरधर्मकीर्तिविद्या-नन्दा स्याज्जैनगीर्जीयात् ॥३॥

पछी सिद्धाणं बुद्धाणं० कही "श्री शांतिनाथ आराधनार्थं करेमि काउस्सग्गं" एम कही वंदणवत्तियाए० अन्नत्थ० कही एक नवकारनो काउस्सग्ग करी नमोऽर्हत्० कही नीचेनी गाथा भणवी.

"श्रीशान्तिः श्रुतशान्तिः, प्रशान्तिकोऽसावशान्तिमुपशान्तिम् ।
नयतु सदा यस्य पदाः, सुशान्तिदाः सन्तु संति जने ॥१॥"

श्रीद्वादशाङ्गी आराधनार्थं करेमि काउस्सग्गं वंदणवत्तियाए० १ नवकारनो काउस्सग्ग करी नमोऽर्हत्० कही नीचेनी स्तुति कहेवी.

सकलार्थसिद्धिसाधन-बीजोपाङ्गा सदा स्फुरदुपाङ्गा । भवतादनुपहतमहा-तमोऽपहा द्वादशाङ्गी वः ॥२॥

श्रीशान्तिदेवयाए करेमि० अन्नत्थ० १ नवकार० नमोऽर्हत्० कही नीचेनी स्तुति कहेवी.

श्रीचतुर्विधसंघस्य, शासनोन्नतिकारिणी । शिवशान्तिकरी भूया-च्छ्रीमती शान्तिदेवता ॥३॥

शासनदेवयाए करेमि काउ० अन्नत्थ० १ नवकार कायोत्सर्ग नमोऽर्हत्० कही नीचेनी स्तुति कहेवी.

या पाति शासनं जैनं, सद्यः प्रत्यूहनाशिनी । साऽभिप्रेतसमृद्ध्यर्थं, भूयाच्छासनदेवता ॥४॥

खित्तदेवयाए करेमि काउ०, अन्नत्थ० कही नवकारनो कायोत्सर्ग करी नमोऽर्हत्० कही नीचेनी स्तुति कहेवी.

यस्याः क्षेत्रं समाश्रित्य, साधुभिः साध्यते क्रिया । सा क्षेत्रदेवता नित्यं, भूयान्नः सुखदायिनी ॥५॥

अच्छुत्तादेवयाए करेमि काउ०, अन्नत्थ, १ नव० कायो०, नमोऽर्हत्० कही नीचेनी स्तुति कहेवी.

चतुर्भुजा तडिद्वर्णा, कमलाक्षी वरानना । भद्रं करोतु संघस्या–च्छुप्ता तुरगवाहना ॥६॥

समस्तवेयावच्चगराणं करेमि काउ०, अन्नत्थ० १ नव० कायो०, नमोऽर्हत्० कही नीचेनी स्तुति कहेवी.

संघेऽत्र ये गुरुगुणौघनिधे सुवैया–वृत्त्यादिकृत्यकरणैकनिवद्धकक्षाः ।
ते शान्तये सह भवन्तु सुराः सुरीभिः, सदृष्टयो निखिलविघ्नविघातदक्षाः ॥७॥

जलदेवयाए करेमि काउ०, अन्नत्थ, १ नव० कायो० नमोऽर्हत्० कही नीचेनी स्तुति कहेवी.

मकरासनसमासीनः, कुलिशांकुशचक्रपाशपाणिशयः। आशामाशापालो, विकिरतु दुरितानि वरुणो वः॥८॥

त्यार पछी आ श्लोक बोलवो.

करोतु शान्तिं जलदेवताऽसौ, मम प्रतिष्ठाविधिमाचरिष्यतः ।
आदास्यते वा मम वारि तत्कृते, प्रसन्नचित्ता प्रदिशत्वनुज्ञाम् ॥९॥

त्यार पछी नवकार "नमोत्थुणं" यावत् "जय वीयराय" सुधी भणीने ते सर्व कळशोने विषे ग्रीवासूत्र बांधवापूर्वक मंत्रवडे पवित्र करेला वासक्षेप अने केशर तथा चन्दनना छांटा नांखवा. पछी जळसमीपे ते कुम्भो स्थापन करी प्रतिष्ठाविधिने तथा स्नात्रने करनारा श्रावकोए आ प्रमाणे न्यास करवा:–

"ॐ गुरुतत्त्वाय नमः, ह्रीँ आत्मतत्त्वाय स्वाहा, ह्रीँ विद्यातत्त्वाय स्वाहा, ह्रीँ पार्श्वतत्त्वाय स्वाहा ॐ मुक्तितत्त्वाय स्वाहा"। आ प्रमाणे बोली त्रण वार आचमन करवुं. त्यारपछी–"ॐ ह्रीँ नमो अरिहंताणं ह्रीँ शीर्षं रक्ष रक्ष स्वाहा। ॐ ह्रीँ नमो सिद्धाणं ह्रीँ वदनं रक्ष रक्ष स्वाहा। ॐ ह्रीँ नमो आयरियाणं हुँ हृदयं रक्ष रक्ष स्वाहा। ॐ ह्रीँ नमो उवज्झायाणं ह्रैं नाभिं रक्ष रक्ष स्वाहा। ॐ ह्रीँ नमो लोए सव्वसाहूणं ह्रौं पादौ रक्ष रक्ष स्वाहा। ॐ ह्रीँ नमो ज्ञानदर्शनचारित्रान् ह्रः सर्वांगं रक्ष रक्ष स्वाहा"। आ प्रमाणे अंगन्यास करवा. [एटले के आ मंत्र बोलतां ते ते अंगोने बन्ने हाथे स्पर्श करवो.] त्यारपछी आ प्रमाणे करन्यास करवा–

"ॐ ह्रीँ अर्हं अंगुष्ठाभ्यां नमः। ॐ ह्रीँ सिद्धास्तर्जनीभ्यां नमः। ॐ ह्रीँ आचार्या मध्यमाभ्यां नमः। ॐ ह्रीँ उपाध्याया अनामिकाभ्यां नमः। ॐ ह्रीँ सर्वसाधवः कनिष्ठिकाभ्यां नमः। ॐ ह्राँ ह्रीँ ह्रुँ ह्रूँ ह्रें ह्रैं ह्रौं ह्रः असियाउसा सम्यग्ज्ञानदर्शनचारित्रान् धर्म करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः"। आ प्रमाणे करन्यास करवा. पछी नीचे प्रमाणे बोली अंकुशमुद्रावडे जळ खेंचवुं–

"क्षीरोदधिः स्वयंभूश्च, सरे पद्ममहाह्रदे। सीता सीतोदके कुंडे, जलेऽस्मिन् सन्निधिं कुरु ॥१॥

गंगे च यमुने चैव, गोदावरि सरस्वति । कावेरि नर्मदे सिन्धो, जलेऽस्मिन् सन्निधिं कुरु ॥२॥"

पछी नीचे प्रमाणे त्रण वार बोली कूर्ममुद्रा अथवा मत्स्यमुद्रा जळने देखाडी जळ काढीने स्थापन करवुं.–

"ॐ ह्रीँ अमृते अमृतोद्भवे अमृतवर्षिणि अमृतं स्रावय स्रावय सें सें क्लीं क्लीं ब्लूँ ब्लूँ ह्राँ ह्राँ ह्रीँ ह्रीँ द्रावय द्रावय ह्राँ जलदेवीदेवा अत्र आगच्छत आगच्छत स्वाहा"।

पछी जळदेवतानी अष्ट प्रकारनी पूजा करवी. ते आ प्रमाणे–

"ॐ ह्रीँ क्लीं ब्लूँ जलदेवताभ्यो नमः" जलं समर्पयामि । ए ज प्रमाणे चन्दनं, पुष्पं, अक्षतं, फलं, नैवेद्यं, दीपं, धूपं एम पूजा करी बलिविधानपूर्वक पुष्प, नाळियेर अने फळ जळमां नांखी आ प्रमाणे बोलवुं.–

"ॐ आँ ह्रीँ क्रों जलदेवि पूजावलिं गृहाण गृहाण स्वाहा"।

त्यारपछी चार, आठ वगेरे संख्यावाळा कुंभोने जळथी भरी जळनी समीपे मोदक, पूपिका (पुरी) वगेरे नैवेद्य मूकी नीचे प्रमाणे बोलवुं–

"ॐ ह्रीँ ऋषभाजितसंभवाभिनन्दनसुमतिपद्मप्रभसुपार्श्वचन्द्रप्रभसुविधिशीतलश्रेयांसवासुपूज्यविमलानन्तधर्मशान्तिकुंथ्वरमल्लिमुनिसुव्रतनमिनेमिपार्श्ववर्धमानास्तीर्थंकरपरमदेवास्तदधिष्ठायका देवाः शान्तिं तुष्टिं ऋद्धिं वृद्धिं जयं मंगलं कुरु कुरु पां पां वां वां नमः स्वाहा"।

त्यारपछी धवलमंगळ गाता वाजित्रना नादपूर्वक पवित्र अंग अने पवित्र वस्त्रवाळी स्त्रीओ मस्तक उपर ते कुंभो स्थापन

करी साधर्मिकोना सन्मान करवा पूर्वक मोटा महोत्सववडे चैत्यने विषे अथवा घरने विषे आवी त्रण प्रदक्षिणा आपी ते जळ भरेला कळशोने जिनचैत्यमां गभारा वगेरे पवित्र स्थानने विषे स्थापवा. तथा प्रतिमाजीने पुंखणां करी गभारामां पधराववां. त्यारपछी धवलगीत गावा. वाजित्र वगाडवा. दान देवा. प्रभावना करवी इत्यादि.

॥ इति श्रीजलयात्रा विधिः ॥

## ५ अथ जलानयन विधि

[ १०८ अथवा २७ कुवानुं पाणी लाववानो विधि ]

नदी सरोवर के कुवा आदि जळाशय उपर जइ, स्नान करी, चोक्खां वस्त्र पहेरी सोनावाणी, वासचोखा वगेरे मंत्री त्यांथी ते वलिवाकुला सुधीना सर्व मन्त्रथी युक्त थइ चीरडा के कुवा आदिक पासे जइ चन्दन, धूप, दीप वगेरे अष्टप्रकारी पूजानी सामग्री लइ प्रथम नीचे प्रमाणे बोलवुं–

"ॐ वं वं वं नमो वरुणाय पाशहस्ताय सकलयादोऽधीशाय सकलजलपक्षाय समुद्रनिलयाय सकलसमुद्रनदीसरोवरपल्वलनिर्झरकूपवापीस्वामिनेऽमृतकाय देवाय अमृतं देहि देहि अमृतं स्रावय स्रावय नमोऽस्तु ते स्वाहा" ॥

पछी अंकुशमुद्रा देखाडीने पूजा करवी, ते आ प्रमाणे–

"ॐ जलं गृहाण गृहाण । चन्दनं गृ० २ । पुष्पं गृ० २ । दीपं गृ० २ । धूपं गृ० २ । अक्षतं तांबूलं नैवेद्यं फलं द्रव्यं समर्पयामि स्वाहा । बलिं गृहाण गृहाण स्वाहा" ॥

पछी नीचे प्रमाणे बोली जळ ग्रहण करवुं.–

"ॐ आपोऽप्काया एकेन्द्रिया जीवा निरवद्या अर्हत्पूजायां निर्व्यथाः सन्तु, सद्गतयः सन्तु, न मेऽस्तु संघट्टनहिंसापापमर्हदर्चने स्वाहा" ॥

ए प्रमाणे बोली जळ ग्रहण करवुं. ए प्रमाणे सर्व कुवा, वीरडा वगेरेमांथी पूजा वगेरे करी जळ ग्रहण करवुं. त्यारपछी जळाशय पासे एक खाडो गाळी तेमां दीप तथा नैवेद्य मूकवुं. पछी नदी वगेरे जळाशयमां नवकारमन्त्र भणवा पूर्वक श्रीफळने तरतुं मूकवुं.–

॥ इति जलानयनविधिः ॥

## ६ अथ नवग्रहपूजन विधि

स्नात्रना दिवसथी पहेले दिवसे वृद्ध श्रावक नवग्रह चीतरेलो सेवननो पाटलो घोइ, वासफुले वासित करी अगरधूपे करी धूपे. अघेडानी तथा सरेडानी लेखणे सुखड, केशर, कस्तूरी, कपूर, हींगळोकवडे ग्रहोने आळेखे. आचार्य पासे पहेले दिवसे प्रतिष्ठावे. बीजे दिवसे प्रभाते वृद्ध श्रावक पूर्वोक्त विधिए स्नात्र करी भगवाननी जमणी बाजु पाटलो स्थापन करे. सर्वपूजोपकरण पासे राखी धूप, दीप समीपे करी वज्रपंजर करे ते आ प्रमाणेः—

# नवग्रह, दश दिक्पाल तथा अष्टमंगल स्थापन यंत्र

नवग्रहाः

| | | |
|---|---|---|
| ॐ नमो बुधाय ४ | ॐ नम शुक्राय ६ | ॐ नमः सोमाय २ |
| ॐ नमो गुरवे ५ | ॐ नमः सूर्याय १ | ॐ नमो भौमाय ३ |
| ॐ नम· केतवे ९ | ॐ नमः शनैश्चराय ७ | ॐ नमो राहवे ८ |

दश दिक्पालाः

| | | |
|---|---|---|
| ॐ नम ईशानाय ८ | ॐ नम इन्द्राय १ | ॐ नमो अग्नये २ |
| ॐ नमः कुबेराय ७ | ॐ नमो ब्रह्मणे ९<br>ॐ नमो नागाय १० | ॐ नमो यमाय ३ |
| ॐ नमो वायवे ६ | ॐ नमो वरुणाय ५ | ॐ नमो नैर्ऋताय ४ |

अष्टमंगलानि

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| स्वस्तिक १ | श्रीवत्स २ | कुम्भ ३ | भद्रासन ४ | नंद्यावर्त ५ | वर्धमान ६ | दर्पण ७ | मत्स्ययुग्म ८ |

## अथ वज्रपञ्जरस्तोत्रम्[1]

परमेष्ठिनमस्कारं, सारं नवपदात्मकम् । आत्मरक्षाकरं वज्र-पञ्जराभं स्मराम्यहम् ॥१॥
ॐ नमो अरिहंताणं, शिरस्कं शिरसि स्थितम् । ॐ नमो सिद्धाणं, मुखे मुखपटं वरम् ॥२॥
ॐ नमो आयरियाणं, अंगरक्षातिशायिनी । ॐ नमो उवज्झायाणं, आयुधं हस्तयोर्दृढम् ॥३॥
ॐ नमो लोए सव्वसाहूणं, मोचके पादयोः शुभे । एसो पंचनमुक्कारो, शिला वज्रमयी तले ॥४॥
सव्वपावप्पणासणो, वप्रो वज्रमयो बहिः । मंगलाणं च सव्वेसिं, खादिराङ्गारखातिका ॥५॥
स्वाहान्तं च पदं ज्ञेयं, पढमं हवइ मंगलम् । वप्रोपरि वज्रमयं, पिधानं देहरक्षणे ॥६॥
महाप्रभावा रक्षेयं, क्षुद्रोपद्रवनाशिनी । परमेष्ठिपदोद्भूता, कथिता पूर्वसूरिभिः ॥७॥
यश्चैवं कुरुते रक्षां, परमेष्ठिपदैः सदा । तस्य न स्याद् भयं व्याधि-राधिश्चापि कदाचन[2] ॥८॥

। इति वज्रपञ्जरकवच ।

---

१ आ स्तोत्र बोलतां जे जे अंगनुं नाम आवे ते ते अंगने हस्तवडे स्पर्श करवो. २ शरीरजा । पाठांतर.

## १ अथ आदित्य पूजा

प्रथम चोखा, वासफुलवडे वधावीए, तेनो मंत्रः—

"ॐ ह्रीँ रत्नांकसूर्याय सहस्रकिरणाय नमो नमः स्वाहा" ॥

आ मंत्र बोली वधावीए. पछी रक्त चंदनवडे आदित्यमंडळ तथा मंत्र आळेखवो. पछी आदित्यनुं आह्वान नीचेना मंत्रथी करवुं.

ॐ नम आदित्याय सवाहनाय सपरिकराय सायुधाय अमुकगृहे[1] [अस्मिन् जम्बूद्वीपे दक्षिणार्धभरते मध्यखण्डे अमुकदेशे अमुकनगरे अमुकप्रासादे] वृद्धस्नात्रमहोत्सवे[2] आगच्छ आगच्छ स्वाहा। आ मंत्र वडे आह्वान मुद्राए आह्वान करवुं.

पछी फरीथी ते ज मंत्रवडे छेडे "अत्र तिष्ठ तिष्ठ स्वाहा" एम बोली स्थापनीय मुद्रा वडे स्थापन करवुं.

पछी फरीथी त्रीजी वार ते ज मंत्र बोली छेडे "पूजाबलिं गृहाण गृहाण स्वाहा" एम बोली अंजलिमुद्राए निमंत्रण करे.

---

१ आ पूजनमां तथा आगळ उपर आवतां दरेक पूजन वखते आ 'अमुकगृहे' शब्दने ठेकाणे उपर कौंसमां आपेल ['अस्मिन् जंबूद्वीपे' वगेरे] आखो पाठ बोलवो अने एमां ज्यां ज्यां 'अमुक' शब्द मूकेल छे त्यां त्यां ते ते देश, नगर अने स्थळनुं नाम बोलवुं.
२ शांतिस्नात्र होय तो आ स्थाने शांतिस्नात्रमहोत्सवे एम बोलवुं. जो बिंबप्रवेशनो महोत्सव होय तो बिंबप्रवेशमहोत्सवे एम बोलवुं. आ प्रमाणे ते ते प्रसंगने अनुलक्षीने बोलवुं.

ए ज मंत्रवडे अष्टप्रकारी पूजा करवी–

१ ॐ नम आदित्याय सवाहनाय सपरिकराय सायुधाय चन्दनगन्धादिकं समर्पयामि स्वाहा–एकला केशर वडे पूजीए. [दरेक पूजा वखते समर्पणनां वाक्यो साथे आ मंत्र बोलवो.]

२ पुष्पं समर्पयामि स्वाहा–कणवीरनां पुष्प चडाववां. ३ वस्त्रं समर्पयामि स्वाहा–रातुं कपडुं चडाववुं.

४ फलं समर्पयामि स्वाहा–द्राक्ष मूकवी. ५ धूपमाघ्रापयामि स्वाहा–धूप उवेखीए.

६ दीपं दर्शयामि स्वाहा–दीप देखाडीए.

७ नैवेद्यं समर्पयामि स्वाहा–गोळधाणीनो लाडु अथवा चुरमानो लाडु मुकवो.

८ अक्षतं तांबूलं द्रव्यं सर्वोपचारान् समर्पयामि स्वाहा–पान, कंकुवाळा चोखा, राती सोपारी, पैसो मुकवो.

पछी परवाळानी नवकारवाळी एक "ॐ ह्रीं रत्नांकसूर्याय सहस्रकिरणाय नमो नमः स्वाहा"। ए मंत्रे गणीए. पछी ते ज जप मंत्र बोली फुल, वासचोखा, जळ पसलीमां लइ त्रण वार अर्घ्य देवो. पछी बे हाथ जोडी प्रार्थना करवी.

पद्मप्रभजिनेन्द्रस्य, नामोच्चारेण भास्कर। शान्तिं तुष्टिं च पुष्टिं च, रक्षां कुरु जयश्रियम्॥

। इति आदित्यपूजा १।

## २ अथ चन्द्र पूजा

चोखा, वासफुलवडे वधावे, तेनो मंत्र–ॐ रोहिणीपतये चन्द्राय ॐ ह्रीँ ह्राँ द्रीँ चन्द्राय नमः स्वाहा। एकली सुखडवडे आळेख करवो.

पछी "ॐ नमश्चन्द्राय सवाहनाय सपरिकराय सायुधाय अमुकगृहे वृद्धस्नात्रमहोत्सवे आगच्छ आगच्छ स्वाहा" ॥ आ मंत्र भणी आह्वान मुद्राए आह्वान करे.

पछी ए ज मंत्र बोली छेडे "अत्र तिष्ठ तिष्ठ स्वाहा"। एम कही स्थापनीय मुद्राए स्थापन करे.

पछी त्रीजीवार ए ज मंत्र बोली छेडे "पूजाबलिं गृहाण गृहाण स्वाहा" ॥ एम कही अंजलिमुद्राए निमंत्रण करे.

ए ज मंत्रथी अष्ट प्रकारी पूजा करवी–

१ चन्दनं समर्पयामि स्वाहा। बरासयुक्त सुखड. २ पुष्पं समर्पयामि स्वाहा। श्वेतपुष्प.
३ वस्त्रं समर्पयामि स्वाहा। श्वेत कपडुं. ४ फलं समर्पयामि स्वाहा। शेरडी.
५ धूपमाघ्रापयामि स्वाहा। धूप. ६ दीपं दर्शयामि स्वाहा। दीप.
७ नैवेद्यं समर्पयामि स्वाहा। ममरानो लाडु अथवा घेंसीदळ.
८ अक्षतं ताम्बूलं द्रव्यं सर्वोपचारान् समर्पयामि स्वाहा। पान, उज्ज्वळ चोखा, सोपारी, पैसो.

धोळा स्फटिकनी नोकारवाळी एक "ॐ रोहिणीपतये चन्द्राय ॐ ह्रीँ ह्रौँ द्रीँ चन्द्राय नमः स्वाहा" ए मंत्रे गणीए. पछी ए ज मंत्र वडे फूल, वासचोखा अने पाणी पसलीमां राखी त्रणवार अर्घ्य देवो. पछी बे हाथ जोडी प्रार्थना करवीः—
चन्द्रप्रभजिनेन्द्रस्य, नाम्ना तारागणाधिप। प्रसन्नो भव शान्तिं च, रक्षां कुरु जयश्रियम् ॥१॥

। इति चन्द्रपूजा २ ।

## ३ अथ भौम पूजा

चोखा, वासफूल वडे वधावे तेनो मंत्र—
ॐ नमो भूमिपुत्राय भूभृकुटिलनेत्राय वक्रवदनाय द्रः सः मंगलाय स्वाहा।
रक्तांजलि अथवा केशरवडे भौममंडळ तथा मंत्र आळेखवो. पछी आह्वान मुद्राए आह्वान करे, तेनो मंत्रः-
ॐनमो भौमाय सवाहनाय सपरिकराय सायुधाय अमुकगृहे बृहत्स्नात्रमहोत्सवे आगच्छ आगच्छ स्वाहा।
पछी ए ज मंत्र बोली स्थापनीय मुद्रावडे स्थापना करे. छेवटे अत्र तिष्ठ तिष्ठ स्वाहा। एम बोले.
पछी अंजलिमुद्रा वडे निमंत्रण करे. मंत्रने छेडे पूजाबलिं गृहाण गृहाण स्वाहा। एम बोले.

ए ज मंत्रथी अष्टप्रकारी पूजा करवी.

१ चन्दनं समर्पयामि स्वाहा। एकलुं केशर. २ पुष्पं समर्पयामि स्वाहा। जासुदनुं पुष्प.

३ वस्त्रं समर्पयापि स्वाहा । रातुं कपडुं. ४ फलं समर्पयामि स्वाहा । राती सोपारी.
५ धूपमाघ्रापयामि स्वाहा । धूप. ६ दीपं दर्शयामि स्वाहा । दीप.
७ नैवेद्यं समर्पयामि स्वाहा । गोळधाणीनो लाडु अथवा कंसार.
८ अक्षतं ताम्बूलं द्रव्यं सर्वोपचारान् समर्पयामि स्वाहा । पान, राता चोखा, राती सोपारी तथा पैसो.

पछी राता परवाळानी एक नवकारवाळी नीचेना मंत्रे गणीए:—

ॐ नमो भूमिपुत्राय भूभृकुटिलनेत्राय वक्रवदनाय द्रः सः मंगलाय स्वाहा ।

पछी फूल, वासचोखा पाणी पसलीमां लइ ए ज मंत्रे त्रणवार अर्घ्य देवां. पछी बे हाथ जोडी प्रार्थना करवी:—

सर्वदा वासुपूज्यस्य, नाम्ना शान्तिं जयश्रियम् । रक्षां कुरु धरासूनो, अशुभोऽपि शुभो भव ॥१॥

। इति भौमपूजा ३ ।

## ४ अथ बुध पूजा

प्रथम चोखा वासफूल वडे वधावे, तेनो मंत्रः—

ॐ नमो बुधाय श्राँ श्रीँ श्रः द्रः स्वाहा । पछी सुखड केसर कस्तुरी वडे बुधमंडळ तथा मंत्र आळेखवो. पछी आह्वान मुद्राए आह्वान करे, तेनो मंत्रः–

ॐ नमो बुधाय सवाहनाय सपरिकराय सायुधाय अमुकगृहे गृहस्नात्रमहोत्सवे आगच्छ आगच्छ स्वाहा।
पछी ए ज मंत्र बोली स्थापनीय मुद्राथडे स्थापना करे, छेवटे अत्र तिष्ठ तिष्ठ स्वाहा। एम बोले.
पछी ए ज मंत्र बोली अंजलि मुद्रावडे निमंत्रण करे. छेवटे पूजार्बलिं गृहाण गृहाण स्वाहा। एम बोले.

ए ज मंत्रथी अष्टप्रकारी पूजा करवी—

१ चन्दनं समर्पयामि स्वाहा। वासचूर्ण. २ पुष्पं समर्पयामि स्वाहा। चंपकनुं पुष्प अथवा मरवो.
३ वस्त्रं समर्पयामि स्वाहा। नील वर्णनुं कपडुं.(लीली छींट) ४ फलं समर्पयामि स्वाहा। नारंगी अथवा सीताफळ.
५ धूपमाघ्रापयामि स्वाहा। धूप. ६ दीपं दर्शयामि स्वाहा। दीप.
७ नैवेद्यं समर्पयामि स्वाहा। मगनी दाळनो लाडु अथवा मगदळनो लाडु.
८ अक्षतं ताम्बूलं द्रव्यं सर्वोपचारान् समर्पयामि स्वाहा। पान, चोखा, सोपारी, पैसो.

पछी केरवानी (नीलमणिनी) एक नवकारवाली नीचेना मंत्रे गणवीः—
ॐ नमो बुधाय श्राँ श्रीँ श्रः द्रः स्वाहा। पछी फूल, वासचोखा अने पाणी पसलीमां लइ उपरना मंत्रे त्रणवार अर्घ्य देवो. पछी बे हाथ जोडी प्रार्थना करवी—

विमलानन्तधर्माराः, शान्तिः कुन्थुर्नमिस्तथा। महावीरश्च तन्नाम्ना, शुभो भव सदा बुध ॥१॥

। इति बुधपूजा ४।

## ५ अथ गुरु पूजा

प्रथम चोखा, वासफूलवडे वधावे, तेनो मंत्रः—

ॐ ग्राँ ग्रीँ ग्रूँ बृहस्पतये सुरपूज्याय नमः स्वाहा । पछी गोरुचंदन वडे गुरुमंडळ तथा मंत्र आळेखवो. पछी आह्वान मुद्राए आह्वान करे तेनो मंत्रः—

ॐ नमो बृहस्पतये सवाहनाय सपरिकराय सायुधाय अमुकगृहे बृद्धस्नात्रमहोत्सवे आगच्छ आगच्छ स्वाहा ।

पछी ए ज मंत्र बोली स्थापनीय मुद्रावडे स्थापना करे, छेवटे अत्र तिष्ठ तिष्ठ स्वाहा । एम बोले.

पछी ए ज मंत्र बोली अंजलि मुद्रावडे निमंत्रण करे. छेवटे पूजावलिं गृहाण गृहाण स्वाहा । एम बोले.

ए ज मंत्रथी अष्टप्रकारी पूजा करवी—

१ चन्दनं समर्पयामि स्वाहा । वासचूर्ण. २ पुष्पं समर्पयामि स्वाहा । सेवंत्रां तथा सोवन चंवेली.

३ वस्त्रं समर्पयामि स्वाहा । पीळुं कपडुं. ४ फलं समर्पयामि स्वाहा । जंबीर.

५ धूपमाघ्रापयामि स्वाहा । धूप. ६ दीपं दर्शयामि स्वाहा । दीप.

७ नैवेद्यं समर्पयामि स्वाहा । चणानी दाळनो अथवा मोतियो लाडु.

८ अक्षतं ताम्बूलं द्रव्यं सर्वोपचारान् समर्पयामि स्वाहा । पान, चोखा, सोपारी, पैसो.

पछी गुरुर्नी अथवा केरवानी एक नोकारवाळी नीचेना मंत्रे गणवीः—

ॐ ग्रां ग्रीं ग्रूं बृहस्पतये सूरपूज्याय नमः स्वाहा ।

पछी फूल, वासचोखा अने पाणी पसलीमां लइ उपरना मंत्र वडे त्रणवार अर्घ्य देवां. पछी बे हाथ जोडी प्रार्थना करवीः

ऋषभाजितसुपार्श्वा-श्चाभिनन्दनशीतलौ । सुमतिः सम्भवः स्वामी, श्रेयांसश्च जिनोत्तमाः ॥१॥

एतत्तीर्थकृतां नाम्ना, पूजया च शुभो भव । शान्तिं तुष्टिं च पुष्टिं च, कुरु देवगणार्चित ॥२॥

। इति गुरु पूजा ५ ।

## ६ अथ शुक्र पूजा

प्रथम चोखा, वासफूलवडे वधावे, तेनो मंत्र—

ॐ यः अमृताय अमृतवर्षणाय दैत्यगुरवे नमः स्वाहा ।

पछी शुखडे भृगुमंडळ तथा मंत्र आळेखवो. पछी आह्वान मुद्राए आह्वान करे तेनो मंत्र—

ॐ नमः शुक्राय सवाहनाय सपरिकराय सायुधाय अमुकगृहे बृहद्स्नात्रमहोत्सवे आगच्छ आगच्छ स्वाहा ।

पछी ए ज मंत्र बोली स्थापनीय मुद्रावडे स्थापना करे, छेवटे अत्र तिष्ठ तिष्ठ स्वाहा । एम बोले.

१ पूज्योऽशुभः शुभो भव। पाठांतर

पछी ए ज मंत्र बोली अंजलिमुद्रावडे निमंत्रण करे, छेवटे पूजावलिं गृहाण गृहाण स्वाहा । एम बोले.

ए ज मंत्रथी अष्टप्रकारी पूजा करवी—

१ चन्दनं समर्पयामि स्वाहा । सुखड.    २ पुष्पं समर्पयामि स्वाहा । मोगरो अथवा जाइ.

३ वस्त्रं समर्पयामि स्वाहा । धोळुं कपडुं.    ४ फलं समर्पयामि स्वाहा । बीजोरुं.

५ धूपमाघ्रापयामि स्वाहा । धूप.    ६ दीपं दर्शयामि स्वाहा । दीप.

७ नैवेद्यं समर्पयामि स्वाहा । घेसींदळ अथवा ममरानो लाडु.

८ अक्षतं ताम्बूलं द्रव्यं सर्वोपचारान् समर्पयामि स्वाहा । पान, चोखा, सोपारी, पैसो.

पछी स्फटिकनी अथवा रूपानी नोकारवाळी एक नीचेना मंत्रे गणवी:—

ॐ यः अमृताय अमृतवर्षणाय दैत्यगुरवे नमः स्वाहा ।

पछी फूल, वासचोखा अने पाणी पसलीमां लइ उपरना मंत्र वडे त्रणवार अर्घ्य देवां. पछी बे हाथ जोडी पार्थना करवी:—

ॐ पुष्पदन्तजिनेन्द्रस्य, नाम्ना दैत्यगणार्चित । प्रसन्नो भव शान्तिं च, रक्षां कुरु जयश्रियम् ॥१॥

। इति शुक्रपूजा ६ ।

# ७ अथ शनि पूजा



प्रथम चोखा, धागफूलवडे वधावे, तेनो मंत्र—

ॐ शनैश्चराय आँ क्रोँ ह्रीँ क्रौंडाय नमः स्वाहा ।

पछी चुवो कस्तुरी मिश्र करी शनिमंडळ तथा मंत्र आळेखे. पछी आह्वान मुद्राए आह्वान करे, तेनो मंत्रः–

ॐ नमः शनैश्चराय सवाहनाय सपरिकराय सायुधाय अमुकगृहे छद्दस्नात्रमहोत्सवे आगच्छ आगच्छ स्वाहा ।

पछी ए ज मंत्र बोली स्थापनीय मुद्रावडे स्थापना करे. छेवटे अत्र तिष्ठ तिष्ठ स्वाहा । एम बोले

पछी ए ज मंत्र बोली अंजलि मुद्रावडे निमंत्रण करे. छेवटे पूजावलिं गृहाण गृहाण स्वाहा । एम बोले.

ए ज मंत्रथी अष्टप्रकारी पूजा करवी—

१ चन्दनं समर्पयामि स्वाहा । कंकु.

२ पुष्पं समर्पयामि स्वाहा । बोलसरी अथवा दमणो.

३ वस्त्रं समर्पयामि स्वाहा । आस्मानी उदा रंगनुं कपडुं.

४ फलं समर्पयामि स्वाहा । खारेक.

५ धूपमाघ्रापयामि स्वाहा । धूप.

६ दीपं दर्शयामि स्वाहा । दीप.

७ नैवेद्यं समर्पयामि स्वाहा । अडदनी दाळनो लाडवो तथा तलनो लाडवो.

८ अक्षतं ताम्बूलं द्रव्यं सर्वोपचारान् समर्पयामि स्वाहा । पान, चोखा, सोपारी, पैसो.

पछी अकलबेरनी एक नवकारवाळी नीचेना मंत्रे गणवीः—
ॐ शनैश्चराय आँ क्रौं ह्रीँ क्रौंडाय नमः स्वाहा।
पछी फुल, वासचोखा अने पाणी पसलीमां लइ उपरना मंत्र वडे त्रणवार अर्घ्य देवां. पछी बे हाथ जोडी प्रार्थना करवीः-
श्रीसुव्रतजिनेन्द्रस्य, नाम्ना सूर्यांगसंभव। प्रसन्नो भव शान्तिं च, रक्षां कुरु जयश्रियम् ॥१॥

। इति शनिपूजा ७।

## ८ अथ राहु पूजा

प्रथम चोखा, वासपुष्प वडे राहुमंडळ वधावे, तेनो मंत्र—
ॐ ह्रीँ ठाँ श्रीँ व्रः व्रः व्रः पिंगलनेत्राय कृष्णरूपाय राहवे नमः स्वाहा।
पछी चुवो कस्तुरी मिश्र करी राहुमंडळ तथा मंत्र आळेखवो. पछी आह्वान मुद्रावडे आह्वान करे, तेनो मंत्रः-
ॐ नमो राहवे सवाहनाय सपरिकराय सायुधाय अमुकगृहे बृहत्स्नात्रमहोत्सवे आगच्छ आगच्छ स्वाहा।
पछी ए ज मंत्र बोली स्थापनीय मुद्रा वडे स्थापना करे. छेवटे अत्र तिष्ठ तिष्ठ स्वाहा। एम बोले.
पछी ए ज मंत्र बोली अंजलिमुद्रावडे निमंत्रण करे. छेवटे पूजांबलिं गृहाण गृहाण स्वाहा। एम बोले

ए ज मंत्रथी अष्टप्रकारी पूजा करवी–

१ गन्धनं समर्पयामि स्वाहा । कंकु.     २ पुष्पं समर्पयामि स्वाहा । मचकुंदनां पुष्प.
३ वस्त्रं समर्पयामि स्वाहा । काळुं कपडुं. ४ फलं समर्पयामि स्वाहा । श्रीफळ.
५ धूपमाघ्रापयामि स्वाहा । धूप.     ६ दीपं दर्शयामि स्वाहा । दीप.
७ नैवेद्यं समर्पयामि स्वाहा । अडदनी दाळनो अथवा तलवटनो लाडु.
८ अक्षतं ताम्बूलं द्रव्यं सर्वोपचारान् समर्पयामि स्वाहा । पान, चोखा, सोपारी, पैसो.

पछी अकलबेरनी नोकारवाळी एक नीचेना मंत्रे गणवीः–

*ॐ ह्रीं क्रौं श्रीं रः रः रः* पिंगलनेत्राय कृष्णरूपाय राहवे नमः स्वाहा ।

पछी फूल, वासचोखा अने पाणी पसलीमां लइ उपरना मंत्र वडे त्रणवार अर्घ्य देवां. पछी बे हाथ जोडी प्रार्थना करवीः–

श्रीनेमिनाथतीर्थेश–नाम्ना त्वं सिंहिकासुत । प्रसन्नो भव शान्तिं च, रक्षां कुरु जयश्रियम् ॥

। इति राहुपूजा ८ ।

## ९ अथ केतु पूजा ।

प्रथम चोखा, वासपुष्प पसलीमां लई केतु मंडळ वधावे, तेनो मंत्रः–

ॐ कौं क्रीं कैं टः टः टः छत्ररूपाय राहुतनवे केतवे नमः स्वाहा ।

पछी यक्षकर्दम वडे केतुमंडळ तथा मंत्रने आळेखे. पछी आह्वान मुद्राए आह्वान करे तेनो मंत्रः–

ॐ नमः केतवे सवाहनाय सपरिकराय सायुधाय अमुकगृहे बृहद्स्नात्रमहोत्सवे आगच्छ आगच्छ स्वाहा।

पछी ए ज मंत्र बोली स्थापनीय मुद्रावडे स्थापना करे, छेवटे अत्र तिष्ठ तिष्ठ स्वाहा। एम बोले.

पछी ए ज मंत्र बोली अंजलि मुद्रावडे निमंत्रण करे, छेवटे पूजाबलिं गृहाण गृहाण स्वाहा। एम बोले.

ए ज मंत्रथी अष्टप्रकारी पूजा करवी—

१ चन्दनं समर्पयामि स्वाहा। कंकु. २ पुष्पं समर्पयामि स्वाहा। पंचवर्णी पुष्प.

३ वस्त्रं समर्पयामि स्वाहा। श्याम सोसनी रंगनुं कपडुं. ४ फलं समर्पयामि स्वाहा। दाडम.

५ धूपमाघ्रापयामि स्वाहा। धूप. ६ दीपं दर्शयामि स्वाहा। दीप.

७ नैवेद्यं समर्पयामि स्वाहा। अडदनी दाळनो लाडु.

८ अक्षतं ताम्बूलं द्रव्यं सर्वोपचारान् समर्पयामि स्वाहा। पान, चोखा, सोपारी, पैसो.

पछी गोमेदकनी अथवा अकलबेरनी एक नवकारवाळी नीचेना मंत्रे गणवीः–

ॐ काँ कीँ कैँ टः टः टः छत्ररूपाय राहुतनवे केतवे नमः स्वाहा।

पछी पुष्प, वासचोखा अने पाणी पसलीमां लइ उपरना मंत्रवडे त्रणवार अर्घ्य देवां. पछी बे हाथ जोडी प्रार्थना करवीः–
राहोः सप्तमराशिस्थः, कारणे दृश्यतेऽम्बरे। श्रीमल्लिपार्श्वयोर्नाम्ना, केतो शान्तिं श्रियं कुरु ॥१॥

। इति केतुपूजा ९।

पछी एक थाळमां रातुं वस्त्र, श्रीफळ १, रूपियो १, सर्व जातनां फूलो, फळो अने चोखा तथा पंचरत्ननी पोटली मींढळ नाडुं वगेरे लइ उभा थइ नीचे प्रमाणे ग्रहशांतिस्तोत्र भणवुंः—

## अथ ग्रहशान्तिस्तोत्रम्

जगद्‌गुरुं नमस्कृत्य, श्रुत्वा सद्‌गुरुभाषितम्। ग्रहशान्तिं प्रवक्ष्यामि, भव्यानां[1] सुखहेतवे ॥१॥
जिनेन्द्रैः खेचरा ज्ञेयाः, पूजनीया विधिक्रमात्। पुष्पैर्विलेपनैर्धूपै-र्नैवेद्यैस्तुष्टिहेतवे ॥२॥
पद्मप्रभस्य मार्त्तण्ड-श्चन्द्रश्चन्द्रप्रभस्य च। वासुपूज्यस्य भूपुत्रो, बुधस्याष्टौ जिनेश्वराः ॥३॥
विमलानन्तधर्माराः, शान्तिः कुन्थुर्नमिस्तथा। वर्धमानो जिनेन्द्राणां, पादपद्मे बुधं न्यसेत् ॥४॥
ऋषभाजितसुपार्श्वा-श्चाभिनन्दनशीतलौ। सुमतिः संभवस्वामी, श्रेयांसश्च बृहस्पतिः ॥५॥
सुविधेः कथितः शुक्रः, सुव्रतस्य शनैश्चरः। नेमिनाथो भवेद्राहोः, केतुः श्रीमल्लिपार्श्वयोः ॥६॥

१ लोकानां। पाठान्तर

जन्मलग्ने च राशौ च, यदा पीडन्ति खेचराः। तदा संपूजयेद् धीमान्, खेचरैः सहितान् जिनान् ॥७॥
पुष्पगन्धादिभिर्धूपैः, फलनैवेद्यसंयुतैः। वर्णसदृशदानैश्च, वस्त्रैश्च दक्षिणान्वितैः ॥८॥
ॐ आदित्यसोममङ्गल-बुधगुरुशुक्राः शनैश्चरो राहुः। केतुसहिताः खेटा जिनपतिपुरतोऽवतिष्ठंतु ॥९॥

आ प्रमाणे कहीने पंचवर्ण कुसुमांजलि उछाळवी.

जिनानामग्रतः स्थित्वा, ग्रहाणां तुष्टिहेतवे। नमस्कारस्तवं भक्त्या, जपेदष्टोत्तरं शतम् ॥१०॥
भद्रबाहुरुवाचैवं, पञ्चमः श्रुतकेवली। विद्याप्रवादतः पूर्वाद्, ग्रहशान्तिविधिस्तवंम् ॥११॥

। इति ग्रहशान्तिस्तोत्रम्।

पछी नीचेनो श्लोक बोलवोः—

जिनेन्द्रभक्त्या जिनभक्तिभाजां, येषां च पूजावलिपुष्पधूपान्।
ग्रहा गता ये प्रतिकूलतां च, ते सानुकूला वरदा भवन्तु ॥१॥

आ प्रमाणे भणी श्रीफळ वगेरे पाटलापर मूकवुं. ते पाटला उपर पांच पटानुं रेशमी वस्त्र तथा सुतराउ वस्त्र पाथरी तेने मींढोळ सहित नाडुं वींटी केशर छांटी सोना रूपाना वरग छापी प्रभुनी आगळ अथवा दक्षिण बाजु स्थापवो.

॥ इति नवग्रहपूजन विधि॥

१ विधि शुभं। पाठांतर

## नवग्रह-पूजन उपकरण यंत्र

| ग्रह नाम | आलेप | पूजन | फूल | वस्त्र | फल | नैवेद्य | द्रव्यादि | माला | मुख | मंडलाकृति | मंडलदिक् |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| रवि | रक्त चंदन | केसर | कणेर | रातुं वस्त्र | द्राक्षा | चूरमानो लाडु वा गोलधाणीनो लाडु | अक्षत, पान, सोपारी त्रांबानाणुं | परवाळा | पूर्व सन्मुख | वृत्ताकार | पटमध्य |
| चंद्र | सुगड | सुगड युक्त बरास | कुमुद | श्वेत वस्त्र | सेलडी | ममरानो लाडु घेंसीदल | ,, | स्फटिक | पश्चिम | चतुरस्त्रा-कार | अग्नि |
| मंगल | रक्त चंदन वा केसर | केसर | जासुद | रातुं वस्त्र | राती सोपारी | गोलधाणीनो लाडु वा कंसार | ,, | परवाळा | पूर्व | त्रिकोणा-कृति | दक्षिण |
| बुध | सुगड केसर कस्तुरी | वास-चूर्ण | चंपक वा मरवो | नीलुं वस्त्र (नीली छींट) | नारंगी वा सी-ताफल | मगनी दाळनो वा मगदळीयो लाडु | ,, | केरवो वा नीलमणि | उत्तर | वाणसद्द-शाकृति | ईशान |

| | | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| गुरु | गोरोचंदन | वास चूर्ण | सेवंत्रा तथा सोवन चंबेली | पीलुं वस्त्र | जंबीर | चणानी दालनो वा मोतीयोलाडु | अक्षत, पान, सोपारी नांवानाणुं | सुवर्ण वा केरवो | उत्तर | पट्टिकाकार | उत्तर |
| शुक्र | सुखड | सुखड | जाई वा मोगरो | श्वेत वस्त्र | बीजोरु | घेंसीदल वा ममरानो लाडु | ,, | स्फटिक वा रूपुं | दक्षिण | पंचकोणाकार | पूर्व |
| शनि | चुओ कस्तुरी मिश्र | कंकु | बोरसली वा दमणो | आस्मानी उंडुं वस्त्र | खारेक | अडदनी दालनो तथा तलवटनो लाडु | ,, | अकलबेर | पश्चिम | चतुराकार | पश्चिम |
| राहु | ,, | ,, | मचकुंद | कालुं वस्त्र | श्रीफल | अडदनी दालनो वा तलवटनो लाडु | ,, | ,, | दक्षिण | शूर्पाकार | नैर्ऋत्य |
| केतु | यक्षकर्दम | ,, | पंचवर्णी पुष्प | श्याम सोसनी रंगनुं वस्त्र | दाडम | अडदनी दालनो लाडु | ,, | अकलबेर वा गोमेदक | ,, | ध्वजाकार | वायव्य |

## ७ अथ दशदिक्पालाह्वान विधि

महाव दानना देनारा होवाथी दश दिक्पालनी पूजा पण पोत पोताना वर्णानुसारे विस्तारथी करवी. तेमां पहेले दिवसे पूर्वोक्त विधि मेरनने पाटले दिक्पालनो आलेख प्रतिष्ठा करावी बीजे दिवसे प्रभुनी डाबी बाजु आडणी अथवा बाजोठी उपर स्थापी पछी ए लघु श्रावक १ पाणी, २ चंदन, ३ धूप, ४ दीप, ५ पुष्प अने ६ घंट लइ चोक मध्ये आवी प्रथम जळ आभूषो दइने चंदनना छांटा नांखे, पछी पुष्पं वधावे, धूप सन्मुख राखे, दीप देखाडे, घंट वगाडे, ए रीते दश दिक्पाळनी पूजा करे.

पछी बे वृद्ध श्रावक बे थाळमां कोरा बलि लइ ॐ ह्रीं क्ष्वीं सर्वोपद्रवाद् बलिं रक्ष रक्ष स्वाहा। ए मंत्रे २१ वार मंत्री नीचेना मंत्रोवडे संक्षेपथी दशे दिक्पालने वधावे:—

पूर्व दिशामां– ॐ नम इन्द्राय स्वाहा। अग्नि खुणामां–ॐ नमोऽग्नये स्वाहा।

दक्षिण दिशामां–ॐ नमो यमाय स्वाहा। नैर्ऋत्य खुणामां–ॐ नमो नैर्ऋताय[1] स्वाहा।

पश्चिम दिशामां–ॐ नमो वरुणाय स्वाहा। वायव्य खुणामां–ॐ नमो वायवे स्वाहा।

उत्तर दिशामां–ॐ नमो धनदाय स्वाहा। ईशान खुणामां–ॐ नम ईशानाय स्वाहा।

ऊर्ध्व दिशामां–ॐ नमो ब्रह्मणे स्वाहा। अधो दिशामां–ॐ नमो नागाय स्वाहा।

। इति दशदिक्पालाह्वान विधि।

---

१ नैर्ऋतये। पाठांतर

## ८ अथ दशदिक्पाल पूजनविधि

### १ अथ इन्द्र पूजा

एक दक्ष श्रावक सर्व पूजोपकरण पासे राखी ज्यां दिक्पालनो पट्टक स्थाप्यो छे त्यां पवित्र पाटला उपर स्थिर आसन करी पूजा प्रारंभेः—

प्रथम ग्रहपूजननी जेम चोखा, वासपुष्प पसलीमां लइ पूर्वदिगधिपति इन्द्रना मंडळने वधावे, तेनो मंत्रः—

ॐ ह्रीँ आँ हाँ हूँ ह्राँ श्रूँ हूँ क्षः वज्राधिपतये इन्द्र संवौषट् (स्वाहा)।

पछी गोरोचंदनवडे इंद्रनुं मंडळ तथा मंत्र आळेखीए. पछी आह्वान मुद्राए आह्वान करे, तेनो मंत्रः—

ॐ नम इन्द्राय पूर्वदिगधिष्ठायकाय ऐरावणवाहनाय सहस्रनेत्राय वज्रायुधाय सपरिजनाय अमुकगृहे[1] [अस्मिन् जंबूद्वीपे दक्षिणार्धभरते मध्यखण्डे अमुकदेशे अमुकनगरे अमुकप्रासादे] वृद्धस्नात्रमहोत्सवे[2] आगच्छ आगच्छ स्वाहा।

---

१ आ पूजनमां तथा आगळ उपर आवतां दरेक पूजन वखते आ 'अमुकगृहे' शब्दने ठेकाणे उपर कौंसमां आपेल [अस्मिन् जंबूद्वीपे वगेरे] आखो पाठ बोलवो अने एमां ज्यां ज्यां 'अमुक' शब्द मूकेल छे त्यां त्यां ते ते देश, नगर अने स्थळनु नाम बोलवुं.

२ आ ठेकाणे जुदा जुदा महोत्सवना प्रसंगे ते ते प्रसंगने अनुलक्षीने जुदां जुदां नामो बोलवां, जेमके-'बिंबप्रवेशमहोत्सवे,' अथवा 'शांतिस्नात्रमहोत्सवे' इत्यादि. जो बे त्रण महोत्सवो एकी साथे करवाना होय तो ते दरेकनां नामो बोलवां, जेमके-'बिंबप्रवेशमहोत्सवे शांतिस्नात्रमहोत्सवे कलशप्रतिष्ठाविधिमहोत्सवे.' इत्यादि.

पछी ए ज मंत्र बोली स्थापन मुद्रावडे छेवटे अत्र तिष्ठ तिष्ठ स्वाहा। एम बोली स्थापना करे.
पछी ए ज मंत्र बोली अंजलि मुद्राए छेवटे पूजावलिं गृहाण गृहाण स्वाहा। एम बोली निमंत्रण करे.

पछी ते ज मंत्र सपरिजनाय सुधी बोली अष्टप्रकारी पूजा करवीः—

१ चन्दनं समर्पयामि स्वाहा। केसर अथवा वासचूर्ण. २ पुष्पं समर्पयामि स्वाहा। चंपानां पुष्प.
३ वस्त्रं समर्पयामि स्वाहा। पीळुं कपडुं. ४ फलं समर्पयामि स्वाहा। जंबीर.
५ धूपमाघ्रापयामि स्वाहा। धूप. ६ दीपं दर्शयामि स्वाहा। दीप.
७ नैवेद्यं समर्पयामि स्वाहा। मोतैयो लाडु.
८ अक्षतं ताम्बूलं द्रव्यं सर्वोपचारान् समर्पयामि स्वाहा। पान, चोखा, सोपारी, पैसो.

पछी नीचेना मंत्रे केरवानी नवकारवाळी एक गणवीः—[1]
ॐ ह्रीँ आँ हाँ हूँ ह्राँ श्रूँ हूँ क्षः वज्राधिपतये इन्द्र संवौषट् (स्वाहा)।
पछी फूल, वासचोखा, पाणी पसलीमां लइ उपरना मंत्रे त्रणवार अर्घ्य देवां. पछी बे हाथ जोडी नीचे प्रमाणे प्रार्थना करवीः—
ऐरावतसमारूढः, शक्रः पूर्वदिशि स्थितः। संघस्य शान्तये सोऽस्तु, बलिपूजां प्रतीच्छतु ॥१॥

। इति इन्द्रपूजा १ ।

१ दिक्पाल पूजनमां नवकारवाळी गणवानी पद्धति वर्तमानमां प्रचलित नथी.

## २ अथ अग्नि पूजा

प्रथम चोखा, वासपुष्प पसलीमां लइ आग्नेयाधिपना मंडळने वधावे, तेनो मंत्रः–

ॐ ह्रीँ रेँ रोँ रुँ रैँ रौँ रः अग्नि संवौपट् (स्वाहा)।

पछी रक्त चंदनवडे अग्निमूर्ति तथा मंत्र आळेखवो. पछी आह्वान मुद्राए आह्वान करे, तेनो मंत्रः–

ॐ नमोऽग्निमूर्त्तये शक्तिहस्ताय मेपवाहनाय सपरिजनाय अमुकगृहे वृद्धस्नात्रमहोत्सवे आगच्छ आगच्छ स्वाहा।

पछी स्थापन मुद्रावडे, ते ज मंत्र बोली छेवटे अत्र तिष्ठ तिष्ठ स्वाहा। एम कही स्थापना करे.

पछी अंजलि मुद्रावडे, ते ज मंत्र बोली छेवटे पूजाबलिं गृहाण गृहाण स्वाहा। एम कही निमंत्रण करे.

पछी ते ज मंत्र सपरिजनाय सुधी बोली अष्टप्रकारी पूजा करवीः—

१ चन्दनं समर्पयामि स्वाहा। एकलुं केसर.
२ पुष्पं समर्पयामि स्वाहा। जासुद.
३ वस्त्रं समर्पयामि स्वाहा। रातुं कपडुं.
४ फलं समर्पयामि स्वाहा। राती सोपारी.
५ धूपमाघ्रापयामि स्वाहा। धूप.
६ दीपं दर्शयामि स्वाहा। दीप.

७ नैवेद्यं समर्पयामि स्वाहा। चुरमानो लाडु.

८ अक्षतं ताम्बूलं द्रव्यं सर्वोपचारान् समर्पयामि स्वाहा। पान, चोखा, सोपारी, पैसो.

पछी नीचेना मंत्रे परवाळानी नवकारवाळी एक गणेः-ॐ ह्रीँ रें रों रूँ रैं रौं रः अग्नि संवौषट् (स्वाहा)।

पछी फूल, वासचोखा, पाणी पसलीमां लइ उपरना मंत्रवडे त्रणवार अर्घ्य देवां. पछी बे हाथ जोडी नीचे प्रमाणे प्रार्थना करवीः-

सदा वह्निदिशो नेता, पावको मेषवाहनः। संघस्य शान्तये सोऽस्तु, बलिपूजां प्रतीच्छतु ॥१॥

।इति अग्निपूजा २।

## ३ अथ दक्षिणाधिप यम पूजा

प्रथम पुष्प, वासचोखा पसलीमां लइ यममंडळने वधावे, तेनो मंत्र—ॐ क्ष्रूँ हूँ ह्राँ क्षः यम संवौषट् (स्वाहा)।

पछी कस्तुरी मिश्रित चूआवडे यममंडळ तथा मंत्रने आळेखे. पछी आह्वान मुद्रावडे आह्वान करे, तेनो मंत्रः—

ॐ नमो यमाय दक्षिणदिगधिष्ठायकाय महिषवाहनाय दंडायुधाय कृष्णमूर्त्तये सपरिजनाय अमुकगृहे बृहद्स्नात्रमहोत्सवे आगच्छ आगच्छ स्वाहा।

पछी स्थापन मुद्रावडे, ते ज मंत्र बोली छेवटे अत्र तिष्ठ तिष्ठ स्वाहा । एम कही स्थापना करे.
पछी अंजलि मुद्रावडे, ते ज मंत्र बोली छेवटे पूजावलिं गृहाण गृहाण स्वाहा । एम कही निमंत्रण करे.

पछी ते ज मंत्र सपरिजनाय सुधी बोली अष्टप्रकारी पूजा करवीः—

१ चन्दनं समर्पयामि स्वाहा । कंकु
२ पुष्पं समर्पयामि स्वाहा । दमणा (डमरा)नां पुष्प.
३ वस्त्रं समर्पयामि स्वाहा। काळुं कपडुं
४ फलं समर्पयामि स्वाहा । काळी सोपारी.
५ धूपमाघ्रापयामि स्वाहा । धूप.
६ दीपं दर्शयामि स्वाहा । दीप.
७ नैवेद्यं समर्पयामि स्वाहा । अडदनो लाड
८ अक्षतं ताम्बूलं द्रव्यं सर्वोपचारान् समर्पयामि स्वाहा । पान, चोखा, सोपारी, पैसो.

पछी नीचेना मंत्रे अकलवेरनी एक नवकारवाळी गणवीः—ॐ श्रूँ हूँ हाँ क्षः यम संवौषट् (स्वाहा) ।
पछी फूल, वासचोखा, पाणी पसलीमां लइ उपरना मंत्र वडे त्रणवार अर्घ्य देवां. पछी बे हाथ जोडी नीचे प्रमाणे स्तुति करवीः
दक्षिणस्यां दिशि स्वामी, यमो महिषवाहनः । संघस्य शान्तये सोऽस्तु, बलिपूजां प्रतीच्छतु ॥१॥

। इति यमपूजा २ ।

## ४ अथ नैर्ऋताधिप पूजा

प्रथम पुष्प, वासचोखा वडे नैर्ऋतमंडलने वधावे, तेनो मंत्रः-ॐ ग्लौँ ह्रौँ नैर्ऋत[1] संवौषट् (स्वाहा)।

पछी एकली कस्तूरीवडे नैर्ऋतमूर्ति तथा मंत्र आळेखवो. पछी आह्वान मुद्राए आह्वान करवुं, तेनो मंत्रः—

ॐ नमो नैर्ऋताय खड्गहस्ताय शिववाहनाय सपरिजनाय अमुकगृहे बृहद्स्नात्रमहोत्सवे आगच्छ आगच्छ स्वाहा।

पछी स्थापन मुद्रावडे, ते ज मंत्र बोली छेवटे अत्र तिष्ठ तिष्ठ स्वाहा। एम कही स्थापना करे.

पछी अंजलि मुद्रावडे, ते ज मंत्र बोली छेवटे पूजाबलिं गृहाण गृहाण स्वाहा। एम कही निमंत्रण करे.

पछी ते ज मंत्र सपरिजनाय सुधी बोली अष्टप्रकारी पूजा करवीः—

१ चन्दनं समर्पयामि स्वाहा। चुवो सुखड मिश्र.
२ पुष्पं समर्पयामि स्वाहा। मालती, बोलसरी.
३ वस्त्रं समर्पयामि स्वाहा। उदारंगतुं कपडुं.।
४ फलं समर्पयामि स्वाहा। दाडम, सीताफळ.
५ धूपमाघ्रापयामि स्वाहा। धूप.
६ दीपं दर्शयामि स्वाहा। दीप.

१ निर्ऋते। पाठांतर।

७ नैवेद्यं समर्पयामि स्वाहा । तलवटनो लाडु.

८ अक्षतं तांबूलं द्रव्यं सर्वोपचारान् समर्पयामि स्वाहा । पान, चोखा, सोपारी, पैसो.

पछी नीचेना मंत्रे अकलबेरनी एक नवकारवाळी गणवीः—ॐ ग्लौँ ह्रौँ नैर्ऋतं संवौषट् (स्वाहा) ।

पछी फूल, वासचोखा, पाणी पसलीमां लइ उपरना मंत्र वडे त्रणवार अर्घ्य देवां पछी बे हाथ जोडी नीचे प्रमाणे प्रार्थना करवीः—

यमापरान्तरालोऽसौ, नैर्ऋतः शिववाहनः । संघस्य शान्तये सोऽस्तु, बलिपूजां प्रतीच्छतु ॥१॥

।इति नैर्ऋतपूजा ४।

## ५ अथ पश्चिमाधिप वरुण पूजा

प्रथम पुष्प, वासचोखा वडे वरुणमंडळ वधाववुं, तेनो मंत्रः—ॐ श्रीँ ह्रौँ वरुण संवौषट् (स्वाहा) ।

पछी कस्तुरी चुवो मिश्रित करी वरुण मूर्ति तथा मंत्र आळेखवो. पछी आह्वान मुद्रावडे आह्वान करवुं, तेनो मंत्रः—

ॐ नमो वरुणाय पश्चिमदिगधिष्ठायकाय मकरवाहनाय पाशहस्ताय सपरिजनाय अमुकगृहे वृद्धस्नात्रमहोत्सवे आगच्छ आगच्छ स्वाहा ।

१ नैर्ऋते । पाठांतर । २ निर्ऋतिः । पाठांतर ।

पछी स्थापनमुद्रावडे, ए ज मंत्र बोली छेवटे अत्र तिष्ठ तिष्ठ स्वाहा । एम कही स्थापना करे.

पछी अंजलि मुद्रावडे, ए ज मंत्र बोली छेवटे पूजावलिं गृहाण गृहाण स्वाहा । एम कही निमंत्रण करे.

पछी ते ज मंत्र सपरिजनाय सुधी बोली अष्टप्रकारी पूजा करवीः —

१ चन्दनं समर्पयामि स्वाहा । चुवो सुखड मिश्रित. २ पुष्पं समर्पयामि स्वाहा । दमणो बोलसिरि.

३ वस्त्रं समर्पयामि स्वाहा । आसमानी रंगनुं कपडुं. ४ फलं समर्पयामि स्वाहा । दाडम.

५ धूपमाघ्रापयामि स्वाहा । धूप. ६ दीपं दर्शयामि स्वाहा । दीप.

७ नैवेद्यं समर्पयामि स्वाहा । तलवटनो लाडु.

८ अक्षतं ताम्बूलं द्रव्यं सर्वोपचारान् समर्पयामि स्वाहा । पान, चोखा, सोपारी, पैसो.

पछी नीचेना मंत्रे केरवानी एक नवकारवाली गणवीः— ॐ श्रीँ ह्रीं वरुण संवौषट् (स्वाहा) ।

पछी पुष्प, वासचोखा, पाणी पसलीमां लइ उपरना मंत्रे त्रणवार अर्घ्य देवां. पछी बे हाथ जोडी नीचे प्रमाणे प्रार्थना करवीः—

यः प्रतीचीदिशो नाथो, वरुणो मकरस्थितः । संघस्य शान्तये सोऽस्तु, बलिपूजां प्रतीच्छतु ॥१॥

। इति वरुणपूजा ५ ।

## ६ अथ वायव्याधिप पूजा

प्रथम पुष्प, वासचोखा वडे वायुमंडळने वधाववुं, तेनो मंत्रः-ॐ क्लीँ ह्रौँ वायु संवौपट् (स्वाहा)।

पछी सुखड,केसर अने कस्तुरी मिश्रित करी वायुमूर्ति तथा मंत्र आळेखवो. पछी आह्वान मुद्रावडे आह्वान करवुं, तेनो मंत्रः-

ॐ नमो वायवे वायवीपतये ध्वजहस्ताय हरिणवाहनाय सपरिजनाय अमुकगृहे वृद्धस्नात्रमहोत्सवे आगच्छ आगच्छ स्वाहा।

पछी स्थापन मुद्रावडे, ते ज मंत्र बोली छेवटे अत्र तिष्ठ तिष्ठ स्वाहा। एम कही स्थापना करे.

पछी अंजलिमुद्रा वडे, ते ज मंत्र बोली छेवटे पूजाबलिं गृहाण गृहाण स्वाहा। एम कही निमंत्रण करे.

पछी ते ज मंत्र सपरिजनाय सुधी बोली अष्टप्रकारी पूजा करवीः-

१ चन्दनं समर्पयामि स्वाहा। वासचुवो कस्तुरी. २ पुष्पं समर्पयामि स्वाहा। चंपक, मरवो.
३ वस्त्रं समर्पयापि स्वाहा। नीलो तास्तो. ४ फलं समर्पयामि स्वाहा। नारंगी, केळां.
५ धूपमाघ्रापयामि स्वाहा। धूप. ६ दीपं दर्शयामि स्वाहा। दीप.
७ नैवेद्यं समर्पयामि स्वाहा। मगदळनो लाडु
८ अक्षतं ताम्बूलं द्रव्यं सर्वोपचारान् समर्पयामि स्वाहा। पान, चोखा, सोपारी, पैसो.

पछी नीचेना मंत्रे केरवानी एक नवकारवाळी गणवीः—ॐ क्लीँ ह्रौँ वायु संवौषट् (स्वाहा)।
पछी पुष्प, वासचोखा, पाणी पसलीमां लइ उपरना मंत्र वडे त्रणवार अर्घ्य देवां. पछी बे हाथ जोडी प्रार्थना करवीः
हरिणो वाहनं यस्य, वायव्याधिपतिर्मरुत। संघस्य शान्तये सोऽस्तु, बलिपूजां प्रतीच्छतु ॥१॥

। इति वायव्याधिपपूजा ६ ।

## ७ अथ उत्तरदिगधिपति पूजा

ॐ क्लीँ ह्रौँ कुबेर संवौषट् (स्वाहा)।

प्रथम पुष्प, वासचोखा पसलीमां लइ कुबेरमंडळ वधावे, तेनो मंत्रः—
पछी सुखड बरास मिश्र करी कुबेरमूर्ति तथा मंत्र आळेखे. पछी आह्वान मुद्राए आह्वान करे, तेनो मंत्रः—
ॐ नमो धनदाय उत्तरदिगधिष्ठायकाय गदाहस्ताय नरवाहनाय सपरिजनाय अमुकगृहे बृहद्स्नात्रमहोत्सवे आगच्छ आगच्छ स्वाहा।

पछी स्थापन मुद्रावडे, ते ज मंत्र बोली छेवटे अत्र तिष्ठ तिष्ठ स्वाहा। एम कही स्थापना करे.
पछी अंजलि मुद्रावडे, ते ज मंत्र बोली छेवटे पूजाबलिं गृहाण गृहाण स्वाहा। एम कही निमंत्रण करे.

पछी ते ज मंत्र सपरिजनाय सुधी बोली अष्टप्रकारी पूजा करवीः—

१ चन्दनं समर्पयामि स्वाहा। सुखड बरास मिश्रित. २ पुष्पं समर्पयामि स्वाहा। जाइ अथवा सेवंत्रां.

३ वस्त्रं समर्पयामि स्वाहा । श्वेत कपडुं.     ४ फलं समर्पयामि स्वाहा । बीजोरुं.

५ धूपमाघ्रापयामि स्वाहा । धूप.     ६ दीपं दर्शयामि स्वाहा । दीप.

७ नैवेद्यं समर्पयामि स्वाहा । पेंडा अथवा घेंशीदळ.

८ अक्षतं ताम्बूलं द्रव्यं सर्वोपचारान् समर्पयामि स्वाहा । पान, चोखा, सोपारी, पसो.

पछी नीचेना मंत्रे स्फटिकनी एक नवकारवाळी गणवीः–ॐ क्लौँ ह्रीँ कुवेर संवौषट् (स्वाहा) ।

पछी पुष्प, वासचोखा, पाणी पसलीमां लइ उपरना मंत्र वडे त्रणवार अर्घ्य देवां. पछी बे हाथ जोडी पार्थना करवीः–

निधाननवकारूढ उत्तरस्यां दिशि प्रभुः । संघस्य शान्तये सोऽस्तु, बलिपूजां प्रतीच्छतु ॥१॥

। इति उत्तरदिगधिपति पूजा ७ ।

## ८ अथ ईशानाधिप पूजा

प्रथम पुष्प, वासचोखा पसलीमां लइ ईशानमंडळने वधावे, तेनो मंत्रः–ॐ ह्राँ ह्रूँ ह्रौं ह्रः ईशान संवौषट् (स्वाहा) ।
पछी एकला चंदनवडे ईशानमूर्ति तथा मंत्र आळेखे. पछी आह्वान मुद्राए आह्वान करे, तेनो मंत्रः—

ॐ नम ईशानाय ऐशानीपतये त्रिशूलहस्ताय वृषभवाहनाय सपरिजनाय अमुकगृहे बृद्रस्नात्रमहोत्सवे आगच्छ आगच्छ स्वाहा ।

पछी स्थापन मुद्रावडे, ते ज मंत्र बोली छेवटे अत्र तिष्ठ तिष्ठ स्वाहा । एम कही स्थापना करे.
पछी अंजलि मुद्रावडे, ते ज मंत्र बोली छेवटे पूजाबलिं गृहाण गृहाण स्वाहा । एम कही निमंत्रण करे.

पछी ते ज मंत्र सपरिजनाय सुधी बोली अष्टप्रकारी पूजा करवीः—

| | |
|---|---|
| १ चन्दनं समर्पयामि स्वाहा । सुखड. | २ पुष्पं समर्पयामि स्वाहा । कुमुद. |
| ३ वस्त्रं समर्पयामि स्वाहा । श्वेत वस्त्र. | ४ फलं समर्पयामि स्वाहा । शेलडी. |
| ५ धूपमाघ्रापयामि स्वाहा । धूप. | ६ दीपं दर्शयामि स्वाहा । दीप. |

७ नैवेद्यं समर्पयामि स्वाहा । घेंशीदळ.

८ अक्षतं ताम्बूलं द्रव्यं सर्वोपचारान् समर्पयामि स्वाहा । पान, चोखा, सोपारी, पैसो.

पछी नीचेना मंत्रे स्फटिकनी एक नवकारवाळी गणवीः—ॐ ह्राँ ह्रूँ ह्रौं ह्रः ईशान संवौषट् (स्वाहा) ।
पछी पुष्प, वासचोखा, पाणी पसलीमां लइ उपरना मंत्र वडे त्रणवार अर्घ्य देवां. पछी बे हाथ जोडी नीचे प्रमाणे प्रार्थना करेः
सिते वृषेऽधिरूढश्च, ऐशान्याश्च दिशो विभुः । संघस्य शान्तये सोऽस्तु, बलिपूजां प्रतीच्छतु ॥१॥

। इति ईशानाधिप पूजा ८ ।

## ९ अथ ऊर्ध्वलोकाधिप पूजा

प्रथम पुष्प, वासचोखा पसलीमां लई ब्रह्ममंडळ वधावे, तेनो मंत्रः—ॐ ह्रीँ श्रूँ ग्लूँ चँ द्रः ब्रह्मन् संवौषट् (स्वाहा)।

पछी सुखड कर्पूर मिश्रित करी ब्रह्ममूर्ति तथा मंत्र आळेखे. पछी आह्वान मुद्रावडे आह्वान करे, तेनो मंत्रः—

ॐ नमो ब्रह्मणे ऊर्ध्वलोकाधिष्ठायकाय राजहंसवाहनाय सायुधाय सपरिजनाय अमुकगृहे बृहद्स्नात्रमहोत्सवे आगच्छ आगच्छ स्वाहा।

पछी स्थापन मुद्रावडे, ते ज मंत्र बोली छेवटे अत्र तिष्ठ तिष्ठ स्वाहा। एम कही स्थापना करे.

पछी अंजलि मुद्रावडे, ते ज मंत्र बोली छेवटे पूजाबलिं गृहाण गृहाण स्वाहा। एम कही निमंत्रण करे.

पछी ते ज मंत्र सपरिजनाय सुधी बोली अष्टप्रकारी पूजा करवीः—

१ चन्दनं समर्पयामि स्वाहा। एकली सुखड.
२ पुष्पं समर्पयामि स्वाहा। सेवंत्री.
३ वस्त्रं समर्पयामि स्वाहा। श्वेत वस्त्र.।
४ फलं समर्पयामि स्वाहा। बीजोरुं.
५ धूपमाघ्रापयामि स्वाहा। धूप.
६ दीपं दर्शयामि स्वाहा। दीप.
७ नैवेद्यं समर्पयामि स्वाहा। घृतपूर (घेवर).
८ अक्षतं ताम्बूलं द्रव्यं सर्वोपचारान् समर्पयामि स्वाहा। पान, चोखा, सोपारी, पैसो.

पछी नीचेना मंत्रे स्फटिकनी एक नवकारवाळी गणवीः–

ॐ ह्रीँ क्ष्रूँ ल्लूं चँ द्रः ब्रह्मन् संवौषट् (स्वाहा)।

पछी पुष्प, वासचोखा, पाणी पसलीमां लइ उपरना मंत्र वडे त्रणवार अर्घ्य देवां. पछी बे हाथ जोडी नीचे प्रमाणे प्रार्थना करवीः–

ब्रह्मलोकविभुर्यस्तु, राजहंससमाश्रितः। संघस्य शान्तये सोऽस्तु, बलिपूजां प्रतीच्छतु ॥१॥

। इति ऊर्ध्वलोकाधिप पूजा ९ ।

## १० अथ पातालाधिप पूजा

प्रथम पुष्प वासचोखा वडे नागमंडळने वधावे, तेनो मंत्रः—

ॐ आँ ह्रीँ क्रौँ ऐँ क्ष्मौँ पद्मावतीसहिताय धरणेन्द्र संवौषट् (स्वाहा)।

पछी सुखड दूधमिश्रित करी नागलोकाधिपनी मूर्ति तथा मंत्र आळेखे. पछी आह्वान मुद्रावडे आह्वान करे तेनो मंत्रः—

ॐ नमो नागाय पातालनिवासाय पद्मवाहनाय सायुधाय सपरिजनाय अमुकगृहे वृद्धस्नात्रमहोत्सवे आगच्छ आगच्छ स्वाहा।

पछी स्थापन मुद्रावडे ते ज मंत्र बोली छेवटे अत्र तिष्ठ तिष्ठ स्वाहा। एम कही स्थापना करे.

पछी अंजलि मुद्राबडे ते ज मंत्र बोली छेवटे पूजावलिं गृहाण गृहाण स्वाहा। एम कही निमंत्रण करे.

पछी ते ज मंत्र सपरिजनाय सुधी बोली अष्टप्रकारी पूजा करवी:—

| | |
|---|---|
| १ चन्दनं समर्पयामि स्वाहा। सुखड. | २ पुष्पं समर्पयामि स्वाहा। मोगरानां पुष्प. |
| ३ वस्त्रं समर्पयापि स्वाहा। श्वेत वस्त्र. | ४ फलं समर्पयामि स्वाहा। श्वेत बदाम. |
| ५ धूपमाघ्रापयामि स्वाहा। धूप. | ६ दीपं दर्शयामि स्वाहा। दीप. |

७ नैवेद्यं समर्पयामि स्वाहा। दूधपेंडा.

८ अक्षतं ताम्बूलं द्रव्यं सर्वोपचारान् समर्पयामि स्वाहा। पान, चोखा, सोपारी, पैसो.

पछी नीचेना मंत्रे स्फटिकनी एक नवकारवाली गणवी.

ॐ आँ ह्रीँ क्रौँ ऐँ ह्रौँ पद्मावतीसहिताय धरणेन्द्र संवौषट् (स्वाहा)।

पछी पुष्प, वासचोखा, पाणी पसलीमां लइ उपरना मंत्र वडे त्रणवार अर्घ्य देवां. पछी बे हाथ जोडी नीचे प्रमाणे प्रार्थना करवी:—

पातालाधिपतिर्यस्तु, सर्वदा पद्मवाहनः। संघस्य शान्तये सोऽस्तु, बलिपूजां प्रतीच्छतु ॥१॥

। इति पातालाधिप पूजा १०।

## सर्वसाधारण अर्घ्यदेवानो विधि

पछी पूजक श्रावक एक थाळमां श्रीफळ, अक्षत, बहुवर्णी पुष्पो, रुपियो एक, पीत वस्त्र तथा बीजां फळो राखी उभो रही आ मंत्र बोलेः—

ॐ इन्द्राग्नियमनैर्ऋतवरुणवायुकुवेरेशानब्रह्मनागेति दश दिक्पाला जिनपतिपुरतोऽवतिष्ठन्तु । स्वाहा ।

एम बोली श्रीफळ वगेरे पट्टक उपर मूकवां. पछी ते पट्टकने एक गज पीळा रेशमी वस्त्रे ढांकीए. अने ते पट्टकने वस्त्र सहित नाडावडे बांधी प्रभुनी सन्मुख अथवा दक्षिण बाजु स्थापीए.

पछी पूजक श्रावक ग्रह पट्टक अने दिक्पाल पट्टकनी वच्चे उभो रही बे हाथ जोडी कोश मुद्राए नीचे प्रमाणे प्रार्थना करेः—

ॐ भो भो इन्द्रादयो दिक्पाला आदित्यादयो ग्रहाश्च स्वस्वदिशि स्थिता विघ्नशान्तिकरा भवत भवत स्वाहा ।

मुहूर्तथी पूर्वे दिक्पाल ग्रहप्रतिष्ठा होय तो पहेलां देरासरे त्रण दिवस सुधी पूजीए, मुहूर्त दिवसे प्रभाते वासे पूजीए. प्रतिमा पासे स्थापीए. पछी उक्त विधिए पूजीए.

॥ इति दशदिक्पाल पूजन विधि ॥

## दशदिक्पाल-पूजन उपकरण यंत्र

| दिक्पाल नाम | आलेख | पूजन | फूल | फल | वस्त्र | नैवेद्य | द्रव्यादि | माला | दिशा |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| इन्द्र | गोरोचन | केसर | चंपो | जंबीर | पीळुं वस्त्र | मोतियो लाडु | अक्षत, पान, सोपारी, त्रांबानाणुं | केरवो | पूर्वदिशा |
| अग्नि | रक्तचन्दन | ,, | जासुद | राती सोपारी | रातुं वस्त्र | चुरमानो लाडु | ,, | परवाला | अग्निकोण |
| यम | कस्तुरी चुओ | कंकु | दमणो-मरुओ | काली सोपारी | कालुं वस्त्र | अडदनो लाडु | ,, | अकलबेर | दक्षिणदिशा |
| नैर्ऋत | कस्तुरी | चुओ सुखड | मालती बोलसीरी | दाडिम | उदुं वस्त्र | तलवटनो लाडु | ,, | ,, | नैर्ऋत्यकोण |

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| वरुण | कस्तुरी चुओ | चुओ सुखड मिश्रित | दमणो बोलसीरी | दाडिम | आसमानी वस्त्र | मगदळनो लाडु | अक्षत, पान, सोपारी, त्रांबा-नाणुं | केरबो | पश्चिम दिशा |
| वायु | सुखड केसर कस्तुरी | बास चुओ कस्तुरी | चंपक दमणो | नारंगी केळां | नीलुं वस्त्र | घेंसीदल | ” | ” | वायव्यकोण |
| कुबेर | सुखडबरास | सुखड बरास मिश्र | जाइ अथवा सेवंत्रा | बीजोरुं | श्वेत वस्त्र | ” | ” | स्फटिक | उत्तरदिशा |
| ईशान | सुखड | सुखड | कुमुद | सेलडी | ” | ” | ” | ” | ईशानकोण |
| ब्रह्मा | सुखड कपूर | ” | सेवन्त्रा | बीजोरुं | ” | घेवर | ” | ” | उर्ध्वलोक |
| नाग | सुखड दूध-मिश्रित | ” | उज्ज्वल मोगरो | उज्ज्वल बदाम | ” | पेंडा | ” | ” | अधोलोक |

# ९ अथ अष्टमंगल पूजन विधि

मुहूर्तने दिवसे प्रभाते एक दक्ष श्रावक एक बीजा शेवनना पाटला उपर यक्षकर्दमवडे अष्टमंगळ आळेखे. ते दरेक मंगळ उपर एक एक पान, ते उपर चोखानी ढगली, एक एक सोपारी तथा एक एक पैसो मूकीए.

पछी नीचे प्रमाणे मांगलिकनी आठ गाथा बोलवी:—

मंगलं श्रीमदर्हन्तो, मंगलं जिनशासनम्। मंगलं सकलः संघो, मंगलं पूजका अमी ॥१॥

आ श्लोक बोलीने पीठ उपर अथवा रचेली भूमि उपर फूलनी अंजली नाखवी.

स्वस्ति भूगगननागविष्टपे-षूदितं जिनवरोदये क्षणात्। स्वस्तिकं तदनुमानतो जिन-स्याग्रतो बुधजनैर्विलिख्यते ॥

आ श्लोक बोलीने प्रभु प्रतिमानी आगळ साथियो चीतरवो.

विश्वत्रये च स्वकुले जिनेशो, व्याख्यायते श्रीकलशायमानः।
अतोऽत्र पूर्णं कलशं लिखित्वा, जिनार्चनाकर्म कृतार्थयामः ॥२॥

आ श्लोक बोलीने प्रभु प्रतिमानी आगळ कळश चीतरवो.

पुण्यं यशः समुदयः प्रभुता महत्त्वं, सौभाग्यधीविनयशर्ममनोरथाश्च।
वर्धन्त एव जिननायक ते प्रसादा-त्तद्वर्धमानयुगलं पटमादधामः ॥३॥

आ श्लोक बोलीने प्रभु प्रतिमानी आगळ शरावळानुं संपुट चीतरवुं.

कृद्धत्र[1] पंचशरकेतन भवेत्कृतं, कर्तुं मुधा भुवननाथ निजापराधम् ।
सेवां तनोति पुरतस्तव मीनयुग्मं, श्राद्धैः पुरो विलिखितोरुनिजांगयुक्त्या ॥४॥

आ श्लोक बोलीने प्रभु प्रतिमानी आगळ बे मत्स्य चीतरवां.

त्वत्सेवकानां जिननाथ दिक्षु, सर्वासु सर्वे निधयः स्फुरन्ति ।
अतश्चतुर्धा नवकोणनन्द्या-वर्तः सतां वर्तयतां सुखानि ॥५॥

आ श्लोक बोलीने प्रभु प्रतिमानी आगळ नंद्यावर्त चीतरवो.

जिनेन्द्रपादैः परिपूज्य पृष्ठे, रतिप्रभावे रभि(ति) सन्निकृष्टम् ।
भद्रासनं भद्रकरं जिनेन्द्र-पुरो लिखेन्मंगलसत्प्रयोगम् ॥६॥

आ श्लोक बोलीने प्रभु प्रतिमानी आगळ भद्रासन चीतरवुं.

अन्तः परमज्ञानं, यद्भाति जिनाधिनाथहृदयस्य । तच्छ्रीवत्सव्याजात्, प्रकटीभूतं बहिर्वन्दे ॥७॥

आ श्लोक बोलीने प्रभु प्रतिमानी आगळ श्रीवत्स चीतरवो.

आत्मालोकविधौ जिनोऽपि सकलस्तीव्रं तपो दुश्चरं, दानं ब्रह्म परोपकारकरणं कुर्वन् परिस्फूर्जति ।
सोऽयं यत्र सुखेन राजति स वै तीर्थाधिपस्याग्रतो, निर्मेयः परमार्थवृत्तिविदुरः संज्ञातिभिर्दर्पणः ॥८॥

१ आ श्लोकनुं आ प्रथम चरण अशुद्ध छे.

आ श्लोक बोलीने प्रभु प्रतिमानी आगळ चंदननुं अथवा सोना चांदीनुं दर्पण चीतरवुं.

पछी पूजक श्रावक एक थाळमां श्रीफळ, पंचवर्णी फूल, (फळ, रूपियो एक) वगेरे राखी उभो थइ आ प्रमाणे बोलेः—

नामजिणा जिणनामा, ठवणजिणा पुण जिणंदपडिमाओ । दव्वजिणा जिणजीवा, भावजिणा समवसरणत्था ॥

आ प्रमाणे गाथा बोली श्रीफळ वगेरे सर्व पाटला पर मूकवुं, पछी ते पाटलाने उज्ज्वळ वस्त्रे ढांकी[1] नाडावडे बांधी नवग्रह अने दश दिक्पाळनी वच्चे मूकवो. पछी वासक्षेप हाथमां लइ अष्टमंगळ स्थापन मंत्र आ प्रमाणे बोलवोः—

ॐ अर्हं स्वस्तिक-श्रीवत्स-कुम्भ-भद्रासन-नंद्यावर्त-वर्द्धमान-दर्पण-मत्स्ययुग्मानां अत्र अर्हद्बिंबप्रवेश-महोत्सवे सुस्थापितानि सुप्रतिष्ठानि अधिवासितानि लं लं लं ॐ ह्रीँ नमः स्वाहा ।

॥ इति अष्टमंगलपूजन विधि ॥

## १० अथ दशदिक्पाल आह्वान बृहद् विधि

ग्रह दिक्पालनो पट्टक स्थापी, प्रार्थना करी, चार शिखाबंध श्रावक चोटली छुटी मूकी अने जो चोटी न होय तो गेवासूत्र कंकणमंत्रे मंत्री चोटी बांधे-लांबी शिखा करे. तथा बीजा आठ श्रावक एम चार निर्दोष श्रावक मळी उत्तम, निर्दोष, पुत्रवती स्त्री पासे वलि रंधाव्यो होय तेः-खीर १, लापसी २, गळ्या मोळा पुडला ३, वडां ४, कुर(भात) ५, अथवा विध्यंतरे खीचडो,

१ विध्यंतरे वस्त्रथी ढांकता नथी.

करी हलावी भेगी करवो. पछी तेने मंडळ मध्ये लावी
पोटी. पापडा. ए सर्व मळीने शेर एकठीनो एक मोटी कथरोटमां एकठो करी हलावी भेगो करवो. पछी तेने मंडळ मध्ये लावी
बाजोट उपर मूकीने शिरावंर दध श्रावक पूर्व अथवा उत्तर सन्मुख वेसी घी शेर सवा गायनुं तेमां फरतुं सघळे रेडे. गुरु-खांड शेर
गमाने उपर भभरावे. चंदनना छांटा दे. उपर कणेरनां तथा बीजां पण फुल वेरे. पछी वासमुष्टि लइ नीचे प्रमाणेनो मंत्र गणी वास-
मुष्टि पलि उपर वेरे. आ प्रमाणे दरेक वखते मंत्रगणीने त्रणवार वासमुष्टि चलि उपर नांखे. मंत्रः—

ॐ नमो अरिहंताणं। ॐ नमो सिद्धाणं। ॐ नमो आयरियाणं। ॐ नमो उवज्झायाणं। ॐ नमो लोएसव्व साहूणं। ॐ नमो आगासगामिणं। ॐ नमो चारणाइलद्धीणं। जे इमे किन्नरकिंपुरिसमहोरगगरुलसिद्धगंधव्व-जक्खरक्खसपिसायभूयपेयसाइणिडाइणिपभिइणो जिणघरनिवासिणो निय निय निलयट्ठिया पवियारिणो सन्निहिया असन्निहिया य ते सव्वे इमं विलेवणधूवपुप्फफलपईवसणाहं बलिं पडिच्छंता तुट्ठिकरा भवंतु सिवंकरा भवंतु संतिकरा भवंतु सुत्थंजणं कुणंतु सव्वजिणाण सन्निहाणप्पभावओ पसन्नभावत्तणेण सव्वत्थ रक्खं कुणंतु सव्वत्थ दुरियाणि नासंतु सव्वासिवमुवसमंतु संतितुट्ठि पुट्ठि सिव सुत्थयकारिणो भवंतु। स्वाहा।

इति भूतबलि मंत्र।

पछी ते बलिनो अडधो भाग बीजा वासणमां लेवो. बाकी रहेलो अडधो भाग पवित्र स्थाने ढांकीने मूकवो. पछी शिखावंध श्रावक बे हाथे बलि-भाजन ग्रहण करे. एक श्रावक चंदननुं कचोलुं ले. एक पाणीनो कळश ग्रहण करे. एक फूलछाबडी ग्रहण करे. एक धूप ग्रहण करे. एक संभाळपूर्वक दीपक ग्रहण करे. एक चामर ग्रहण करे. एक घंट ग्रहण करे. एक आरिसो ग्रहण करे. एक

थाळी वेलण ग्रहण करे. एक अक्षत फलादि ग्रहण करे. एक दक्ष शिखाबंध श्रावक शुद्ध मंत्रपाठ उच्चरे. ए प्रमाणे चार श्रावक तथा बीजा पण स्नात्रियाओ वाजिंत्रादि ग्रही स्नात्रगृहने आगले भागे अने स्नात्र मंडपथी उंचे स्थानके अगासे रहे. प्रथम पूर्व सन्मुख उभा रही बलि-पोश भरी पाठ-कथक उंचा स्वरे दिक्पाळ आह्वान बलिदानपाठ कहे,* ते आ प्रमाणेः—

१ ॐ नम इन्द्राय पूर्वदिगधिष्ठायकाय ऐरावणवाहनाय सहस्रनेत्राय वज्रायुधाय सपरिजनाय अस्मिन् जंबूद्वीपे दक्षिणार्धभरते मध्यखण्डे अमुकदेशे अमुकनगरे अमुकजिनप्रासादे अमुकगृहे बृहद्स्नात्रमहोत्सवे आगच्छ आगच्छ बलिपूजां गृहाण गृहाण शान्तिकरा भवन्तु तुष्टिकरा भवन्तु पुष्टिकरा भवन्तु शिवंकरा भवन्तु स्वाहा । [आ मंत्रमांनो सपरिजनायथी लइने स्वाहा सुधीनो समग्र पाठ दरेक वखते एक सरखो बोलवो.]

ए पाठ कहीने बलि पूर्व दिशा सामे उछाळे. ते वखते जेणे चंदन ग्रहण कर्युं होय ते चंदनना छांटा नाखे. जळवाळो जळनी

* सूचनाः—बलिपाठ उच्चरतां बधा साथे बोलवा लागे. वाजिंत्र सर्व छानां राखे. अने बलि उछाळती वखते वाजिंत्र वगेरे वगाडे.

१ ज्यां ज्यां 'अमुक' शब्द आवे त्यां त्यां ते ते देश, नगर, प्रासाद अने घरनुं विशिष्ट नाम बोलवुं. २. आ ठेकाणे जे महोत्सव होय ते महोत्सवनुं नाम बोलवुं जेमके 'शांतिस्नात्रमहोत्सवे. बिंबप्रवेशमहोत्सवे वगेरे.

३ अहीं कोइक गाममां बलि-पिंडनो पूर्वसन्मुख ढगलो [पुंज] करे छे. जलादिक पण त्यां ज रेडे छे. ते देशमां मिथ्यात्वी लोको बहु होवाना कारणे ते लोको रांधेला बलिने अभडावनार वस्तु (छोती) तरीके गणे छे अने घरमां जो बलि पडे तो तेने एंठ समान गणी शासन उपर द्वेष धरे. आटला माटे पुंज करवो. बाकी मूळ विधि ते प्रमाणे न समजवो.

अंजलि आगे. फूलवाळो फूल उछाळे. धूपवाळो धूप उखेवे. दीपवाळो दीप देखाडे. चामरवाळो चामर वींझे. घंटवाळो घंट वगाडे. आरिसावाळो आरीसो बतावे. थाळीवाळो थाळी वगाडे. अक्षतफलादिवाळो ते चढावे. एम सर्व पोतपोताना उपकरणे पूजा करे [दरेक स्थाने आ प्रमाणे पूजन करवुं.]

पछी अग्निखुणा सन्मुख उभा रही नीचेनो पाठ कहे:–

(२) ॐ नमो अग्निमूर्तये शक्तिहस्ताय मेषवाहनाय सपरिजनाय वगेरे समग्र पाठ बोली बलि उछाळे-पूजन वगेरे करे.

पछी दक्षिण दिशा सन्मुख उभा रही नीचेनो पाठ कहे:—

(३) ॐ नमो यमाय दक्षिणदिगधिष्ठायकाय महिषवाहनाय दंडायुधाय कृष्णमूर्तये सपरिजनाय वगेरे समग्र पाठ बोली बलि उछाळे पूजन वगेरे करे.

पछी नैऋत्य खुणा सन्मुख उभा रही नीचेनो पाठ कहे:–

(४) ॐ नमो नैऋताय खड्गहस्ताय शिववाहनाय सपरिजनाय इत्यादि पाठ कही बलि उछाळे. पूजन वगेरे करे.

पछी पश्चिम सन्मुख उभा रही नीचेनो पाठ कहे:–

(५) ॐ नमो वरुणाय पश्चिमदिगधिष्ठायकाय मकरवाहनाय पाशहस्ताय सपरिजनाय वगेरे समग्र पाठ बोली

बलि उछाळे पूजन वगेरे करे.

पछी वायव्यखुणा सामे उभा रही नीचेनो पाठ बोले:—

(६) ॐ नमो वायवे वायवीपतये ध्वजहस्ताय हरिणवाहनाय सपरिजनाय वगेरे समग्र पाठ कही बलि उछाळे. पूजन वगेरे करे.

पछी उत्तर दिशा सन्मुख उभा रही नीचेनो पाठ कहे:—

(७) ॐ नमो धनदाय उत्तरदिगधिष्ठायकाय गदाहस्ताय नरवाहनाय सपरिजनाय वगेरे समग्र पाठ कही बलि उछाळे. पूजन वगेरे करे.

पछी ईशान खुणा सन्मुख उभा रही नीचेनो पाठ कहे:—

(८) ॐ नम ईशानाय ऐशानीपतये त्रिशूलहस्ताय वृषभवाहनाय सपरिजनाय वगेरे समग्र पाठ कही बलि उछाळे. पूजन वगेरे करे.

पछी ऊर्ध्वमुख राखी नीचेनो पाठ कहे:—

(९) ॐ नमो ब्रह्मणे ऊर्ध्वलोकाधिष्ठायकाय राजहंसवाहनाय सपरिजनाय वगेरे समग्र पाठ कही उंचे बलि उछाळे पूजन वगेरे करे.

पछी अधोमुख रासी नीचेनो पाठ कहे:—

(१०) ॐ नमो नागाय पातालाधिष्ठायकाय पद्मवाहनाय सपरिजनाय वगेरे समग्र पाठ कही नीचे चलि नाखे पूजन वगेरे करे.

॥ इति दशदिक्पाल आह्वान बृहद् विधि ॥

## ११ अथ नन्द्यावर्त पूजन विधि (संक्षिप्त)

चल बिंबने विषे नंद्यावर्तनी विधि करीने नंद्यावर्तनी उपर प्रतिमाजी स्थापन करवा, परंतु निश्चळ–स्थिर बिंब होय तो बिंबनी आगळ अथवा वेदिनी मध्ये नंद्यावर्तनुं पूजन करवुं. तेनो विधि आ प्रमाणे—

प्रथम गुरु भद्रासनपर बेसी नंद्यावर्तनी पूजा करे, तेमां प्रथम कर्पूर मिश्र चंदनना सात लेपथी लीपेला श्रीपर्णीना पाटला उपर कर्पूर, कस्तूरी अने गोरोचंदनथी मिश्र करेला केसरना रसवडे प्रदक्षिणाना क्रमे नव खूणावाळो नंद्यावर्त आळेखवो. ते आ प्रमाणे–मध्यथी आरंभीने बहार वलयनो क्रम करवो. तेमां मध्ये नंद्यावर्त, जमणी बाजु सौधर्मेन्द्रनी स्थापना, डाबी बाजु ईशानेंद्रनी स्थापना तथा नीचे श्रुतदेवतानी स्थापना करवी. तेमां सौधर्मेन्द्रनो वर्ण सुवर्ण जेवो, चार हाथ, हाथीनुं वाहन, पंचरंगी वस्त्र पहेरेलां, बे हाथवडे अंजलि बांधेली, एक हाथमां अभय अने एक हाथमां वज्र धारण करेलुं होय छे. तथा ईशानेंद्रनो वर्ण श्वेत होय छे, वृषभनुं वाहन, नीलुं अने रातुं वस्त्र, तथा चार हाथ होय छे, तेमां एक हाथमां जयने धारण करनार, एक हाथमां शूल अने

चापने धारण करनार तथा बे हाथे अंजली बांधेली होय छे. तथा श्रुतदेवतानो श्वेत वर्ण होय छे, ते श्वेत वस्त्रने धारण करे छे, तेने हंसनुं वाहन होय छे, ते श्वेत सिंहासन उपर बेठेली होय छे, भामंडळवडे शोभित होय छे, तथा तेने चार हाथ होय छे, तेमां बे डाबा हाथमां श्वेत कमळ अने वीणाने धारण करे छे तथा बे जमणा हाथमां पुस्तक अने मुक्तानी माळा धारण करे छे.

त्यारपछी आ मध्य भागनी परिधिमां [फरतुं] वृत्त वेष्टन (गोळ वलय) करवुं, तेनी बहारना भागमां आठ गृह रचवां, ते अष्ट दळने विषे अनुक्रमे आ प्रमाणे स्थापना करवी—

ॐ नमोऽर्हद्भ्यः स्वाहा, ॐ नमः सिद्धेभ्यः स्वाहा, ॐ नम आचार्येभ्यः स्वाहा, ॐ नम उपाध्यायेभ्यः स्वाहा, ॐ नमः सर्वसाधुभ्यः स्वाहा। ॐ नमो ज्ञानाय स्वाहा, ॐ नमो दर्शनाय स्वाहा, ॐ नमश्चारित्राय स्वाहा ॥

त्यारपछी आठनी परिधिमां [फरतुं] वृत्त वलय करवुं, तेनी बहार चारे दिशामां चोवीश दळनी स्थापना करवी. तेमां अनुक्रमे आ प्रमाणे स्थापना करवी—

ॐ नमो मरुदेव्यै स्वाहा १, ॐ नमो विजयायै स्वाहा २, ॐ नमः सेनायै स्वाहा ३, ॐ नमः सिद्धार्थायै स्वाहा ४, ॐ नमो मङ्गलायै स्वाहा ५, ॐ नमः सुसीमायै स्वाहा ६, ॐ नमः पृथ्व्यै स्वाहा ७, ॐ नमो लक्ष्मणायै स्वाहा ८, ॐ नमो रामायै स्वाहा ९, ॐ नमो नन्दायै स्वाहा १०, ॐ नमो वैष्णव्यै स्वाहा ११, ॐ नमो

ॐ नमः सुयशायै स्वाहा १४, ॐ नमः सुव्रतायै स्वाहा १५,
जयायै स्वाहा १२, ॐ नमः श्यामायै स्वाहा १३, ॐ नमो देव्यै स्वाहा १८, ॐ नमः प्रभावत्यै स्वाहा
ॐ नमोऽनिरायै स्वाहा १६, ॐ नमः श्रियै स्वाहा १७, ॐ नमः शिवायै स्वाहा २२, ॐ नमो वामायै
१९, ॐ नमः पद्मावत्यै स्वाहा २०, ॐ नमो वप्रायै स्वाहा २१,
स्वाहा २३, ॐ नमस्त्रिशलायै स्वाहा २४

त्यारपछी तेनी परिधिमां मंडळ-वलय करवुं. तेमां सोळ दळ रचवां, तेमां—

ॐ नमो वज्रशृंखलायै स्वाहा ३, ॐ नमो वज्रां-
ॐ नमो रोहिण्यै स्वाहा १, ॐ नमः प्रज्ञप्त्यै स्वाहा २, ॐ नमः काल्यै स्वाहा ७, ॐ
कुशयै स्वाहा ४, ॐ नमोऽप्रतिचक्रायै स्वाहा ५, ॐ नमः पुरुषदत्तायै स्वाहा ६, ॐ नमो महाज्वालायै स्वाहा
नमो महाकाल्यै स्वाहा ८, ॐ नमो गौर्यै स्वाहा ९, ॐ नमो गन्धार्यै स्वाहा १०, ॐ नमो मान
११, ॐ नमो मानव्यै स्वाहा १२, ॐ नमोऽच्छुप्तायै स्वाहा १३, ॐ नमो वैरोट्यायै स्वाहा १४,
स्यै स्वाहा १५, ॐ नमो महामानस्यै स्वाहा १६ ॥

त्यारपछी तेनी बहार परिधि करीने चोवीश दळ करवा, तेमां अनुक्रमे आ प्रमाणे देवो स्थापवा—

ॐ नमः सारस्वतेभ्यः स्वाहा १, ॐ नम आदित्येभ्यः स्वाहा २, ॐ नमो वह्निभ्यः स्वाहा ३, ॐ नमो
वरुणेभ्यः स्वाहा ४, ॐ नमो गर्दतोयेभ्यः स्वाहा ५, ॐ नमस्तुषितेभ्यः स्वाहा ६, ॐ नमोऽव्याबाधितेभ्यः

स्वाहा ७, ॐ नमोऽरिष्टेभ्यः स्वाहा ८, ॐ नमोऽग्न्याभेभ्यः स्वाहा ९, ॐ नमः सूर्याभेभ्यः स्वाहा १०, ॐ नमश्चन्द्राभेभ्यः स्वाहा ११, ॐ नमः सत्याभेभ्यः स्वाहा १२, ॐ नमः श्रेयस्करेभ्यः स्वाहा १३, ॐ नमः क्षेमंकरेभ्यः स्वाहा १४, ॐ नमो वृषभेभ्यः स्वाहा १५, ॐ नमः कामचारेभ्यः स्वाहा १६, ॐ नमो निर्वाणेभ्यः स्वाहा १७, ॐ नमो दिशान्तरक्षितेभ्यः स्वाहा १८, ॐ नम आत्मरक्षितेभ्यः स्वाहा १९, ॐ नमः सर्वरक्षितेभ्यः स्वाहा २०, ॐ नमो मारुतेभ्यः स्वाहा २१, ॐ नमो वसुभ्यः स्वाहा २२, ॐ नमोऽश्वेभ्यः स्वाहा २३, ॐ नमो विश्वेभ्यः स्वाहा २४॥

त्यारपछी तेनी फरती परिधि करीने चोसठ दळ करीने तेमां अनुक्रमे आ प्रमाणे देवो स्थापवा—

ॐ नमश्चमराय स्वाहा १, ॐ नमो बलये स्वाहा २, ॐ नमो धरणाय स्वाहा ३, ॐ नमो भूतानन्दाय स्वाहा ४, ॐ नमो वेणुदेवाय स्वाहा ५, ॐ नमो वेणुदारिणे स्वाहा ६, ॐ नमो हरिकान्ताय स्वाहा ७, ॐ नमो हरिसहाय स्वाहा ८, ॐ नमोऽग्निशिखाय स्वाहा ९, नमोऽग्निमानवाय स्वाहा १० ॐ नमः पुण्याय स्वाहा ११, ॐ नमो वशिष्ठाय स्वाहा १२, ॐ नमो जलकान्ताय स्वाहा १३, ॐ नमो जलप्रभाय स्वाहा १४, ॐ नमोऽमितगतये स्वाहा १५, ॐ नमोऽमितवाहनाय स्वाहा १६, ॐ नमो वेलंबाय स्वाहा १७, ॐ नमः प्रभंजनाय स्वाहा १८, ॐ नमो घोषाय स्वाहा १९, ॐ नमो महाघोषाय स्वाहा २०, ॐ नमः कालाय स्वाहा २१, ॐ नमो महाकालाय स्वाहा २२, ॐ नमः सुरूपाय स्वाहा २३, ॐ नमः प्रतिरूपाय स्वाहा २४, ॐ नमः पूर्णभद्राय स्वाहा

२५, ॐ नमो मणिभद्राय स्वाहा २६, ॐ नमो भीमाय स्वाहा २७, ॐ नमो महाभीमाय स्वाहा २८, ॐ नमः
किंनराय स्वाहा २९, ॐ नमः किंपुरुषाय स्वाहा ३०, ॐ नमः सत्पुरुषाय स्वाहा ३१, ॐ नमो महापुरुषाय
स्वाहा ३२, ॐ नमोऽतिकायाय स्वाहा ३३, ॐ नमो महाकायाय स्वाहा ३४, ॐ नमो गीतरतये स्वाहा ३५, ॐ
नमो गीतयशसे स्वाहा ३६, ॐ नमः संनिहिताय स्वाहा ३७, ॐ नमो महाकायाय स्वाहा ३८, ॐ नमो धात्रे
स्वाहा ३९, ॐ नमो विधात्रे स्वाहा ४०, ॐ नम ऋषये स्वाहा ४१, ॐ नम ऋषिपालाय स्वाहा ४२, ॐ नम ईश्व-
राय स्वाहा ४३, ॐ नमो महेश्वराय स्वाहा ४४, ॐ नमः सुवत्सं स्वाहा ४५, ॐ नमो विशालाय स्वाहा ४६,
ॐ नमो हासाय स्वाहा ४७, ॐ नमो हासरतये स्वाहा ४८, ॐ नमः श्वेताय स्वाहा ४९, ॐ नमो महाश्वेताय
स्वाहा ५०, ॐ नमः पतगाय स्वाहा ५१, ॐ नमः पतगरतये स्वाहा ५२, ॐ नमः सूर्याय स्वाहा ५३, ॐ नमश्च-
न्द्राय स्वाहा ५४, ॐ नमः सौधर्मेन्द्राय स्वाहा ५५, ॐ नम ईशानेन्द्राय स्वाहा ५६, ॐ नमः सनत्कुमारेन्द्राय
स्वाहा ५७, ॐ नमो माहेन्द्राय स्वाहा ५८, ॐ नमो ब्रह्मेन्द्राय स्वाहा ५९, ॐ नमो लान्तकेन्द्राय स्वाहा ६०,
ॐ नमः शुक्रेन्द्राय स्वाहा ६१, ॐ नमः सहस्रारेन्द्राय स्वाहा ६२, ॐ नम आनतप्राणतेन्द्राय स्वाहा ६३, ॐ
नम आरणाच्युतेन्द्राय स्वाहा ६४ ॥

त्यारपछी तेनी बहार परिधि करीने चोसठ दळ करी तेमां अनुक्रमे आ प्रमाणे देवीओनी स्थापना करवीः—
ॐ नमश्चमरदेवीभ्यः स्वाहा १, ॐ नमो बलिदेवीभ्यः स्वाहा २, ॐ नमो धरणदेवीभ्यः स्वाहा ३, ॐ नमो भूता-

नन्ददेवीभ्यः स्वाहा ४, ॐ नमो वेणुदेवीभ्यः स्वाहा ५, ॐ नमो वेणुदारिदेवीभ्यः स्वाहा ६, ॐ नमो हरिकान्तदेवीभ्यः स्वाहा ७, ॐ नमो हरिसहदेवीभ्यः स्वाहा ८, ॐ नमोऽग्निशिखदेवीभ्यः स्वाहा ९, ॐ नमोऽग्निमानवदेवीभ्यः स्वाहा १०, ॐ नमः पूर्णदेवीभ्यः स्वाहा ११, ॐ नमो वशिष्ठदेवीभ्यः स्वाहा १२, ॐ नमो जलकान्तदेवीभ्यः स्वाहा १३, ॐ नमो जलप्रभदेवीभ्यः स्वाहा १४, ॐ नमोऽमितगतिदेवीभ्यः स्वाहा १५, ॐ नमोऽमितवाहनदेवीभ्यः स्वाहा १६, ॐ नमो वेलंबदेवीभ्यः स्वाहा १७, ॐ नमः प्रभञ्जनदेवीभ्यः स्वाहा १८, ॐ नमो घोषदेवीभ्यः स्वाहा १९, ॐ नमो महाघोषदेवीभ्यः स्वाहा २०, ॐ नमः कालदेवीभ्यः स्वाहा २१, ॐ नमो महाकालदेवीभ्यः स्वाहा २२, ॐ नमः सुरूपदेवीभ्यः स्वाहा २३, ॐ नमः प्रतिरूपदेवीभ्यः स्वाहा २४, ॐ नमः पूर्णभद्रदेवीभ्यः स्वाहा २५, ॐ नमो मणिभद्रदेवीभ्यः स्वाहा २६, ॐ नमो भीमदेवीभ्यः स्वाहा २७, ॐ नमो महाभीमदेवीभ्यः स्वाहा २८, ॐ नमः किन्नरदेवीभ्यः स्वाहा २९, ॐ नमः किंपुरुषदेवीभ्यः स्वाहा ३० ॐ नमः सत्पुरुषदेवीभ्यः स्वाहा ३१, ॐ नमो महापुरुषदेवीभ्यः स्वाहा ३२, ॐ नमोऽतिकायदेवीभ्यः स्वाहा ३३, ॐ नमो महाकायदेवीभ्यः स्वाहा ३४, ॐ नमो गीतरतिदेवीभ्यः स्वाहा ३५, ॐ नमो गीतयशोदेवीभ्यः स्वाहा ३६, ॐ नमः सन्निहितदेवीभ्यः स्वाहा ३७, ॐ नमः सन्मानदेवीभ्यः स्वाहा ३८, ॐ नमो धातृदेवीभ्यः स्वाहा ३९, ॐ नमो विधातृदेवीभ्यः स्वाहा ४०, ॐ नमः ऋषिदेवीभ्यः स्वाहा ४१, ॐ नम ऋषिपालदेवीभ्यः स्वाहा ४२, ॐ नम ईश्वरदेवीभ्यः स्वाहा ४३, ॐ नमो महेश्वरदेवीभ्यः स्वाहा ४४, ॐ नमः सुवत्सदेवीभ्यः स्वाहा ४५,

विश ष्रोव • विधि ॥६३॥

ॐ नमो हासदेवीभ्यः स्वाहा ४७, ॐ नमो हासरतिदेवीभ्यः स्वाहा ४८,
ॐ नमो विशालदेवीभ्यः स्वाहा ४६, ॐ नमो महाश्वेतदेवीभ्यः स्वाहा ५०, ॐ नमः पतगदेवीभ्यः स्वाहा ५१, ॐ
ॐ नमः श्वेतदेवीभ्यः स्वाहा ४९, ॐ नमः सूर्यदेवीभ्यः स्वाहा ५३, ॐ नमश्चन्द्रदेवीभ्यः स्वाहा ५४, ॐ नमः
नमः पतगरतिदेवीभ्यः स्वाहा ५२, ॐ नम ईशानेन्द्रदेवीभ्यः स्वाहा ५६, ॐ नमः सनत्कुमारेन्द्रपरिजनाय स्वाहा
सौधर्मेन्द्रदेवीभ्यः स्वाहा ५५, ॐ नमो ब्रह्मेन्द्रपरिजनाय स्वाहा ५९, ॐ नमो लान्तकेन्द्रपरिज-
५७, ॐ नमो माहेन्द्रपरिजनाय स्वाहा ५८, ॐ नमः सहस्रारेन्द्रपरिजनाय स्वाहा ६२, ॐ नम
नाय स्वाहा ६०, ॐ नमः शुक्रेन्द्रपरिजनाय स्वाहा ६१, ॐ नम आरणाच्युतेन्द्रपरिजनाय स्वाहा ६४ ॥
आनतप्राणतेन्द्रपरिजनाय स्वाहा ६३,

त्यारपछी तेनी बहार परिधि करीने चोवीश दल करवां, ते दळोमां अनुक्रमे आ प्रमाणे देवो स्थापवा—

ॐ नमो गोमुखाय स्वाहा १, ॐ नमो महायक्षाय स्वाहा २, ॐ नमस्त्रिमुखाय स्वाहा ३, ॐ नमो यक्षनाय-
काय स्वाहा ४, ॐ नमस्तुम्बरवे स्वाहा ५, ॐ नमः कुसुमाय स्वाहा ६, ॐ नमो मातङ्गाय स्वाहा ७, ॐ नमो
विजयाय स्वाहा ८, ॐ नमोऽजिताय स्वाहा ९, ॐ नमो ब्रह्मणे स्वाहा १०, ॐ नमो यक्षाय स्वाहा ११, ॐ नमः
कुमाराय स्वाहा १२, ॐ नमः षण्मुखाय स्वाहा १३, ॐ नमः पातालाय स्वाहा १४, ॐ नमः किन्नराय स्वाहा
१५, ॐ नमो गरुडाय स्वाहा १६, ॐ नमो गन्धर्वाय स्वाहा १७, ॐ नमो यक्षेशाय स्वाहा १८, ॐ नमः कुबेराय
स्वाहा १९, ॐ नमो वरुणाय स्वाहा २०, ॐ नमो भृकुटये स्वाहा २१, ॐ नमो गोमेधाय स्वाहा २२, ॐ नमः

नन्द्यावर्त स्थापना ॥६३॥

नन्ददेवीभ्यः स्वाहा ४, ॐ नमो वेणुदेवीभ्यः स्वाहा ५, ॐ नमो वेणुदारिदेवीभ्यः स्वाहा ६, ॐ नमो हरिकान्तदेवीभ्यः स्वाहा ७, ॐ नमो हरिसहदेवीभ्यः स्वाहा ८, ॐ नमोऽग्निशिखदेवीभ्यः स्वाहा ९, ॐ नमोऽग्निमानवदेवीभ्यः स्वाहा १०, ॐ नमः पूर्णदेवीभ्यः स्वाहा ११, ॐ नमो वशिष्ठदेवीभ्यः स्वाहा १२, ॐ नमो जलकान्तदेवीभ्यः स्वाहा १३, ॐ नमो जलप्रभदेवीभ्यः स्वाहा १४, ॐ नमोऽमितगतिदेवीभ्यः स्वाहा १५, ॐ नमोऽमितवाहनदेवीभ्यः स्वाहा १६, ॐ नमो वेलंबदेवीभ्यः स्वाहा १७, ॐ नमः प्रभञ्जनदेवीभ्यः स्वाहा १८, ॐ नमो घोपदेवीभ्यः स्वाहा १९, ॐ नमो महाघोपदेवीभ्यः स्वाहा २०, ॐ नमः कालदेवीभ्यः स्वाहा २१, ॐ नमो महाकालदेवीभ्यः स्वाहा २२, ॐ नमः सुरूपदेवीभ्यः स्वाहा २३, ॐ नमः प्रतिरूपदेवीभ्यः स्वाहा २४, ॐ नमः पूर्णभद्रदेवीभ्यः स्वाहा २५, ॐ नमो मणिभद्रदेवीभ्यः स्वाहा २६, ॐ नमो भीमदेवीभ्यः स्वाहा २७, ॐ नमो महाभीमदेवीभ्यः स्वाहा २८, ॐ नमः किन्नरदेवीभ्यः स्वाहा २९, ॐ नमः किंपुरुपदेवीभ्यः स्वाहा ३० ॐ नमः सत्पुरुपदेवीभ्यः स्वाहा ३१, ॐ नमो महापुरुपदेवीभ्यः स्वाहा ३२, ॐ नमोऽहिकायदेवीभ्यः स्वाहा ३३, ॐ नमो महाकायदेवीभ्यः स्वाहा ३४, ॐ नमो गीतरतिदेवीभ्यः स्वाहा ३५, ॐ नमो गीतयशोदेवीभ्यः स्वाहा ३६, ॐ नमः सन्निहितदेवीभ्यः स्वाहा ३७, ॐ नमः सन्मानदेवीभ्यः स्वाहा ३८, ॐ नमो धातृदेवीभ्यः स्वाहा ३९, ॐ नमो विधातृदेवीभ्यः स्वाहा ४०, ॐ नमः ऋपिदेवीभ्यः स्वाहा ४१, ॐ नम ऋपिपालदेवीभ्यः स्वाहा ४२, ॐ नम ईश्वरदेवीभ्यः स्वाहा ४३, ॐ नमो महेश्वरदेवीभ्यः स्वाहा ४४, ॐ नमः सुवक्षोदेवीभ्यः स्वाहा ४५,

ॐ नमो विशालदेवीभ्यः स्वाहा ४६, ॐ नमो हासदेवीभ्यः स्वाहा ४७, ॐ नमो हासरतिदेवीभ्यः स्वाहा ४८, ॐ नमः श्वेतदेवीभ्यः स्वाहा ४९, ॐ नमो महाश्वेतदेवीभ्यः स्वाहा ५०, ॐ नमः पतगदेवीभ्यः स्वाहा ५१, ॐ नमः पतगरतिदेवीभ्यः स्वाहा ५२, ॐ. नमः सूर्यदेवीभ्यः स्वाहा ५३, ॐ नमश्चन्द्रदेवीभ्यः स्वाहा ५४, ॐ नमः सौधर्मेन्द्रदेवीभ्यः स्वाहा ५५, ॐ नम ईशानेन्द्रदेवीभ्यः स्वाहा ५६, ॐ नमः सनत्कुमारेन्द्रपरिजनाय स्वाहा ५७, ॐ नमो माहेन्द्रपरिजनाय स्वाहा ५८, ॐ नमो ब्रह्मेन्द्रपरिजनाय स्वाहा ५९, ॐ नमो लान्तकेन्द्रपरिजनाय स्वाहा ६०, ॐ नमः शुक्रेन्द्रपरिजनाय स्वाहा ६१, ॐ नमः सहस्रारेन्द्रपरिजनाय स्वाहा ६२, ॐ नम आनतप्राणतेन्द्रपरिजनाय स्वाहा ६३, ॐ नम आरणाच्युतेन्द्रपरिजनाय स्वाहा ६४ ॥

त्यारपछी तेनी बहार परिधि करीने चोवीश दळ करवां, ते दळोमां अनुक्रमे आ प्रमाणे देवो स्थापवा—

ॐ नमो गोमुखाय स्वाहा १, ॐ नमो महायक्षाय स्वाहा २, ॐ नमस्त्रिमुखाय स्वाहा ३, ॐ नमो यक्षनायकाय स्वाहा ४, ॐ नमस्तुम्बरवे स्वाहा ५, ॐ नमः कुसुमाय स्वाहा ६, ॐ नमो मातङ्गाय स्वाहा ७, ॐ नमो विजयाय स्वाहा ८, ॐ नमोऽजिताय स्वाहा ९, ॐ नमो ब्रह्मणे स्वाहा १०, ॐ नमो यक्षाय स्वाहा ११, ॐ नमः कुमाराय स्वाहा १२, ॐ नमः षण्मुखाय स्वाहा १३, ॐ नमः पातालाय स्वाहा १४, ॐ नमः किन्नराय स्वाहा १५, ॐ नमो गरुडाय स्वाहा १६, ॐ नमो गन्धर्वाय स्वाहा १७, ॐ नमो यक्षेशाय स्वाहा १८, ॐ नमः कुबेराय स्वाहा १९, ॐ नमो वरुणाय स्वाहा २०, ॐ नमो भृकुटये स्वाहा २१, ॐ नमो गोमेधाय स्वाहा २२, ॐ नमः

पार्श्वाय स्वाहा २३, ॐ नमो मातङ्गाय स्वाहा २४ ॥

त्यारपछी तेनी बहार परिधि करीने चोवीश दळ करवां, ते दळोमां गोमुखादिकना क्रम प्रमाणे आ रीते देवीओ स्थापवी—

ॐ नमश्चक्रेश्वर्यै स्वाहा १, ॐ नमोऽजितबलायै स्वाहा २, ॐ नमो दुरितायै स्वाहा ३, ॐ नमः कालिकायै स्वाहा ४, ॐ नमो महाकालिकायै स्वाहा ५, ॐ नमः श्यामायै स्वाहा ६, ॐ नमः शान्तायै स्वाहा ७, ॐ नमो भृकुटये स्वाहा ८, ॐ नमः सुतारिकायै स्वाहा ९, ॐ नमोऽशोकायै स्वाहा १०, ॐ नमो मानव्यै स्वाहा ११, ॐ नमश्चंडायै स्वाहा १२, ॐ नमो विदितायै स्वाहा १३, नमोऽङ्कुशायै स्वाहा १४, ॐ नमः कन्दर्पायै स्वाहा १५, ॐ नमो निर्वाण्यै स्वाहा १६, ॐ नमो बलायै स्वाहा १७, ॐ नमो धारिण्यै स्वाहा १८, ॐ नमो धरणप्रियायै स्वाहा १९, ॐ नमो नरदत्तायै स्वाहा २०, ॐ नमो गान्धार्यै स्वाहा २१, ॐ नमोऽम्बिकायै स्वाहा २२, ॐ नमः पद्मावत्यै स्वाहा २३, ॐ नमः सिद्धायिकायै स्वाहा २४ ॥

त्यारपछी तेनी बहार परिधि करीने दश दळ करीने तेमां अनुक्रमे आ प्रमाणे स्थापना करवी—

ॐ नम इन्द्राय स्वाहा १, ॐ नमोऽग्नये स्वाहा २, ॐ नमो यमाय स्वाहा ३, ॐ नमो निर्ऋतये स्वाहा ४; ॐ नमो वरुणाय स्वाहा ५, ॐ नमो वायवे स्वाहा ६, ॐ नमः कुबेराय स्वाहा ७, ॐ नम ईशानाय स्वाहा ८, ॐ नमो ब्रह्मणे स्वाहा ९, ॐ नमो नागेभ्यः स्वाहा १० ॥

त्यारपछी तेनी उपर दश दळ करीने तेमां आ प्रमाणे अनुक्रमे सूर्यादिक स्थापवा—

ॐ नमः सूर्याय स्वाहा १, ॐ नमश्चन्द्राय स्वाहा २, ॐ नमो भौमाय स्वाहा ३, ॐ नमो बुधाय स्वाहा ४, ॐ नमो गुरवे स्वाहा ५, ॐ नमः शुक्राय स्वाहा ६, ॐ नमः शनैश्चराय स्वाहा ७, ॐ नमो राहवे स्वाहा ८, ॐ नमः केतवे स्वाहा ९, ॐ नमः क्षेत्रपालाय स्वाहा १० ॥

त्यारपछी तेनी उपर परिधि करवी. तेनी बहार चार चार वज्रनां चिन्हवाळुं चार खूणावाळुं भूमिपुर करवुं. तेना दरेक खूणामां ल ध वर्णनुं चिन्ह करवुं. तेनी मध्ये आ प्रमाणे देवो स्थापवाः—

ईशान खूणामां ॐ नमो वैमानिकेभ्यः स्वाहा ॥१॥ अग्नि खूणामां ॐ नमो भुवनपतिभ्यः स्वाहा ॥२॥

नैऋत खूणामां ॐ नमो व्यन्तरेभ्यः स्वाहा ॥३॥ वायव्य खूणामां ॐ नमो ज्योतिष्केभ्यः स्वाहा ॥४॥

। इति नन्द्यावर्त्त स्थापना ।

## अथ पूजा

"कल्याणवल्लीकन्दाय, कृतानन्दाय साधुषु। सदा शुभविवर्ताय, नन्द्यावर्त्ताय ते नमः ॥१॥"

आ मंत्र बोली नंद्यावर्त उपर पुष्पांजलि नांखवी. पछी तेनी आ प्रमाणे बोलीने पूजा करवीः—

ॐ नमः सर्वतीर्थंकरेभ्यः सर्वगतेभ्यः सर्वविद्भ्यः सर्वदर्शिभ्यः सर्वहितेभ्यः सर्वदेभ्यः इह नन्द्यावर्त्तस्था-

देहि, सर्वसमीहितं देहि देहि स्वाहा।

आ प्रमाणे बोलीने चारे खुणामांना दरेक खुणामां वास पुष्प अक्षत नाखवां.

पछी नंद्यावर्त लखवो. पछी आचार्य सदश (छेडावाळुं) वस्त्र पहेरी शुचिविद्या भणे, तेनो मन्त्रः—

ॐ नमो अरिहंताणं, ॐ नमो सिद्धाणं, ॐ नमो आयरियाणं, ॐ नमो उवज्झायाणं, ॐ नमो लोए सव्व-साहूणं, ॐ नमो आगासगामिणं, ॐ हः क्षः नमः अशुचिः शुचिर्भवामि स्वाहा।

आ शुचिविद्या कही स्नात्रकारकने अंगरक्षा करवी, तेनो मंत्रः—

ॐ नमो अरिहंताणं हृदये, ॐ नमो सिद्धाणं मस्तके, ॐ नमो आयरियाणं शिखायां, ॐ नमो उवज्झा-याणं सन्नाहः, ॐ नमो लोए सव्वसाहूणं दिव्यास्त्रम्।

आ मन्त्र सात वार जपी शरीर रक्षा करे. पछी स्नात्रकारक श्रावके बळि अभिमन्त्रवा तेनो मन्त्रः—

ॐ ह्रीँ क्ष्वीँ सर्वोपद्रवाद् बलिं रक्ष रक्ष स्वाहा।

आ मन्त्र वडे एकवीश वार मन्त्री दशे दिशामां पाणी, धूप, दीप सहित बळि नांखवी. दशदिक्पालनुं आह्वान करवुं, ते आ प्रमाणेः—

ॐ इन्द्राय सायुधाय सवाहनाय सपरिकराय इह ध्वजारोपणे आगच्छ आगच्छ स्वाहा १।

आ ज प्रमाणे उपरना मन्त्रमांना ॐ इन्द्राय पदने बदले अनुक्रमे ॐ अग्नये २। ॐ यमाय ३। ॐ नैर्ऋताय ४। ॐ वरुणाय ५। ॐ वायवे ६। ॐ कुबेराय ७। ॐ ईशानाय ८। ॐ ब्रह्मणे ९। ॐ नागाय १०। आ पदो बोली दशे दिक्पालनुं आह्वान करवुं.

उपर प्रमाणेनो मंत्र कहीने प्रत्येके प्रत्येके शांतिबलि नाखवी. पछी मूळनायकनी प्रतिमानुं न्हवण करी बृहत्स्नात्रविधिवडे स्नात्र करी पूजन करे अने पछी संघ सहित गुरु चैत्यवंदन करे. पछी नमोत्थुणं० कही अरिहंत चेइयाणं० अन्नत्थ० कही एक नवकारनो काउस्सग्ग करी-पारी नमोऽर्हत्० कही नीचेनी स्तुति कहे:—

अर्हंस्तनोतु स श्रेयः-श्रियं यद्ध्यानतो नरैः। अप्यैन्द्रि सकला त्रै हि रंहसा सह सौच्यते ॥१॥

पछी लोगस्स० कही सव्वलोए० कही अन्नत्थ० कही एक नवकारनो काउस्सग्ग करी-पारी नीचेनी स्तुति बोलवी:—

ॐमिति मन्ता यच्छा-सनस्य नन्ता सदा यदंहीँश्च। आश्रीयते श्रिया ते भवतो भवतो जिनाः पान्तु ॥२॥

पछी पुक्खरवरदि० कही सुअस्स भगवओ करेमि काउस्सग्गं वंदणवत्तियाए० अन्नत्थ० कही एक नवकारनो काउस्सग्ग करी-पारी नमोऽर्हत्० कही नीचेनी स्तुति बोलवी:—

नवतत्त्वयुता त्रिपदी, श्रिता रुचिज्ञानपुण्यशक्तिमता। वरधर्मकीर्तिविद्या-नन्दा स्याज्जैनगीर्जीयात् ॥३॥

निर्ऋताय पाठांतर।

पछी सिद्धाण बुद्धाणं० कही संति देवयाए करेमि काउस्सग्गं अन्नत्थ० कही एक नवकारनो काउस्सग्ग करी-पारी नमोऽर्हत्० कही नीचेनी स्तुति बोलवीः—

श्रीचतुर्विधसंघस्य, शासनोन्नतिकारिणी। शिवशान्तिकरी भूया-च्छ्रीमती शान्तिदेवता ॥४॥

पछी श्रुतदेवताऽऽराधनार्थं करेमि काउस्सग्गं अन्नत्थ० कही एक नवकारनो काउस्सग्ग करी-पारी नमोऽर्हत्० कही नीचेनी स्तुति बोलवीः—

वद वदति न वाग्वादिनि भगवति कः श्रुतसरस्वति गमेच्छुः। रंगत्तरंगमतिवरतरणिस्तुभ्यं नम इतीह ॥५॥

पछी क्षेत्रदेवताऽऽराधनार्थं करेमि काउस्सग्गं अन्नत्थ० कही एक नवकारनो काउस्सग्ग करी-पारी नमोऽर्हत्० कही नीचेनी स्तुति बोलवीः—

यस्याः क्षेत्रं समाश्रित्य, साधुभिः साध्यते क्रिया। सा क्षेत्रदेवता नित्यं, भूयान्नः सुखदायिनी ॥६॥

पछी भुवनदेवताऽऽराधनार्थं करेमि काउस्सग्गं अन्नत्थ० कही एक नवकारनो काउस्सग्ग करी-पारी नमोऽर्हत्० कही नीचेनी स्तुति बोलवीः—

ज्ञानादिगुणयुतानां, नित्यं स्वाध्यायसंयमरतानाम्। विदधातु भुवनदेवी, शिवं सदा सर्वसाधूनाम् ॥७॥

पछी सासनदेवयाए करेमि काउस्सग्गं अन्नत्थ० कही एक नवकारनो काउस्सग्ग करी-पारी नमोऽर्हत्० कही नीचेनी स्तुति बोलवी—

…य प्रवेश विधि ॥७२॥

दमणो १४, गळो १५, कुवी १६, सरपखो १७, राजहंसी १८, पीलवणी १९, शालवणी २०, गंधनोली २१, महानोली २२, अथवा समूलो डाभ १, पाननी जड २, दाडिम जड ३, आसंधनी जड ४, वाळो ५।

सहदेव्यादिसदौषधि–वर्गणोद्वर्तितस्य दंडस्य । तन्मिश्रं दण्डोपरि, पतज्जलं हरतु दुरितानि ॥१॥

सुपवित्रमूलिकावर्ग–मर्दिते तदुदकस्य शुभधारा । दण्डेऽधिवाससमये, यच्छतु सौख्यानि निपतन्ती ॥५॥

इति पंचमम् ।

(६) अष्टवर्ग स्नात्र–उपलोट १, लोदर २, देवदार, ३, वज खोरासाणी ४, धरो नीली ५, जेठीमध ६, मरडाशिंगी ७, वरणानुं मूळ ८, अथवा मेदादि अष्टवर्ग बीजो पण लेवो–मेद १, महामेद २, वेउकंद ३, कंकोल ४, खीरकंद ५, जीवक ६, ऋषभक ७, नखी ८, महानखी ९.

नाना कुष्टाद्यौषधि–संमिश्रं तद्युतं पतन्नीरम् । दण्डे कृतसन्मंत्रं, कर्मौघं हन्तु भव्यानाम् ॥१॥

मेदाद्यौषधिभेदोऽपरोऽष्टवर्गः सुमंत्रपरिपूतः । निपततु दण्डोपरि, सिद्धिं विदधातु भव्यजने ॥२॥ इति षष्टम्

(७) सर्वौषधि स्नात्र—हळदर १, खोरासाणी वज २, सुवा ३, वाळो ४, मोथ ५, प्रियङ्गु ६, छडिलो ७, वांसनी गांठ ८, सढकचुरो ९, उपलोट १०, सुखड ११, एलची १२, लविंग १३, तज १४, तमालपत्र १५, जावत्री १६, जायफळ १७, नागकेसर १८, इत्यादि.

सकलौषधिसंयुक्त्या, सुगन्धया घर्षितं सुगतिहेतोः ।
स्नपयामि चारुदण्डं, मंत्रिततन्नीरनिवहेन ॥ १ ॥ (७) इति सप्तमम् ।

(८) वास स्नात्र—

हृद्यैराह्लादकरैः, स्पृहणीयैर्मंत्रसंस्कृतैर्दण्डे ।
स्नपयामि सुगतिहेतो-र्दण्डमधिवासितं वासैः ॥१॥ (८) इति अष्टमम् ।

(९) गंध स्नात्र—शिलाजित १, उपलोट २, सुखड ३, वास ४, कर्पूर ५।

गन्धांगस्नानिकया, संमिश्रं तदुदकस्य धाराभिः ।
स्नपयामि चारुदण्डं, कर्मौघोच्छित्तये[1] शिवदम् ॥१॥ (९) इति नवमम् ।

(१०) चंदन स्नात्र—

शीतलसरससुगन्धि-र्मनोमतश्चन्दनद्रुमसमुत्थः ।
चन्दनकल्कः सजलो, मंत्रयुतः पततु ध्वजदण्डे ॥१॥ (१०) इति दशमम् ।

---

१ घच्छित्तये पाठांतर ।

(११) केसर स्नात्र—

काश्मीरजसुविलिप्तं, दण्डं तन्नीरधारयाऽभिनवम्।
सन्मंत्रयुक्तया शुचि-दण्डं स्नपयामि सिद्ध्यर्थम् ॥१॥ (११) इति एकादशम्।

(१२) तीर्थोदक स्नात्र—

जलधिनदीद्रहकुण्डेपु यानि तीर्थोदकानि शुद्धानि।
तैर्मंत्रसंस्कृतैरिह, दण्डं स्नपयामि सिद्ध्यर्थम् ॥१॥ (१२) इति द्वादशम्।

(१३) कर्पूर स्नात्र—

शशिकरतुपारधवला, उज्ज्वलगन्धा सुतीर्थजलमिश्रा।
कर्पूरोदकधारा, सुमंत्रपूता पततु दण्डे ॥१॥ (१३) इति त्रयोदशम्।

पछी दंडने चंदन, पुष्प अने धूपथी पूजा करवी. ऋद्धि, वृद्धि, सरसव, मींढळ बांधवां. ध्वजाने स्वस्तिक करवा. पछी नंद्यावर्त पूजवो. पछी लग्न समये सदश गुलाबी कपडे–वस्त्रे आच्छादन करवो. वास धूपादिके करी अधिवासवो. पछी चक्रमुद्राए करी दंडने सर्वतः स्पर्श करवो. सुरभि प्रभृति मुद्राओ देखाडवी; एटले के–सुरभि मुद्रा १, परमेष्ठि मुद्रा २, गरुड मुद्रा ३, अंजलि मुद्रा ४ अने गणधर मुद्रा ५, ए पांच मुद्राओ देखाडवी.

पछी चार स्त्रीओ मळी पूखणां करे. पछी वास धूपादिके करी ध्वजाने अधिवास करवो, तेनो मंत्रः—ॐ ह्रीँ ठः आ मंत्रथी ७-२१-१०८ वार ध्वजा अने दंड ए बे वानां अभिमंत्रवां. जवारा, बलि, फलोहली थापवी. पछी नीचेनुं काव्य बोलीने आरती उतारवीः—

दुष्टसुरासुररचितं, नरैः कृतदृष्टिदोषजं विघ्नम्। तद्गच्छत्वतिदूरं, भविककृतारात्रिकविधाने ॥१॥

आ प्रमाणे कहीने आरती उतारवी. पछी जे बिंब मूळनायकजीनुं होय तेनुं चैत्यवंदन करवुं. पछी चार थोइना देववांदवानी विधि प्रमाणे पुक्खरवरदीवड्ढे सुधीना सूत्रो विधि प्रमाणे बोली मूळनायक वगेरेनी त्रण थोइ बोलवी. पछी सिद्धाणं बुद्धाणं कही अधिवासनादेवीए करेमि काउस्सग्गं अन्नत्थ० कही एक लोगस्सनो काउस्सग्ग करी-पारी नमोऽर्हत्० कही नीचेनी स्तुति बोलवीः—

पातालमन्तरिक्षं, भुवनं वा या समाश्रिता नित्यम्। साऽत्रावतरतु जैने, दण्डेऽधिवासना देवी ॥१॥

पछी श्रीशांतिनाथआराधनार्थं करेमि काउस्सग्गं वंदणवत्तिआए० अन्नत्थ० कही एक नवकारनो काउस्सग्ग करी-पारी नमोऽर्हत्० कही नीचे प्रमाणे स्तुति बोलवीः—

श्रीशान्तिः श्रुतशान्तिप्रशान्तिकोऽसावशान्तिमुपशान्तिम्।
नयतु सदा यस्य पदाः सुशान्तिदाः सन्तु सन्तिजने ॥१॥

पछी श्रुतदेवीआराधनार्थं करेमि काउस्सग्गं अन्नत्थ० कही एक नवकारनो काउस्सग्ग करी-पारी नमोऽर्हत्० कही

नीचेनी स्तुति बोलवीः—

वद वदति न वाग्वादिनी, भगवति कः श्रुतसरस्वति गमेच्छुः। रंगत्तरंगमतिवरतरणिस्तुभ्यं नम इतीह ॥१॥

पछी शांतिदेवीआराधनार्थं करेमि काउस्सग्गं अन्नत्थ० कही एक नवकारनो काउस्सग्ग करी-पारी नमोऽर्हत्० कही नीचेनी स्तुति बोलवीः—

श्रीचतुर्विधसंघस्य, शासनोन्नतिकारिणी। शिवशान्तिकरी भूयाच्छ्रीमती शांतिदेवता ॥१॥

पछी सासनदेवयाए करेमि काउस्सग्गं अन्नत्थ० कही एक नवकारनो काउस्सग्ग करी-पारी नमोऽर्हत्० कही नीचेनी स्तुति बोलवीः—

या पाति शासनं जैनं, सद्यः प्रत्यूहनाशिनी। साऽभिप्रेतसमृद्ध्यर्थं, भूयाच्छासनदेवता ॥१॥

पछी अंबिकादेवीआराधनार्थं करेमि काउस्सग्गं अन्नत्थ० कही एक नवकारनो काउस्सग्ग करी-पारी नमोऽर्हत्० कही नीचेनी स्तुति बोलवीः—

अंबा बालांकितांकाऽसौ सौख्यं ख्यातिं दधातु नः। माणिक्यरत्नालंकार-चित्रसिंहासनस्थिता ॥१॥

पछी क्षेत्रदेवयाए करेमि काउस्सग्गं अन्नत्थ० कही एक नवकारनो काउस्सग्ग करी-पारी नमोऽर्हत्० कही नीचेनी स्तुति बोलवीः—

यस्याः क्षेत्रं समाश्रित्य, साधुभिः साध्यते क्रिया। सा क्षेत्रदेवता नित्यं, भूयान्नः सुखदायिनी ॥१॥

पछी समस्तवेयावच्चगराणं करेमि काउस्सग्गं अन्नत्थ० कही एक नवकारनो काउस्सग्ग करी-पारी नमोऽर्हत्० कही नीचेनी स्तुति बोलवीः—

संघेऽत्र ये गुरुगुणौघनिधे सुवैया-वृत्त्यादिकृत्यकरणैकनिबद्धकक्षाः।
ते शान्तये सह भवन्तु सुराः सुरीभिः, सद्दृष्टयो निखिलविघ्नविघातदक्षाः ॥१॥

आ प्रमाणे आठ काउस्सग्ग करी रह्या पछी हेठा बेसी २७ नवकार कहेवा. पछी चैत्यवंदन नमुत्थुणं वगेरे कही स्तवनना स्थाने लघुशांति तथा बृहत्शांति कहेवी. पछी जयवीअराय कहेवा।

पछी सात धान्यनी बलि फलोहली वासपुष्प धूपे अधिवासवो. पछी ध्वजादंडे वस्त्र आरोपवुं। पछी ते ध्वज ऊर्ध्व करी भव्य पुरुष हाथे करी (हाथमां लई) गाजता वाजता, चैत्यने त्रण प्रदक्षिणा करे. पछी शिखर उपर पुष्पांजलि चडाववी, तेनुं काव्य—

कुलधर्मजातिलक्ष्मी-जिनगुरुभक्तिं परोन्नतिं देवि। प्रासादे पुष्पांजलिं, रचयास्मत्कररत्नतो भूयात् ॥१॥

पछी शिखरे कळश स्थापवो. ध्वजस्थाने पंच रत्न मूकवां. लग्नना स्थिर अंशे ध्वज स्थापवो. सूरिमंत्रवडे मंत्रीने वास नांखवो. फलोहली सात धान्य बलि मोदकादिक घणी वस्तु नांखवी. बिंबना जमणे हाथे जेटला उन्नत मूळनायक होय तेना चोथे भागे उपरांत ऋजुगति ध्वज बांधवो. गीत नाद महोत्सव महोन्नति करीए. पछी याचकने दान देवुं. आचार्य-गुरु प्रवचन मुद्राए देशना आपे. पछी संघभक्ति, साधर्मिक वात्सल्य, प्रभावना, पहेरामणी करवी. गुरुपूजा करवी. ध्वजाना करनारने राजी करवो।

पछी त्रण दिवस तथा सात दिवस मूळनायक पासे बलि ढोकवी. भूतबलि नांखवी. पछी सातमे दिवसे बलि नांखवी. चैत्यवंदन करी शांतिनाथादिना सात काउस्सग्ग करी पछी ध्वज छोडवो. ते वखते यथाशक्ति संघनी तथा क्रिया करावनार श्रावकनी–गुरुनी भक्ति–पूजा पहेरामणी करवी. सर्वनी रुडी आशिष लेवी. इति मंगलम् ।

यावद्दण्डप्रमाणेन, पताकां च प्रलम्बयेत् । पृथुत्वमष्टमांशेन, त्रिपंचाग्रशिखायुताम् ॥१॥
ग्रैवेयकशिखर–प्रमाणमानो ध्वजस्य चेद्दण्डः । दण्डतृतीयांशोनो, भवति तथा ध्वजपटोऽर्धपृथुः ॥२॥
शुभ्रो वा रक्तो वा, विचित्रवर्णोऽथवा सघंटाभृत् । ध्वजदण्डः स्वर्णमयो, वंशमयो वाऽन्यमयः प्रोक्तः॥३॥

॥ इति ध्वजारोपण विधि ॥

## १३ अथ कलशप्रतिष्ठा विधि

नत्वा वामेयं सर्वज्ञं, श्रीभावप्रभसूरिभिः । विधिः कुम्भप्रतिष्ठाया, अलेख्याचारसूर्यतः ॥१॥

प्रथम दिनशुद्धि तथा लग्नशुद्धि जोवी. कळश चडावनार धणीने चंद्रमा पहोंचतो जोइए.

प्रथम कळश स्थापवानी भूमि शुद्ध करवी, तेनो मंत्रः—ॐ ह्रीँ अर्हं भूर्भुवः स्वधाय स्वाहा ।

पछी केसर, सुखड, गंधोदक अने सुगंधित पुष्पो वडे अधिवासना देवी. अगर उखेववो. पछी ते स्थानके पंचरत्न, कुंभारना चाकनी माटी संयुक्त मूकीए. तेनी उपर कळश स्थापीए. सारा जळाशयथी पाणी अणावीए. पछी बृहत्स्नात्र विधिए चैत्यप्रतिमाने

पछी सर्व दिशाए दश दिक्पालने बलिदान दइए. ते आ प्रमाणे:-

स्नात्र करावीए. पछी नद्यावर्त पूजीए. पछी सर्व दिशाए दश दिक्पालने बलिदान दइए. ते आ प्रमाणे:- इन्द्र इह कलशप्रतिष्ठायां इमं बलिं गृहाण गृहाण सर्वेषां शान्ति पुष्टिं कुरु कुरु स्वाहा।

(१) इन्द्राय नमः ॐ इन्द्र इह कलशप्रतिष्ठायां इमं बलिं गृहाण गृहाण सर्वेषां शान्ति पुष्टिं कुरु कुरु स्वाहा।

एम कही प्रथम पाणीनो चलुओ नांखीए १, सुगंधीना छांटा नाखीए २, पुष्प उछाळीए ३, पछी सात धान्यनो रांधेलो सीचडो, तथा बाकळा ए ज मंत्र भणी उछाळीए [दरेक दिक्पालने दान देतां प्रथम मंत्र भणीने आ प्रमाणे करवुं.]

(२) अग्नये नमः ॐ अग्ने इह कलशप्रतिष्ठायां इमं बलिं गृहाण गृहाण सर्वेषां शान्ति पुष्टिं कुरु कुरु स्वाहा।

(३) यमाय नमः ॐ यम इह कलशप्रतिष्ठायां इमं बलिं गृहाण गृहाण सर्वेषां शांतिं पुष्टिं कुरु कुरु स्वाहा।

(४) नैर्ऋताय नमः ॐ नैर्ऋत इह कलशप्रतिष्ठायां इमं बलिं गृहाण गृहाण सर्वेषां शांतिं पुष्टिं कुरु कुरु स्वाहा।

(५) वरुणाय नमः ॐ वरुण इह कलशप्रतिष्ठायां इमं बलिं गृहाण गृहाण सर्वेषां शांतिं पुष्टिं कुरु कुरु स्वाहा।

(६) वायवाय नमः ॐ वायव इह कलशप्रतिष्ठायां इमं बलिं गृहाण गृहाण सर्वेषां शांति पुष्टिं कुरु कुरु स्वाहा।

(७) कुबेराय नमः ॐ कुबेर इह कलशप्रतिष्ठायां इमं बलिं गृहाण गृहाण सर्वेषां शांतिं पुष्टिं कुरु कुरु स्वाहा।

(८) ईशानाय नमः ॐ ईशान इह कलशप्रतिष्ठायां इमं बलिं गृहाण गृहाण सर्वेषां शांतिं पुष्टिं कुरु कुरु स्वाहा।

(९) ब्रह्मणे नमः ॐ ब्रह्मन् इह कलशप्रतिष्ठायां इमं बलिं गृहाण गृहाण सर्वेषां शांतिं पुष्टिं कुरु कुरु स्वाहा।

(१०) नागाय नमः ॐ नाग इह कलशप्रतिष्ठायां इमं बलिं गृहाण गृहाण सर्वेषां शांतिं पुष्टिं कुरु कुरु स्वाहा।

पछी गुरु ॐ नमो अरिहंताणं, ॐ नमो सिद्धाणं, ॐ नमो आयरियाणं, ॐ नमो उवज्झायाणं, ॐ नमो लोए सव्वसाहूणं, ॐ नमो आगासगामिणं हः क्षः नमः अशुचिः शुचिर्भवामि स्वाहा।

आ प्रमाणे शुचिविद्यामंत्रथी वासित वास स्नात्रकारोने अंगे नाखे. पछी देव आगळ चैत्यवंदन करे. पछी नमुत्थुणं० अरिहंतचेइयाणं० अन्नत्थ० कही एक नवकारनो काउस्सग्ग करी–पारी नमोऽर्हत्० कही नीचेनी स्तुति बोलवी:—

अर्हस्तनोतु स श्रेयः–श्रियं यद्ध्यानतो नरैः। अप्यैन्द्री सकला त्रै हि, रंहसा सह सौच्यते ॥१॥

पछी लोगस्स० सव्वलोए अरिहंतचेइयाणं० अन्नत्थ० कही एक नवकारनो काउस्सग्ग करी–पारी नमोऽर्हत्० कही नीचेनी स्तुती बोलवी:—

ओमिति मन्ता यच्छासनस्य नन्ता सदा यदङ्घ्रींश्च। आश्रियते श्रिया ते भवतो भवतो जिनाः पान्तु ॥२॥

पछी पुक्खरवरदि० वंदणवत्तिआए० अन्नत्थ० कही एक नवकारनो काउस्सग्ग करी–पारी नमोऽर्हत्० कही नीचेनी स्तुति बोलवी:—

नवतत्त्वयुता त्रिपदी, श्रिता रुचिज्ञानपुण्यशक्तिमता। वरधर्मकीर्तिविद्या–नन्दास्या जैनगीर्जीयात् ॥३॥

पछी सिद्धाणं बुद्धाणं० संतिदेवयाए करेमि काउस्सग्गं० अन्नत्थ० कही एक नवकारनो काउस्सग्ग करी–पारी नमोऽर्हत्० कही नीचेनी स्तुति बोलवी:—

श्रीचतुर्विधसंघस्य शासनोन्नतिकारिणी। शिवशान्तिकरी भूया-च्छ्रीमती शान्तिदेवता ॥४॥

पछी श्रुतदेवता आराधनार्थं करेमि काउस्सग्गं० अन्नत्थ० कही एक नवकारनो काउस्सग्ग करी–पारी नमोर्हत्० कही नीचेनी स्तुति बोलवीः—

यद् वदति न वाग्वादिनी, भगवति कः श्रुतसरस्वति गमेच्छुः। रंगत्तरंगमतिवर–तरणिस्तुभ्यं नम इतीह ॥५॥

पछी शासनदेवता आराधनार्थं करेमि काउस्सग्गं० अन्नत्थ० कही एक नवकारनो काउस्सग्ग करी–पारी नमोर्हत्० कही नीचेनी स्तुति बोलवीः—

उपसर्गवलयविलयन–निरता जिनशासनावनैकरताः। द्रुतमिह समीहितकृते, स्युः शासनदेवता भवताम् ॥६॥

पछी क्षेत्रदेवता आराधनार्थं करेमि काउस्सग्गं० अन्नत्थ० कही एक नवकारनो काउस्सग्ग करी–पारी नमोऽर्हत्० कही नीचेनी स्तुति बोलवीः—

यस्याः क्षेत्रं समाश्रित्य, साधुभिः साध्यते क्रिया। सा क्षेत्रदेवता नित्यं, भूयान्नः सुखदायिनी ॥७॥

पछी समस्तवेयावच्चगराणं संतिगराणं सम्मदिट्ठिसमाहिगराणं करेमि काउस्सग्गं० अन्नत्थ० कही एक नवकारनो काउस्सग्ग करी–पारी नमोऽर्हत्० कही नीचेनी स्तुति बोलवीः—

संघेऽत्र ये गुरुगुणौघनिधे सुवैयावृत्यादिकृत्यकरणैकनिबद्धकक्षाः।
ते शान्तये सह भवन्तु सुराः सुरीभिः, सद्दृष्टयो निखिलविघ्नविघातदक्षाः ॥८॥

ए सर्व स्तुति कही रह्या पछी पसलीमां पुष्प लई नीचेनुं काव्य बोलेः—

पूर्णं येन सुमेरुशृंगसदृशं चैत्यं सुदेदीप्यते, यः कीर्तिं यजमानधर्मकथनप्रस्फूर्जितां भाषते।
यः स्पर्धां कुरुते जगत्त्रयमहादीपेन दोपारिणा, सोऽयं मङ्गलरूपमुख्यगणनः कुम्भश्चिरं नन्दतात् ॥१॥

आ काव्य कही पुष्पनी अंजलिवडे वधावीए. त्यारपछी आचार्य तर्जनी मुद्रावडे रौद्र दृष्टि दइ डावे हाथे जळ ग्रहण करी कळशने आच्छोटन करे. पछी कळशने मुखडनुं तेल तथा पुष्पादिके पूजीए. पछी मुद्गर मुद्रा देखाडीए. पछी

ॐ ह्रीँ क्ष्विं सर्वोपद्रवं रक्ष रक्ष स्वाहा।

ए मंत्र वडे कळशने कंठे हाथवडे स्पर्श करवो. चक्षुरक्षा करीए. पछी कळश उपर सात धान्य प्रक्षेप करवां. पछी हेम सहित जळ भरेला चार कळशे नीचेनो श्लोक बोलीने स्नात्र करावीएः—

यत्पूतं भुवनत्रयसुरासुराधीशदुर्लभं वर्ण्यम्। हेम्ना तेन विमिश्रं, कलशे स्नात्रं भवत्वधुना ॥१॥

पछी कुंभ स्नात्र निमित्ते सधवा–सौभाग्यवाळी स्त्रीनी पासे जे आठ औषधी वटावी होय ते वडे स्नात्र करवुं. ते आठ औषधिनां नामः—सर्वौषधि १, मूलिका २, गंधोदक ३, वासोदक ४, चंदनोदक ५, कुंकुमोदक ६, कर्पूरोदक ७, कुसुमोदक ८.

(१) प्रथम सर्वौषधि स्नात्र–नमोऽर्हत्० कहीनेः—

सर्वौषधिसंयुत्या, सुगंधया घर्षितं सुगतिहेतोः।
स्नपयामि चारुकुंभं, मन्त्रिततन्नीरनिवहेन ॥२॥ ॐ ह्रीँ जिनाय नमः।

(२) मृत्तिका स्नात्र-नमोऽर्हत्० कहीनेः—

सुपवित्रमूलिकावर्ग-मर्दिते तदुदकस्य शुभधारा।
कुंभेऽधिवाससमये, यच्छतु सौख्यानि निपतन्ती ॥३॥ ॐ ह्रीँ जिनाय नमः।

(३) गंधोदक स्नात्र-नमोऽर्हत्० कहीनेः—

गन्धांगस्नानिकया, सन्मृष्टं तदुदकस्य धाराभिः।
स्नपयामि वरं कुंभं, कर्मौघोच्छित्तये शिवदम् ॥४॥ ॐ ह्रीँ जिनाय नमः।

(४) वासचूर्ण स्नात्र-नमोऽर्हत्० कहीनेः—

हृद्यैराह्लादकरैः, स्पृहणीयैर्मंत्रसंस्कृतैः कुंभम्।
स्नपयामि सुगतिहेतो-र्वासैरधिवासितं चारु ॥५॥ ॐ ह्रीँ जिनाय नमः।

(५) चंदन स्नात्रः-नमोऽर्हत्० कहीनेः—

शीतलसरससुगंधि-र्मनोमतश्चन्दनद्रुमसमुत्थः।
चन्दनकल्कः सजलो, मंत्रयुतः पततु वरकुंभे ॥६॥ ॐ ह्रीँ जिनाय नमः।

(६) केसर स्नात्रः-नमोऽर्हत्० कहीनेः—

काश्मीरजसुविलिप्तं, कुंभं तन्नीरधारयाऽभिनवम् ।
सन्मंत्रयुक्तया शुचि, जैनं स्नपयामि सिद्ध्यर्थम् ॥७॥ ॐ ह्रीँ जिनाय नमः ।

(७) कर्पूर स्नात्रः-नमोऽर्हत्० कहीनेः—

शशिकरतुषारधवला, उज्ज्वलगन्धा सुतीर्थजलमिश्रा ।
कर्पूरोदकधारा, सुमंत्रपूता पततु कुंभे ॥८॥ ॐ ह्रीँ जिनाय नमः ।

(८) पुष्प स्नात्रः-नमोऽर्हत्० कहीनेः—

नानासुगंधिपुष्पौ-घरंजिता चंचरीककृतनादा ।
धूपामोदविमिश्रा, पततात् पुष्पांजलिः कुंभे ॥९॥ ॐ ह्रीँ जिनाय नमः । इति

पछी पंचरत्न सरसव सहित रक्षापोटली कळशने बांधीए. पछी ॐ अर्हत्परमेश्वरा इहागच्छन्तु इहागच्छन्तु । ए मंत्रे मंत्रीने डावे हाथे कळश लइने जमणे हाथे चंदनवडे कळशने सर्वांगे विलेपन करीए. फूल सहित मींढोळ मरडाशींगी कळशे बांधीए. धूप दइ कंकण बांधीए. पछी सधवा स्त्रीओ लूंछणां करे. पछी धेनुमुद्रा १, परमेष्ठिमुद्रा २, गरुडमुद्रा ३, अंजलिमुद्रा ४, गणधरमुद्रा ५ देखाडीए. सूरिमंत्रे त्रणवार अथवा सातवार सोपारी, श्रीफळ मूकीए. अधिवासना दइ ॐ स्थावरे तिष्ठ तिष्ठ स्वाहा । एम कही कळशने कुसुंभ वस्त्रवडे आच्छादन करीए. जंबीर प्रमुख फळ अथवा सात सोपारी श्रीफळ मूकीए. कोरां सात धान्य पुष्प पत्र उपर मूकीए. पछी आरती उतारवी, ते आ प्रमाणेः—

दुष्टसुरासुररचितं, नरैः कृतं दृष्टिदोषजं विघ्नम् । तद्गच्छत्वतिदूरं, भविककृताऽऽरात्रिकविधाने ॥१॥

ए मंत्र बोली आरती उतारवी. पछी चैत्यवंदन करवुं. चैत्यवंदन करी अनुक्रमे त्रण स्तुति कही पछी सिद्धाणं बुद्धाणं० कही अधिवासनादेवी आराधनार्थं करेमि काउस्सग्गं अन्नत्थ० कही एक लोगस्सनो काउस्सग्ग करी-पारी नमोऽर्हत्० कही नीचेनी स्तुति कहेवीः—

पातालमन्तरिक्षं, भुवनं वा या समाश्रिता नित्यम् । साऽत्रावतरतु कुंभे, रुचिरे ह्यधिवासना देवी ॥४॥

पछी शांतिदेवी आराधनार्थं करेमि काउस्सग्गं० अन्नत्थ० कही एक नवकारनो काउस्सग्गकरी-पारी नमोऽर्हत्० कही नीचेनी स्तुति बोलवीः—

श्रीचतुर्विधसंघस्य, शासनोन्नतिकारिणी । शिवशांतिकरी भूया-च्छ्रीमती शांतिदेवता ॥५॥

पछी अम्बादेवी आराधनार्थं करेमि काउस्सग्गं अन्नत्थ० कही एक नवकारनो काउस्सग्ग करी-पारी नमोऽर्हत्०कही नीचेनी स्तुति कहेवीः

अम्बा बालांकितांकाऽसौ, सौख्यं ख्यातिं दधातु नः । माणिक्यरत्नालंकारा, चित्रसिंहासनस्थिता ॥६॥

पछी समस्तवेयावच्चगराणं संतिगराणं सम्मदिट्ठिसमाहिगराणं करेमि काउस्सग्गं० अन्नत्थ० कही एक नवकारनो काउस्सग्ग करी-पारी नमोऽर्हत्० कही नीचेनी स्तुति बोलवीः—

संघेऽत्र ये गुरुगुणौघनिधे सुवैय्या–वृत्यादिकृत्यकरणैकनिबद्धकक्षाः ।
ते शान्तये सह भवन्तु सुराः सुरीभिः, सदृदृष्टयो निखिलविघ्नविघातदक्षाः ॥७॥

पछी नमोत्थुणं०, स्तवन, जयवीयराय० कहीए. पछी रांधेला बलि उछाळीए. पछी चैत्यवंदन करीए. पछी मोटी शांति कहीए. पछी प्रतिष्ठादेवताऽऽराधनार्थं करेमि काउस्सग्गं अन्नत्थ० कही एक लोगस्सनो काउस्सग्ग करी–पारी नमोऽर्हत्० कही नीचेनी स्तुति कहीए:—

यदधिष्ठिता प्रतिष्ठा, सर्वा सर्वास्पदेषु नन्दन्ती । श्रीजिनकुंभं सा विशतु देवता सुप्रतिष्ठमिमम् ॥१॥

पछी सूरिमंत्रवडे वासित करेला अक्षत वडे कळशने वधावे.

पछी श्रावक पुष्प लइ वधावे. पछी कळश उपरथी वस्त्र दूर करे. पछी महोत्सव करे. पछी सूरि धर्मदेशना आपे. पछी गाजते वाजते कळश प्रासादे चडावे. आ प्रसंगे वस्त्र कंकणादिनुं दान देवुं. आठ दिवस पूजा महोत्सव करवो. साधु–मुनिराजने वस्त्र पात्रनुं दान देवुं. श्री संघनी पूजा करवी. याचकने दान देवुं.

[अहीं विशेष समजण आ प्रमाणे छे:—

प्रासाद पूरो थये पाषाणमय कळश ते वखते आरोपे तो प्रासाद–प्रतिष्ठानी साथे ज कळश–प्रतिष्ठा जाणवी । काळांतरे कळश-चडावे तो आ प्रतिष्ठा करवी. इति ।

जो माटीनो कळश विवाह मंडपादिके आरोपीए तो परमेष्ठी मंत्रे मंत्री वासक्षेपे प्रतिष्ठा जाणवी। कळशनी प्रतिष्ठाने दिवसे लग्न होय तो गृहस्थी घेर प्रथम पूजे. पुष्प प्रमुखे अलंकृत करी थाळमां लइ सधवा स्त्री, गीत वाजित्र वागते अधिवासना भूमिए आणीने मूके. जवारीयां चार जुदां वावे. ]

"श्रीआचार दिनकर" थकी श्रीमावप्रभसूरिउद्धृत

॥ इति कलशप्रतिष्ठाविधि ॥

## १४ अथ देवीप्रतिष्ठा विधि ।

देवी त्रण प्रकारनी होय छे–१ प्रासाददेवी, २ संप्रदायदेवी अने ३ कुलदेवी. तेमां प्रासाददेवी पीठ अने उपपीठने विषे, क्षेत्र अने उपक्षेत्रने विषे, गुफामां रहेली, भूमि उपर रहेली, प्रासादमां रहेली लिंगरूप, स्वयंभूत रूप अथवा मनुष्ये बनावेला रूपवाळी होय छे. संप्रदायदेवी अम्बा, सरस्वती, त्रिपुरा अने तारा प्रमुख गुरुए उपदेशेला मन्त्रोपासनानी होय छे. कुलदेवी चंडी, चामुंडा, कंटेश्वरी, सत्यका, सुशयना अने व्याघ्रराजी वगेरे जाणवी. ए बधानी प्रतिष्ठा सरखी ज होय छे. तेमां प्रतिष्ठा करावनारनी ग्रहशान्ति अने पौष्टिक कर्म करवुं. त्यारबाद प्रासाद अथवा घरमां बृहत् स्नात्रविधि वडे स्नात्र करवुं. देवीना प्रासादने विषे ग्रहप्रतिमाने लइ जइ स्नात्र करवुं. त्यारपछी पूर्वे कहेल रीति वडे भूमि शुद्ध करीने तेमां पंच रत्न मूकीने तेना उपर कदम्बनां काष्ठनुं आसन मूकी तेना उपर देवीनी प्रतिमानुं स्थापन करे. स्थिर प्रासादनी देवी–प्रतिमाने, कुलपीठना उपर पंचरत्न मुकवा पूर्वक, स्थापन

करे. त्यारबाद दरेक कुडव प्रमाण मेळवेला सर्व प्रकारना धान्य वडे देवीनी प्रतिमाने नीचेनो मन्त्र बोली संवर्धन करे, मन्त्र-"ॐ श्रीं सर्वान्नपूर्णे सर्वान्ने स्वाहा" । त्यारबाद पूर्व कहेला लक्षणवाळा चार स्नात्र करनारा तैयार करे. आचार्य पोते तथा स्नात्र करनारा वींटी, कंकण अने दशा सहित वस्त्र धारण करे. त्यारबाद पोताना अने ते स्नात्र करनाराना त्र्यंग रक्षानो न्यास आ प्रमाणे करेः– ॐ ह्रीँ नमो ब्रह्माणि हृदये । ॐ ह्रीँ नमो वैष्णवि भुजयोः । ॐ ह्रीँ नमः सरस्वति कण्ठे । ॐ ह्रीँ नमः परमभूषणे मुखे । ॐ ह्रीँ नमः सुगन्धे नासिकयोः । ॐ ह्रीँ नमः श्रवणे कर्णयोः । ॐ ह्रीँ नमः सुदर्शने नेत्रयोः । ॐ ह्रीँ नमो भ्रामरि भ्रुवोः । ॐ ह्रीँ नमो महालक्ष्मि भाले । ॐ ह्रीँ नमः प्रियकारिणि शिरसि । ॐ ह्रीँ नमो भुवनस्वामिनि शिखायाम् । ॐ ह्रीँ नमो विश्वरूपे उदरे । ॐ ह्रीँ नमः पद्मवासे नाभौ । ॐ ह्रीँ नमः कामेश्वरि गुह्ये । ॐ ह्रीँ नमो विश्वोत्तमे ऊर्वोः । ॐ ह्रीँ नमः स्तम्भिनि जान्वोः । ॐ ह्रीँ नमः सुगमने जङ्घयोः । ॐ ह्रीँ नमः परमपूज्ये पादयोः । ॐ ह्रीँ नमः सर्वगामिनि कवचम् । ॐ ह्रीँ नमः परमरौद्रि आयुधम् । ए प्रमाणे गुरु पोतानी अने स्नात्र करनाराओनी अंगरक्षा करे. त्यारबाद पंच[1] गव्य वडे नीचेनो श्लोक बोली देवीनुं स्नात्र करेः–

विश्वस्यापि पवित्रतां भगवती प्रौढानुभावैर्निजैः, संधत्ते कुशलानुबन्धकलिता मर्त्यामरोपासिता ।
तस्याः स्नात्रमिहाधिवासनविधौ सत्पञ्चगव्यैः कृतं, नो दोषाय महाजनागमकृतः पन्थाः प्रमाणं परम् ।

त्यारबाद पुष्पांजलि ग्रहण करीने–

---

१ दूध, दहीं, घी, छाण, मूत्र.

मर्यादापरिपूरिणि निजप्रभावैर्यशोभिरपि देवि ।। आराधनकर्तॄणां कर्तय सर्वाणि दुःखानि ॥१॥

आ श्लोक बोली पुष्पांजलि नांखे. फरीथी पुष्पांजलि ग्रहण करीने–

यस्याः प्रौढप्रभावविभवैर्वाचंयमाः संयमं, निर्दोषं परिपालयन्ति कलयन्त्यन्यत्कलाकौशलम् ।
तस्यै नम्रसुरासुरेश्वरशिरःकोटीरतेजश्छटाकोटिस्पृष्टशुभाङ्घ्रये त्रिजगतां मात्रे नमः सर्वदा ॥

आ श्लोक बोली पुष्पांजलिनो प्रक्षेप करे. फरी पुष्पांजलि ग्रहण करीने–

न व्याधयो न विपदो न महान्तराया, नैवायशांसि न वियोगविचेष्टितानि ।
यस्याः प्रसादवशतो बहुभक्तिभाजामाविर्भवन्ति हि कदाचन साऽस्तु लक्ष्म्यै ॥

आ श्लोक बोली पुष्पांजलि नांखे. फरीथी पुष्पांजलि लइने–

दैत्यच्छेदोद्यतायां परमपरमतक्रोधबोधप्रबोधक्रीडानिर्व्रीडपीडाकरणमशरणं वेगतो धारयन्त्या ।
लीलाकर्पूरक्रीलाजनितनिजनिजक्षुत्पिपासाविनाशः, क्रव्यादामास यस्यां विजयमविरतं सेश्वरा वस्तनो तु ॥

आ श्लोक बोली पुष्पांजलि नांखवी. फरी पुष्पांजलि ग्रहण करीने–

छलाय दनुजक्षयं क्षितितले विधातुं सुखं, चकार रभसेन या सुरगणैरति प्रार्थिता ।
तनोतु शुभमुत्तमं भगवती प्रसादेन सा ॥ [आ श्लोक अधुरो छे.]

आ श्लोक बोली पुष्पांजलि चढाववी. फरीथी पुष्पांजलि लइने–

सा करोतु सुखं माता बलिजित्तापवारिणी। प्राप्यते यत्प्रसादेन, बलिजित्तापवारिणी ॥

आ श्लोक बोली पुष्पांजलि नांखवी. फरीथी पुष्पांजलि लइने–

जयन्ति देव्याः प्रभुतामतानि,निरस्तनिःसंचरतामतानि। निराकृताः शत्रुगणाः सदैव, संप्राप्य यां मंक्षु जये सदैव ॥

आ श्लोक बोली पुष्पांजलि चढाववी. फरी पुष्पांजलि ग्रहण करी–

सा जयति यमनिरोधनकर्त्री संपत्करी सुभक्तानाम्। सिद्धिर्यत्सेवायामत्यागेऽपि हि सुभक्तानाम् ॥

आ श्लोक बोली पुष्पांजलि चढाववी. एम आठ पुष्पांजलि चढाववी. त्यारपछी देवीनी पासे भगवतीनुं मंडल स्थापन करवुं. तेनो विधि आ प्रमाणे छेः–

तेमां प्रथम छ खुणावाळुं चक्र लखवुं. तेनी मध्यमां हजार हाथवाळी, अनेक प्रकारना शस्त्रने धारण करनारी, श्वेतवस्त्रवाळी अने सिंहवाहनवाळी भगवती देवीने लखे–संस्थापन करे अथवा कल्पे. त्यारबाद छ खुणामां प्रारंभथी प्रदक्षिणाना क्रमथी आ प्रमाणे लखवुं–ॐ ह्रीँ जम्भे नमः १, ॐ ह्रीँ जम्भिन्यै नमः २, ॐ ह्रीँ स्तम्भे नमः ३, ॐ ह्रीँ स्तम्भिन्यै नमः ४, ॐ ह्रीँ मोहे नमः ५, ॐ ह्रा मोहिन्यै नमः ६ ॥ त्यारबाद तेनी बहारना वलयमां आठ दलवाळुं चक्र करवुं अने तेमां प्रदक्षिणाना क्रम वडे आ प्रमाणे लखवुं–ह्रीँ श्रीँ ब्रह्माण्यै नमः १, ह्रीँ श्रीँ माहेश्वर्यै नमः २, ह्रीँ श्रीँ कौमार्यै नमः ३, ह्रीँ श्रीँ वैष्णव्यै नमः ४, ह्रीँ श्रीँ वाराह्यै नमः ५, ह्रीँ श्रीं इन्द्राण्यै नमः ६, ह्रा श्रीं चामुण्डायै नमः ७, ह्रीँ श्रीं कालिकायै नमः ॥८॥

त्यारबाद तेनी बहारना भागमां त्रीजुं वलय करी सोळ दळवाळुं चक्र करीने प्रदक्षिणाना क्रमथी आ प्रमाणे लखवुं-ह्रीं श्रीं रोहिण्यै नमः १, ह्रीं श्रीं प्रज्ञप्त्यै नमः २, ह्रीं श्रीं वज्रशृङ्खलायै नमः ३, ह्रीं श्रीं वज्राङ्कुश्यै नमः ४, ह्रीं श्रीं अप्रतिचक्रायै नमः ५, ह्रीं श्रीं पुरुषदत्तायै नमः ६, ह्रीं श्रीं काल्यै नमः ७, ह्रीं श्रीं महाकाल्यै नमः ८, ह्रीं श्रीं गौर्यै नमः ९, ह्रीं श्रीं गान्धार्यै नमः १०। ह्रीं श्रीं महाज्वालायै नमः ११। ह्रीं श्रीं मानव्यै नमः १२, ह्रीं श्रीं वैरोट्यायै नमः १३, ह्रीं श्रीं अच्छुप्तायै नमः। १४। ह्रीं श्रीं मानस्यै नमः १५, ह्रीं श्रीं महामानस्यै नमः १६। देवीओ स्थापवी:—

त्रीजी वलय करीने तेनी बहार चोसठ दळ करीने तेमां जमणी बाजुना अनुक्रमे आ प्रमाणे देवीओ स्थापवी:—

ॐ ब्रह्माण्यै नमः १। ॐ कौमार्यै नमः २। ॐ वाराह्यै नमः ३। ॐ शाङ्कर्यै नमः ४। ॐ इन्द्राण्यै नमः ५। ॐ कङ्काल्यै नमः ६। ॐ कराल्यै नमः ७। ॐ काल्यै नमः ८। ॐ महाकाल्यै नमः ९। ॐ चामुण्डायै नमः १०। ॐ ज्वालामुख्यै नमः ११। ॐ कामाख्यायै नमः १२। ॐ कापालिन्यै नमः १३। ॐ भद्रकाल्यै नमः १४। ॐ दुर्गायै नमः १५। ॐ अम्बिकायै नमः १६। ॐ ललितायै नमः १७। ॐ गौर्यै नमः १८। ॐ सुमङ्गलायै नमः १९। ॐ रोहिण्यै नमः २०। ॐ कपिलायै नमः २१। ॐ शूलकरायै नमः २२। ॐ कुण्डलिन्यै नमः २३। ॐ त्रिपुरायै नमः २४। ॐ कुरुकुल्लायै नमः २५। ॐ भैरव्यै नमः २६। ॐ भद्रायै नमः २७। ॐ चन्द्रावत्यै नमः २८। ॐ नारसिंह्यै नमः २९। ॐ निरञ्जनायै नमः ३०। ॐ हेमकान्त्यै नमः ३१। ॐ प्रेतासन्यै नमः ३२। ॐ ईश्वर्यै नमः ३३। ॐ माहेश्वर्यै नमः ३४। ॐ वैष्णव्यै नमः ३५। ॐ वैनायक्यै नमः ३६। ॐ यमघण्टायै नमः

३७। ॐ हरसिद्ध्यै नमः ३८। ॐ सरस्वत्यै नमः ३९। ॐ तोतलायै नमः ४०। ॐ चण्डयै नमः ४१। ॐ शङ्खिन्यै नमः ४२। ॐ पद्मिन्यै नमः ४३। ॐ चित्रिण्यै नमः ४४। ॐ शाकिन्यै नमः ४५। ॐ नारायण्यै नमः ४६। ॐ पलादिन्यै नमः ४७। ॐ यमभगिन्यै नमः ४८। ॐ सूर्यपुत्र्यै नमः ४९। ॐ शीलतायै नमः ५०। ॐ कृष्णपाशायै नमः ५१। ॐ रक्ताक्ष्यै नमः ५२। ॐ कालरात्र्यै नमः ५३। ॐ आकाश्यै नमः ५४। ॐ सृष्टिन्यै नमः ५५। ॐ जयायै नमः ५६। ॐ विजयायै नमः ५७। ॐ धूम्रवर्ण्यै नमः ५८। ॐ वेगेश्वर्यै नमः ५९। ॐ कात्यायन्यै नमः ६०। ॐ अग्निहोत्र्यै नमः ६१। ॐ चक्रेश्वर्यै नमः ६२। ॐ महाम्बिकायै नमः ६३। ॐ ईश्वरायै नमः ६४॥

फरीथी तेनी फरतुं वलय करीने बावन दळ करीने तेमां अनुक्रमे जमणी बाजुथी आरंभीने आ प्रमाणे देवो स्थापवा—

ॐ क्रों क्षेत्रपालाय नमः १। ॐ क्रों कपिलाय नमः २। ॐ क्रों बटुकाय नमः ३। ॐ क्रों नारसिंहाय नमः ४। ॐ क्रों गोपालाय नमः ५। ॐ क्रों भैरवाय नमः ६। ॐ क्रों गरुडाय नमः ७। ॐ क्रों रक्तसुवर्णाय नमः। ॐ क्रों देवसेनाय नमः ९। ॐ क्रों रुद्राय नमः १०। ॐ क्रों वरुणाय नमः ११। ॐ क्रों भद्राय नमः १२। ॐ क्रों वज्राय नमः १३। ॐ क्रों वज्रजङ्घाय नमः १४। ॐ क्रों स्कन्दाय नमः १५। ॐ क्रों कुरवे नमः १६। ॐ क्रों प्रियंकराय नमः १७। ॐ क्रों प्रियमित्राय नमः १८। ॐ क्रों वह्नये नमः १९। ॐ क्रों कन्दर्पाय नमः २०। ॐ क्रों हंसाय नमः २१। ॐ क्रों एकजङ्घाय नमः २२। ॐ क्रों घण्टापथाय नमः २३। ॐ क्रों दण्टकाय नमः २४। ॐ क्रों कालाय नमः २५। ॐ क्रों महाकालाय नमः २६। ॐ क्रों मेघनादाय नमः २७। ॐ क्रों भीमाय नमः

नमः ३१। ॐ क्रौं विद्याधराय नमः ३१। ॐ क्रौं
२८। ॐ क्रौं महाभीमाय नमः २९। ॐ क्रौं तुङ्गभद्राय नमः ३०। ॐ क्रौं नागाय नमः ३४। ॐ क्रौं नागहस्ताय नमः ३५। वसुमित्राय नमः ३२। ॐ क्रौं विश्वसेनाय नमः ३३। ॐ क्रौं नकुलाय नमः ३८। ॐ क्रौं आह्लादाय नमः ॐ क्रौं प्रद्युम्नाय नमः ३६। ॐ क्रौं कम्पिल्लाय नमः ३७। ॐ क्रौं भूतभैरवाय नमः ४२। ॐ क्रौं महा-३९। ॐ क्रौं त्रिमुखाय नमः ४०। ॐ क्रौं पिशाचाय नमः ४१। ॐ क्रौं शुनकाय नमः ४५। ॐ क्रौं अस्थिमुखाय नमः ४६। पिशाचाय नमः ४३। ॐ क्रौं कालमुखाय नमः ४४। ॐ क्रौं क(के)लिकलाय नमः ४९। ॐ क्रौं भृङ्गाय ॐ क्रौं रेतोवेधाय नमः ४७। ॐ क्रौं श्मशानचाराय नमः ४८। ॐ क्रौं विभीषणाय नमः ५२। नमः ५०। ॐ क्रौं कण्टकाय नमः ५१।

फरीथी वलय करीने अष्टदळ करवुं. तेमां जमणी बाजुना क्रमे करीने आ प्रमाणे देवो स्थापवा—

ह्रीं श्रीं भैरवाय नमः १। ह्रीं श्रीं महाभैरवाय नमः २। ह्रीं श्रीं चण्डभैरवाय नमः ३। ह्रीं श्रीं रुद्रभैरवाय नमः ४। ह्रीं श्रीं कपालभैरवाय नमः ५। ह्रीं श्रीं आनन्दभैरवाय नमः ६। ह्रीं श्रीं कंकालभैरवाय नमः ७। ह्रीं श्रीं भैरवभैरवाय नमः ८॥

फरीथी तेना उपर वलय करीने ॐ ह्रीँ श्रीं सर्वाभ्यो देवीभ्यः सर्वस्थाननिवासिनीभ्यः सर्वविघ्नावनाशिनीभ्यः सर्वदिव्यधारिणीभ्यः सर्वशास्त्रकरीभ्यः सर्ववर्णाभ्यः सर्वमंत्रमयीभ्यः सर्वतेजोमयीभ्यः सर्वविद्यामयीभ्यः सर्वमंत्राक्षरमयीभ्यः सर्वर्द्धिदाभ्यः सर्वसिद्धिदाभ्यो भगवत्यः पूजां प्रतीच्छन्तु स्वाहा। आ प्रमाणे वलयपणाए करीने

स्थापन करवुं. तेनी उपर फरीथी वलय करी दस दळ करी जमणी बाजुना क्रमे आ प्रमाणे दश दिक्पाल स्थापन करवा—

ॐ इन्द्राय नमः १। ॐ अग्नये नमः २। ॐ यमाय नमः ३। ॐ निर्ऋतये नमः ४। ॐ वरुणाय नमः ५। ॐ वायवे नमः ६। ॐ कुबेराय नमः ७। ॐ ईशानाय नमः ८। ॐ ब्रह्मणे नमः ९। ॐ नागेभ्यो नमः १०॥

फरीथी वलय करीने दश दळ करीने तेमां जमणी बाजुना क्रमे आ प्रमाणे ग्रहादिक स्थापवा—

ॐ आदित्याय नमः १। ॐ चन्द्राय नमः २। ॐ मंगलाय नमः ३। ॐ बुधाय नमः ४। ॐ गुरवे नमः ५। ॐ शुक्राय नमः ६। ॐ शनैश्चराय नमः ७। ॐ राहवे नमः ८। ॐ केतवे नमः ९। ॐ क्षेत्रपालाय नमः १०॥

त्यारपछी तेनी बहारना भागमां चारखुणावाळुं भूमिपुर करवुं. तेना मध्य भागमां ईशान खुणामां गणपति, पूर्व दिशामां अम्बा, अग्नि खुणामां कार्तिकेय, दक्षिण दिशामां यमुना, नैर्ऋत्य खुणामां क्षेत्रपाल, पश्चिम दिशामां महाभैरव, वायव्य खुणामां गुरु अने उत्तर दिशामां गंगानुं स्थापन करवुं. ए प्रमाणे भगवती मंडलनुं स्थापन करी पूजन करवुं. ॐ ह्रीँ नमः अमुकदेव्यै, अमुकभैरवाय, अमुकवीराय, अमुकयोगिन्यै, अमुकदिक्पालाय, अमुकग्रहाय, एवं भगवन्! अमुक! अमुके आगच्छ आगच्छ, इदमर्घ्यं पाद्यं बलिं चरुं आचमनीयं गृहाण गृहाण, संनिहितो भव संनिहितो भव स्वाहा, जलं गृहाण गृहाण, गन्धं पुष्पं अक्षतान् फलं मुद्रां धूपं दीपं नैवेद्यं गृहाण गृहाण सर्वोपचारान् गृहाण गृहाण, शान्तिं कुरु कुरु तुष्टिं पुष्टिं ऋद्धिं वृद्धिं सर्वसमीहितं कुरु कुरु स्वाहा।

आ मन्त्र वडे सर्व देव देवी प्रत्येकने अनुक्रमे सर्व वस्तुओ तथा सर्व उपचार वडे पूजन करे. अने त्रण खुणावाळा कुंडने विषे घी, मध अने गुगल वडे तेटली संख्याना होम करे.

होमनो मन्त्र आ प्रमाणे छे—ॐ (रं) अमुको देवः देवी वा संतर्पिताऽस्तु स्वाहा ॥" ए प्रमाणे विधि करीने देवीप्रतिमाने दशायुक्त वस्त्रवडे आच्छादन करे, अने उपर चन्दन, अक्षत अने फळ वडे पूजन करे.

जिनना मते देवीप्रतिष्ठामां वेदी करवानी नथी, तेथी ज्यारे लग्नवेला प्राप्त थाय त्यारे गुरु एकान्ते प्रतिष्ठा करे. तेमां वासक्षेप,१ चन्दन, २ केसर, ३ कक्कोल, ४ कपूर, ५ विष्णुकान्ता, ६ शतावरी, ७ वाळो, ८ दूर्वा(धो), ९ प्रियंगु (घउंला), १० उशीर (सुगन्धीवाळो), ११ तगर, १२ सहदेवी, १३ कुष्ठ (कठ), १४ कचुरो, १५ जटामांसी, १६ शैलेय (शिलारस), १७ कसुंबो, १८ लोध्र, १९ वला, २० तज, २१ कदम्ब, २२ उदुंबर, २३ पींपळो, २४ वड अने २५ आम्र ए पचीश वस्तुमय तैयार करवो. सौभाग्य मुद्रावडे प्रस्तुत देवीना मन्त्रथी वासक्षेप मन्त्रित करवो. त्यारबाद वासक्षेप पूर्वक प्रस्तुत देवीना मन्त्रपाठ पूर्वक माया बीजनुं स्थापन करवुं. त्यारपछी वस्त्र दूर करी सर्वजन समक्ष गन्ध अने अक्षतादि वडे पूजा करवी. त्यारबाद भगवतीने स्नात्र करवुं, प्रथम दूधनो कलश ग्रहण करीने–

क्षीराम्बुधेः सुराधीशैरानीतं क्षीरमुत्तमम्। अस्मिन् भगवतीस्नात्रे दुरितानि निकृन्ततु ॥

फरी दहींनो कलश ग्रहण करीने—

घनं घनबलाधारं स्नेहपीवरमुज्ज्वलम्। संदधातु दधि श्रेष्ठं देवीस्नात्रे सतां सुखम् ॥

फरी घीनो कलश ग्रहण करीने—

स्नेहेषु मुख्यमायुष्यं पवित्रं पापतापहृत्। घृतं भगवतीस्नात्रे भूयादमृतमञ्जसा ॥

फरी मधनो कलश ग्रहण करीने—

सर्वौषधिरसं सर्वरोगहृत्सर्वरञ्जनम्। क्षौद्रं क्षुद्रोपद्रवाणां हन्तु देव्यभिषेचनात् ॥

त्यारबाद सर्व औषधि मिश्रित जळनो कलश लइने—

सर्वौषधिमयं नीरं नीरं सद्गुणसंयुतम्। भगवत्यभिषेकेऽस्मिन्नुपयुक्तं श्रियेऽस्तु नः ॥

आ श्लोक बोलीने अभिषेक करे. त्यारबाद जटामांसीनुं चूर्ण लइने—

सुगन्धं रोगशमनं सौभाग्यगुणकारणम्। इह प्रशस्तं मांस्यास्तु मार्जनं हन्तु दुष्कृतम् ॥

आ श्लोक बोलीने मार्जन करे. पछी चन्दननुं चूर्ण लइने—

शीतलं शुभ्रममलं धूततापरजोहरम्। निहन्तु सर्वप्रत्यूहं चन्दनेनाङ्गमार्जनम् ॥

आ श्लोक बोली अंगे मार्जन करे. पछी केसरनुं चूर्ण लइने—

कश्मीरजन्मजैश्चूर्णैः स्वभावेन सुगन्धिभिः। प्रमार्जयाम्यहं देव्याः प्रतिमां विघ्नहानये॥

आ श्लोक बोली प्रमार्जन करे.

आ प्रमाणे पांच स्नात्र अने त्रण प्रमार्जन करीने देवीनी पासे स्त्रीओने उचित सर्व वस्त्र, भूषण, गन्ध, माला अने मंडन करनार वस्तुओ तथा नैवेद्य पण बहु प्रकारनां मूके. त्यारबाद प्रतिष्ठा पूर्ण थाय त्यारे मंडलनुं विसर्जन नन्द्यावर्तना विसर्जननी जेम करे. त्यारपछी कन्यानुं पूजन, गुरुओने दान, महोत्सव अने संघपूजा महाप्रतिष्ठानी पेठे करे. आ प्रतिष्ठा प्रासाददेवी, संप्रदायदेवी अने कुलदेवी त्रणेनी जाणवी, तेनुं पूजन, गुरु, आगम के कुलाचारथी जाणवुं. ग्रन्थ विस्तारना भयथी अने आगम प्रगट करवा योग्य नहि होवाथी अहीं बताव्यु नथी.

ए संबन्धे कहेवामां आव्युं छे के–आ आगमनुं रहस्य छे अने ते प्रयत्नथी गुप्त राखवुं. कारण के गुप्त राखवाथी सिद्धि थाय छे अने प्रगट करवाथी सिद्धिनो संशय छे.

तथा सर्व देवोनी प्रतिष्ठा ते ते कल्पमां कहेला अथवा गुरुए उपदेशेला ते ते देवीना मन्त्र वडे करवी. बाकीनुं बधुं कार्य सर्व देवीनी प्रतिष्ठामां सरखुं जाणवुं. जे देवीओ अप्रसिद्ध होवाथी तेनो कल्प जणातो न होय अथवा गुरुना उपदेशना अभावथी तेना नामनो मंत्र न कहेलो होय त्यां ते देवीओनी प्रतिष्ठा अम्बा देवी के चंडी देवी के त्रिपुरा देवीना मन्त्र वडे करवी. अहीं देवी प्रतिष्ठामां शासनदेवी, गच्छदेवी, कुलदेवी, नगरदेवी, भुवनदेवी, क्षेत्रदेवी अने दुर्गादेवी ए बधी देवीओनो प्रतिष्ठाविधि एक ज छे.

॥ इति देवीप्रतिष्ठा विधि ॥

## १५ अथ मंडप पीठ स्थापन विधि

स्नात्रकारकने चंद्रबळयुक्त पंचांगशुद्ध दिवसे, लग्नयुक्त जे मुहूर्त दिवस ठराव्यो होय तेथी सात दिवस पहेलां अथवा पांच दिवस पहेलां अथवा त्रण दिवस पहेलां अथवा एक दिवस पहेलां दिवसे स्नात्र करवाने स्थाने जमीन ऊंडी गज सवा, लांबी पहोळी मंडळ प्रमाण, शल्य रहित करी, शुद्ध मृत्तिका पूरि, शुद्ध करवी. तथा मंडळनी बहार चारे दिशि विदिशिए जघन्यथी सो हाथ प्रमाण शुद्ध करवी. लघुनीति, वडीनीति, कलेवरादिकथी रहित करावबी. अथवा ते भूमि प्रथमथी शुद्ध करावी होय अथवा छोवंध घरमध्ये, अथवा मेडी मध्ये स्नात्र कराववुं होय ते वखते सधवा संतानवती स्त्री पासे मधत्सा राती–धोळी गायना छाणे तथा अबोट अछूती गौरमटी वडे स्नात्रिया तथा स्नात्रनां उपकरण रहे त्यांसुधी चोको देवराववो. पछी संपुट एक न्हानुं तेमां सोपारी, चोखा तथा तांबानाणुं, रूपानाणुं, पंचरत्ननी पोटली एवं वस्तु पंचयुक्त संपुट करी पछी ॐ कूर्म निजपृष्ठे जिनबिंबं धारय धारय स्वाहा । ए मंत्र १०८ वार अथवा २७वार मंत्री संपुट मूकी बीडीए, उपर शुद्ध मृत्तिका पूरी सम करीऐ.

पछी मृत्तिका उपर गहुंली करवी. चोखानो चोक पूराववो. ते उपर श्रीफळ एक कंकुए पूजित मूकीए. पछी सुखड, केसर, कुंकुम ए त्रण रेखानुं चोखंडु मंडळ आळेखवुं. पछी पीठ स्थापना नीचेना मंत्रे मंत्रित करीएः–

---

१ अहीं कोइक संपुट विना चोखा प्रमुख मूकी, मृत्तिकाए आच्छादन करे छे अने कोइक तो ते पण करता नथी, परन्तु चोको करी स्वस्तिक मात्रथी भूमि शुद्ध करे छे. परन्तु ते शुद्ध (विधियुक्त) नथी. शुद्ध पीठ विना मंत्रविधाननो निषेध छे.

ॐ भूरसि भूतधात्रि विश्वाधारे नमः । आ मंत्र सात वखत बोलीने वासफूलने मन्त्रीने मंडळभूमि तथा पीठ पूजीए, धूप करीए. मंडळ उपर पहेलांथी चंदरवो बांधीए तथा वे ध्वज आरोपीए. पछी मुहूर्त दिने शुभ मंडप मध्ये त्रण टंक धूप-दीप सहित शुद्ध रीते सात स्मरण गणवां. मंडपमध्ये रजस्वला स्त्री, सुतकी माणस तथा बीलाडी प्रमुख हिंसक प्राणीओनो संचार टाळवो. उभय काळ सधवा स्त्रीओ मळीने मंगळगान करे. ते स्त्रीओने तंबोळ आपवां. रात्रि-जागरण करवुं. अमारी पळाववी.

| अक्षतपात्र<br>अक्षतपात्र | पीठ | अक्षतपात्र<br>अक्षतपात्र |
|---|---|---|

परनाळिया बाजोठने स्वमंत्रे मंत्री ऋद्धि वृद्धि मदनफल युक्त मींढळसूत्र बांधे. पछी पीठ उपर स्थापे

पछी वृद्ध स्नात्रिया श्रावक परनाळीओ बाजोठ धोइ शुद्ध करे. तेने धूपीने पूर्व दिशि के उत्तर दिशिनी पुंठे मांडे. ते उपर चंदनना चार साथिया करे. पछी ॐ ह्रीँ श्रीँ अर्हत्पीठाय नमः । ए मंत्रे वासपुष्पे सात वार मन्त्री पीठपूजा करे. उत्तम कुसुमे अक्षते पोसभरी त्रणवार वधावे. पवित्र शुद्धपणे गोळपापडी शेर पांच पीठ आगळ घंटाकर्ण मन्त्रे १०८ वार मन्त्री पीठने नैवेद्य करी' बाळक प्रमुखने ते सर्व वहेंची आपे. घंटाकर्ण मंत्रः—

१ अहीं कोइक मुहूर्त दिवसे प्रतिमा स्थापी आ प्रमाणे करे छे पण ते घटे नहीं, कारणके ए तो मंडपनुं बलिदान छे. क्षेत्राश्रित देवताने प्रसन्न करवा वास्ते मंडप स्थापनमां आ जोइए

२ घंटाकर्ण मंत्र गणवानो विधिः—घंटाकर्ण मंत्र लखेली थाळीने पंचामृतथी स्नात्र करी, शुद्ध जळवडे साफ करी, शुद्ध वस्त्रवडे लूंछीने तेनी चंदनादि वडे पूजा करवी. पछी एक शुद्ध पाठनो जाणकार स्नात्रकारक पुरुष बाजोठ उपर ते थाळीने पधरावीने एक बाजुए अगरना लाकडाना १०८ ककडा करी तेनो धूप तथा बीजी बाजु दीप राखी जाइना १०८ पुष्प पासे राखे. अने पूजक पुरुष मन्त्र

ॐ ह्रीँ घंटाकण महावीर, सर्वव्याधिविनाशक। विस्फोटकभये प्राप्ते, रक्ष रक्ष महाबल ॥१॥
यत्र त्वं तिष्ठसे देव, लिखितोऽक्षरपंक्तिभिः। रोगास्तत्र प्रणश्यन्ति, वातपित्तकफोद्भवाः ॥२॥
तत्र राजभयं नास्ति, यान्ति कर्णेजपाः क्षयम्। शाकिनीभूतवेताल–राक्षसाः प्रभवन्ति न ॥३॥
नाकाले मरणं तस्य, न च सर्पेण दश्यते। अग्निचोरभयं नास्ति, ह्रीँ घंटाकर्ण नमोऽस्तु ते ॥४॥ ठःठःठः स्वाहा

॥ इति मंडप पीठ स्थापनविधि ॥

## १६ अथ प्रतिष्ठा (बिंब प्रवेश) विधि

पूर्वोक्त दिवसे, शुभ–उत्तम ग्रह–बळयुक्त स्थिर लग्न ठरावी वधावीए.

लग्नदायकनो अक्षत, श्रीफळ, परिधळ द्रव्य वस्त्रादिक वडे यथाशक्ति सत्कार करवो. पछी लग्नदिन ठराव्यो होय ते दिवसथी १०, ७, ५ अथवा ३ दिवस पहेलां, घर तथा वहार जघन्यथी १०० हाथ भूमि शुद्ध करीए. कलेवरादिक दूर करे. तथा ज्यांथी

---

बोलीने एक पुष्प थाळमां मंत्र उपर चढावे, पडखे बेठेलो पुरुष धूपमां एक अगरनो ककडो नाखे अने कांसानी थाळी उपर वेलणथी एक डंको वगाडे. आ प्रमाणे १०८ वार थइ रह्या पछी ते थाळीमां श्रीफळ, पचरत्ननी पोटली तथा रूपियो मूके अने एक कांसानी थाळीमां सुखडीना पांच ककडा मूके. तेना उपर वाजोठ सहित कसुंबो नाडाछडीवडे वांधे. तेना उपर सोना रूपाना वरख चोटाडे. चंदन, पुष्प वासक्षेपथी पूजा करे. फूलनी माळा पहेरावे.

जिनबिंब लाववुं होय ते स्थाने पण भूमि शुद्ध करावे अने कलेवरादिक दूर करावे. बन्ने ठेकाणे मांडवा बंधावे. बन्ने ठेकाणे सांज सवार सांझी प्रभातीयां गवराववां. संघमां अथवा घरमां जे उत्तम, दक्ष, निर्दोष पुरुष होय ते दश दिवस सुधी एकासणां करे, ब्रह्मचर्य पाळे, सचित्तनो त्याग करे, मलिन अशुचि व्यापारनो त्याग करे, भूमि शयन करे, प्रसन्न चित्ते वर्ते. जे देरासरे प्रभु स्थापवाना छे ते स्थानके आवी क्रियाकारक पुरुष त्रण टंक दीप, धूप सहित सात स्मरण गणे.

पछी एक नवी कोरी रूपानी अथवा त्रांबानी वटलोइमां अबोट पाणी भरी सोनावाणी करी सातवार नवकार गणी ॐ जीरावलीपार्श्वनाथ रक्षां कुरु कुरु स्वाहा। ए मन्त्रे ते जळ सातवार मन्त्री देरासरे सघळे छांटवुं. उत्तम धूप उखेववो. पछी ते दिवसे अथवा सात अथवा पांच दिवस बाकी रहे त्यारे शुभ दिन जोइ, कुंभ-स्थापन चक्र होय ते दीवसे देहरामध्ये ज्यां बिंब स्थापवानां होय त्यांथी जमणी दिशाए ब्रह्मचारी अथवा ब्राह्मण पासे चार कोरां शरावलां मध्ये जवारां ववरावीए. सधवा स्त्री पासे व्रीहि शेर सवानो स्वस्तिक करावीए. पछी विधिपूर्वक कुंभस्थापना करीए. [आ कुंभस्थापना विधि आ पुस्तकना प्रारंभमां पृष्ठ पहेला उपर आपेल छे ते प्रमाणे कुंभस्थापना करवी अने जवारां ववराववां. एनो विधि चोथा पाना उपर छे.] कुंभस्थानके दीप अखंड राखवो. [दीप स्थापन विधि पृष्ठ त्रीजा उपर आपेल छे ते प्रमाणे करवो.] त्रिकाळ धूप करवो. जवारा स्थानके मांजार (बीलाडी) प्रमुख हिंसक प्राणीने आववा देवां नहीं. रजस्वला प्रमुख मलिन स्त्रीनी दृष्टि पडवा देवी नहीं. कुंभ आगळ त्रण टंक अविधवा स्त्री पासे गहुंली कराववी. सौभाग्यवती स्त्रीओ मळी उत्तम धवळमंगळ गीत गाय. गानारी स्त्रीओने तंबोळ आदि देवां. श्रावक तथा श्राविकाओए नरकादि दुःख गर्भित, जिन मुनिना उपसर्ग गर्भित, आलोयण स्तवन, तथा राजीमती प्रमुखना विलाप गर्भित गीत गावां नहीं. अनित्य-अशरण

भावनानां गीत वर्जवां.

हवे स्थापनीय बिंब जेने घेर होय त्यां दश दिवस विधिपूर्वक स्नात्र करवुं. त्यां स्नात्रिया चार पुरुष, मंत्र शुद्धि पूर्वक बीजा स्नात्रियाओने शुद्ध करी स्नात्र करे. तेना दंतधावनादिनो विधि आ प्रमाणेः—

जळ शुद्धि मन्त्रः-ॐ ह्रीँ अमृते अमृतोद्भवे अमृतवर्षिणि अमृतं स्रावय स्रावय स्वाहा। आ मंत्र सात वार बोली जळ शुद्ध करवुं. ते पाणी मुखशुद्धि माटे वापरवुं.

दातण शुद्धि मंत्रः-ॐ ह्रीँ यक्षसेनाधिपतये नमः। ए मंत्र सात वार बोली दातण करीए.

मुख धावन मंत्रः-ॐ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ कामदेवाधिपतये ममाभीप्सितं पूरय पूरय स्वाहा। आ मंत्र सातवार बोली मुख धावन करवुं. (मोढुं धोवुं.)

स्नान मंत्रः-ॐ ह्रीँ अमले विमले विमलोद्भवे सर्वतीर्थजलोद्भवे पां पां वां वां अशुचिः शुचिर्भवामि स्वाहा। ए मंत्र सातवार बोली स्नान करवुं.

वस्त्र शुद्धि मंत्रः-ॐ ह्रीँ आँ क्रौँ नमः। ए मंत्र सातवार भणी वस्त्र पहेरवां.

तिलक मंत्रः-तिलकनुं केसर हाथमां लइ ॐ आँ ह्रीँ क्लौँ अर्हते नमः। ए मंत्रे सातवार केसर मंत्री तिलक करे.

ग्रीवासूत्र मींढळ आदि बंधन मंत्रः-ॐ ह्रीँ अवतर अवतर सोमे सोमे कुरु कुरु वल्गु वल्गु निवल्गु निवल्गु सुमणे सोमणसे महु महुरे ॐ कवली कः क्षः स्वाहा। ए मंत्रे सातवार मंत्री सर्व स्नात्रियाओने हाथे मींढळ मरडाशिंगी सहित

नाडुं बांधे. तथा कुंभने मींढळ ऋद्धि वृद्धि प्रमुख पण आ ज मंत्रे मंत्रीने बांधे.

भूमि शुद्धि मंत्रः–ॐ ह्रीँ अर्हं भूर्भुवः स्वधाय स्वाहा। ए मंत्र सातवार बोली फूल वास मंत्री स्नात्र–भूमि उपर जळ, पुष्प, वासनुं आच्छोटन करी भूमि शुद्ध करे.

अभिषेक जळ शुद्धि मंत्रः—

क्षीरोदधिः स्वयंभूश्च, सरःपद्ममहाद्रहः। सीतासीतोदकाकुण्डे, जलेऽस्मिन् सन्निधिं कुरु॥१॥

गंगे च यमुने चैव, गोदावरि सरस्वति। कावेरि नर्मदे सिन्धो, जलेऽस्मिन् सन्निधिं कुरु॥२॥

ॐ ह्रीं अमृते अमृतोद्भवे अमृतवर्षिणि अमृतं स्रावय स्रावय स्वाहा। ए मंत्रथी सातवार जळ मंत्री कळश धोइ धूपीने भरवा.

पछी ॐ ह्रीँ श्रीँ परमात्मने अनन्तानन्तज्ञानशक्तये जन्मजरामृत्युनिवारणाय श्रीमते जिनेन्द्राय जलं यजामहे स्वाहा।

आ मन्त्रथी जळ, चंदन, पुष्प, दीप, धूप, अक्षत, नैवेद्य अने फळ, ए अष्टप्रकारी पूजा उपर कहेला मंत्रे करवी. [जे वखते जे द्रव्यथी पूजा करवी होय ते वखते 'जलं' ना स्थाने ते द्रव्यनुं नाम बोलवुं.] आ प्रमाणे दश दिवस सुधी स्नात्र अने अष्टप्रकारी पूजा शुद्ध रीते करे. दशे दिवसमां कोइ साथे क्रोध करवो नहीं, वढवुं नहीं, अपशब्द बोलवा नहीं, बारणे आवेला भिक्षुक के याचकने खाली हाथे पाछा काढवा नहीं, तेमने यथाशक्ति दान आपीने प्रसन्न करवा. एम करतां मुहूर्त्तना त्रण दिवस बाकी रहे त्यारे विशेषे

धूप करवो अने रात्रिजागरण करवुं. अने प्रतिमा बेसार्या पहेलां त्रण दिवस रहे त्यारे एक पहोर रात्रि जतां देरामां रंगमंडपमां नैवेद्य मूकवुं. नैवेद्यनां सोळ सरावलां कोरां माटीनां मूकवां. नैवेद्यनी बधी वस्तुओ जुदा जुदा पात्रमां मूकवी. एक पात्रमां चोक्खुं पाणी आसुपो दइने मूकवुं. धूप उखेववो.

ॐ ग्रहाश्चन्द्र १ सूर्य २ अंगारक ३ बुध ४ बृहस्पति ५ शुक्र ६ शनैश्चर ७ राहु ८ केतु ९ सहिताः सलोकपालाः सोमयमवरुणकुबेरवासवादित्यस्कन्दविनायकोपेता ये चान्येऽपि ग्रामनगरक्षेत्रदेवतादयस्ते सर्वे प्रीयन्तां प्रीयन्ताम् ।

दरेक पात्र हाथमां लइने, उपरनो मंत्र भणीने मूकवुं. त्यारपछी कंकु हळदरनुं पाणी करी सौभाग्यवती स्त्री पासे अंदर अने बहार छंटाववुं. फूल चोतरफ विखेरवां. तथा पंचवर्णी ग्रीवासूत्रना २१ तार लइ देवगृहने वींटे. द्वारने टोडे अथवा थांभले वींटीए. त्रण दिवस अगाउ आ प्रमाणे पात्र मूकवानुं न बने तो एक दिवस पहेलां अने एक दिवस पाछळ मूकवां. एम करतां मुहूर्तने आगले दिवसे लापसी १, बाकुळा २, करंबो ३ अने पाणी ४ ए चार वस्तु पवित्रपणे करी, चार कोरां शरावलामां भरी, वासनिक्षेप करी, पात्रने धूपी, संध्या समये घरने तथा देराने आगले पडाले क्रियाकारक पुरुष दरेक पात्र हाथमां लइ नीचेनी

१ कंसार, दहीं, भात, करंबो, मालपुडा, चोळाना पुल्ला, खीर, अडदनां वडां, रोटली, चणाना बाकळा, मगना बाकळा, कंकु, हळदर, सोपारीना ककडा, पान, पाणी. आ प्रमाणे सोळ पात्र भरवां. दरेक पात्र उपर चार हांसवाळा कणीकना नाना दीवडा वांसनी सळी उपर मूकवा. अने तेमां चार खूणे एकेक दीवेट मूकी, घी पूरी, दीवा प्रगटाववा.

गाथा त्रणवार भणी अगासे मूकेः—

ॐ भवणवइवाणमंतर—जोइसवासी विमाणवासी य। जे केवि दुट्ठ देवा, ते सव्वे उवसमंतु मम स्वाहा ॥

ए गाथा भणी चार पात्र मूकवां. पात्र आगळ धूप करी नीचे उतरवुं. पछी जेने घरे स्थापनीय बिंब होय त्यां रात्रि—जागरण करवु. वळी ते ज रात्रे एक प्रहर गया पछी उवसग्गहरं नी एक नवकारवाळी देवगृहना मध्य भागमां उभा रही, अगरना धूप पूर्वक गणवी. पछी पूर्ण मध्यरात्रि समये निर्धूम अंगाराथी एक पात्र भरी अगासे मूकी तेमां दशांग धूप करे. अने बे घडी पर्यंत "सर्व क्षेत्रदेवता मुजने सानुकूळ होजो" एम कही घरमां आववुं.

जिनबिंबने लेवा जतां पहेलां जो समय होय तो प्रतिष्ठाना मुहूर्तने दिवसे अने जो ते दिवसे समय न होय तो आगले दिवसे नवग्रह, दश दिक्पाळ, अष्ट मंगळनुं विस्तारथी पूजन करवुं. पछी जिनबिंबने तेडवा जाय ते आ प्रमाणेः—

मुहूर्तने दिवसे प्रभाते जे चतुर्विध संघने आगले दिवसे नोतर्यो होय ते पोताना घरे एकठो थाय. पछी उत्तम ब्रह्मचारी पुरुष मंत्र—पूर्वक स्नान करे. नवां उत्तम वस्त्र अने अलंकार पहेरे. पछी श्रीजिनचैत्यथी अंगअवयवे परिपूर्ण पंचतीर्थी प्रतिमा आणी एक शुद्ध थाळमां केसर चंदननो साथियो करी, उपर सवावे शेर अखंड अक्षतनो साथियो करी, मांहे सात सोपारी मूके. पछी तेमां पंचतीर्थी प्रतिमाने पधरावे. ते थाळ हाथमां लइ उत्तम ब्रह्मचारी पुरुष उभो रहे. पछी एक बीजो थाळ लइ तेमां तेर शेर अख्याणुं, शाळी तथा चोखा लइ तेमां रूपानाणुं मूकी ते लइने भक्त पुरुष जिनबिंब आगळ उभो रहे. पछी चार हांशनो चार वाटनो घीथी भरेलो माणिक्य दीवो लई तेमां रूपानाणुं मूकी ते प्रगटावी एक त्रीजा थाळमां मूके. अने ते थाळ लइने जिनबिंबनी पासे जमणे

देव वांदता देखाय छे.] पछी घरनो मालिक तेना परिवारने पहेरामणी करे. बदलामां ते गृहस्थ पण घरधणीने पहेरामणी करे. विशेष यथाशक्ति पहेरामणी करी मांहोमांहे रंगरोळी करे. पछी सकळ संघने तांबुल दई पूर्वे थापेला मंगळकुंभने, हार कापडे परिपूजित स्वर्णपत्रे मढेला श्रीफळ युक्त करे. सौभाग्यवती ते कुंभने मस्तके लइने आगळ थाय. [त्यां कोइ विध्यंतरे देशचाले कुंभ लेनार स्त्रीना भर्तारनी साथे छेडाछेडी बांधे छे. एटले स्त्री कुंभ ग्रहे अने भर्तार बिंब ले. पण ते मूळ विधि नथी.] पछी घरधणी चंद्रस्वर वहेते, श्वास कुंभ करी (स्थिर करी) प्रतिमाजीने उपाडे. प्रतिमा लेनार पण श्वास स्थिर करी बे हाथे थाळ धरी उभो रहे. तेमां प्रभु पधरावे. जे प्रतिमा लईने आव्या हता ते प्रतिमाने जोडे राखे. पछी घरधणी मनोरथ सिद्ध थयो थको आ प्रमाणे आशीष दे:— प्रतिग्राहक, ॐ ह्रीँ श्रीँ जीरावल्लिपार्श्वनाथाय नमः। आ प्रमाणे सात वार कहे. पछी प्रतिमाग्राहक सात नवकार गणे. जो चंद्रस्वर वहेतो होय तो पहेलां चार पगलां डाबा पगनां भरे अने जो सूर्यस्वर वहेतो होय तो पहेलां पांच पगलां जमणा पगनां भरे. पछी अष्टमंगलिकना थाळवाळा, तेनी आगळ मंगळकळशवाळा, तेनी आगळ माणिक्य दीपवाळा, तेनी आगळ आरीसो धरनार, तेनी आगळ घंटने धरनार, तेनी आगळ झालरने धरनार, तेनी आगळ जळने धारण करनार, तेनी आगळ पुष्प चंगेरी धरनार, तेनी आगळ कोरां बलिपात्र धरनार, तेनी आगळ ध्वज धारण करनार अने तेनी आगळ पांचशब्द वाजित्र निशान प्रमुख सर्व ऋद्धि विस्तार सहित चाले. पाछळ सौभाग्यवती स्त्री अनेक धवळमंगळ गीत गाती उल्लास सहित चाले. मार्गे ॐ पुण्याहं पुण्याहं प्रीयन्तां प्रीयन्तां ए शब्द उचरतां कोरो बलि बाकुळा उछाळता जाय. दश दिक्पाळने बोलावता जाय ते आ प्रमाणे:—

ॐ इन्द्राय १, अग्नये २, यमाय ३, नैर्ऋताय ४, वरुणाय ५, वायव्याय ६, कुबेराय ७, ईशानाय ८, ब्रह्मणे

पडखे उभो रहे. पछी एक चोथा थाळमां अखंड अक्षतथी अष्टमंगळ आळेखी, वासपुष्पे पूजी, श्री जिनबिंब आगळ भक्त पुरुष उभो रहे. त्यारपछी एक पांचमां थाळमां बे अंगलूंछणा लइ, ते उपर केसरनो नंद्यावर्त करी, ते थाळ लइने एक भव्य पुरुष जिनबिंब आगळ उभो रहे.

पछी सचित्र वरगडुआ ( नाना घडा ) बे लइ तेमां एक पाली अखंड चोखा अने सात सोपारी मूकी, ते उपर नीलो अथवा पीळो वास्तो अथवा कसुंबी वस्त्र आच्छादन करी, ग्रीवासूत्र बांधी, पुष्पमाळा पहेरावी, उपर श्रीफळ एक मूकी सौभाग्यवती, उभय पक्षे पूरी, पुत्रवती, सोळ शृंगारे शोभित बे स्त्रीओना माथे ए बे नाना कुंभ स्थापन करवा. ते स्त्रीओ जिनबिंबनी बे बाजुए उभी रहे. त्यारपछी संघने तांबूल आपे. श्रीफळ, मीठाइना पडा प्रमुखनी यथाशक्ति प्रभावना करे. आगळ चतुर्विध संघ, पांच शब्द नगारां नोबत वाजते गाजते, अनेक खेल प्रमुख नाचते, गज अश्वने शणगारी, सांबेला आगळ चालते, याचक बिरुदावली बोलते, पाछळ सौभाग्यवती स्त्रीओनां वृंद अनेक धवलमंगळ गीत गातां, अनेक ऋद्धिना विस्तार सहित, याचक जनने अवारित दान देतां घरथी नीकळे. मार्गे अपशब्द, क्रूर दुर्भाषित वचन काढवुं नहीं. जिनशासननी उन्नति वधारवी. ज्यां स्थापनीय बिंब होय त्यां-ते घरना द्वार-तोरणे आवे त्यारे घरनो धणी सौभाग्यवती स्त्री पासे श्रीफळ अल्याणुं ढोवरावे. सोनुं, रूपुं, पुष्प, मुक्ताफळ अने अक्षतथी वधावे. रूपानाणुं जिनबिंबने लूंछणुं करी याचकने आपे. जिनबिंबने नमस्कार करी संघ सहित घरमां आवे. नवीन बिंब पासे जिनघरना बिंबने स्थापे. अने तेना घरना द्वारे कंकुना थापा दे. नवीन बिंब आगळ पांचशेर अक्षतनो साथियो करी ते उपर सोपारी तथा चोखंडो रूपियो मूके. पछी सकळसंघ त्रण खमासमण दइ प्रभुने वांदे. पछी त्यां लघु स्नात्र भणावे. [ विध्यंतरे आठ थोये

देव वांदता देखाय छे. ] पछी घरनो मालिक तेना परिवारने पहेरामणी करे. बदलामां ते गृहस्थ पण घरधणीने पहेरामणी करे. विशेष यथाशक्ति पहेरामणी करी मांहोमांहे रंगरोळी करे. पछी सकळ संघने तांबूल दई पूर्वे थापेला मंगळकुंभने, हार कापडे परिपूजित स्वर्णपतरे मढेला श्रीफळ युक्त करे. सौभाग्यवती ते कुंभने मस्तके लइने आगळ थाय. [त्यां कोइ विध्यंतरे देशचाले कुंभ लेनार स्त्रीना भर्तारनी साथे छेडाछेडी बांधे छे. एटले स्त्री कुंभ ग्रहे अने भर्तार बिंब ले. पण ते मूळ विधि नथी.] पछी घरधणी चंद्रस्वर वहेते, श्वास कुंभ करी (स्थिर करी) प्रतिमाजीने उपाडे. प्रतिमा लेनार पण श्वास स्थिर करी बे हाथे थाळ धरी उभो रहे. तेमां प्रभु पधरावे. जे प्रतिमा लईने आव्या हता ते प्रतिमाने जोडे राखे. पछी घरधणी मनोरथ सिद्ध थयो थको आ प्रमाणे आशीष दे:— प्रतिग्राहक, ॐ ह्रीँ श्रीँ जीरावलिपार्श्वनाथाय नमः। आ प्रमाणे सात वार कहे. पछी प्रतिमाग्राहक सात नवकार गणे. जो चंद्रस्वर वहेतो होय तो पहेलां चार पगलां डाबा पगनां भरे अने जो सूर्यस्वर वहेतो होय तो पहेलां पांच पगलां जमणा पगनां भरे. पछी अष्टमंगलिकना थाळवाळा, तेनी आगळ मंगळकळशवाळा, तेनी आगळ माणिक्य दीपवाळा, तेनी आगळ आरीसो धरनार, तेनी आगळ घंटने धरनार, तेनी आगळ झालरने धरनार, तेनी आगळ जळने धारण करनार, तेनी आगळ पुष्प चंगेरी धरनार, तेनी आगळ कोरां बलिपात्र धरनार, तेनी आगळ ध्वज धारण करनार अने तेनी आगळ पांचशब्द वाजित्र निशान प्रमुख सर्व ऋद्धि विस्तार सहित चाले. पाछळ सौभाग्यवती स्त्री अनेक धवळमंगळ गीत गाती उल्लास सहित चाले. मार्गे ॐ पुण्याहं पुण्याहं प्रीयन्तां प्रीयन्तां ए शब्द उचरतां कोरां बलि बाकुळा उछाळता जाय. दश दिक्पाळने बोलावता जाय ते आ प्रमाणे:—

ॐ इन्द्राय १, अग्नये २, यमाय ३, नैर्ऋताय ४, वरुणाय ५, वायव्याय ६, कुबेराय ७, ईशानाय ८, ब्रह्मणे

९, नागाय १० समस्त क्षेत्रदेवीदेवाय सायुधाय सपरिकराय श्रीजिनबिंबप्रवेशमहोत्सवविधौ आगच्छ आगच्छ स्वाहा।

आ प्रमाणे बोली कोरा बळि उछाळवा. पाणीना छांटा देवा. वच्चे वच्चे जिनबिंब उपर लूंछणुं करी याचकने आपवुं. एम महा-महोत्सव पूर्वक घर नजीक आवे त्यारे बे अथवा चार सधवा स्त्रीओ अथवा कुमारिकाओ पूर्ण कळश भरी सामे आवे. त्यारपछी प्रधान पुरुष आवी कंकुना छांटा नांखी सतोरण द्वार करे. पछी घरनो धणी श्रीफळ तथा अखियाणानो थाळ भरी प्रतिमा सन्मुख आवी अखियाणुं आगळ धरी प्रतिमाने नमस्कार करे. पछी अविधि आशातना थइ होय तेमाटे "मिच्छामि दुक्कडं" दइ बाकी रहेला बलि बाकुला उछाळे. पछी घरधणी कहे "स्वामी, पधारो" एम कही आभुषो दे एटले प्रतिमाने धारणकरनार, तोरण नजीक आवे, त्यारे सधवा स्त्री घाटडी [चुंदडी] अने मोडियो ओढी हर्ष पूर्वक पुखणांनो सामान[2] लइ जिनबिंबने पुंखे. पुंखतां देवद्रव्यनी जे वृद्धि करे तेनी पासे पुंखावे[3]. पछी प्रतिमाधरता पगनीचे संपुट चंपावी घरमध्ये आवे. मुहूर्तने वार होय तो बाजोठे बेसाडे. त्यार पछी उत्तम स्त्रीए पवित्रपणे तैयार करेल क्षीर, लापसी, गळ्या मोळा पुडला, वडां, कूर, करंबो, बाकुळा (चणा, मग, चोळा,

१ कोरा बलि आ प्रमाणे समजवाः-घउं १, चणा २, जुवार ३, मग ४, चोळा ५, जव ६, अडद अथवा सरसव ७, द्राक्ष बदाम प्रमुख मेवो, टोपराना नाना फकडा.

२. पुंखणांनो सामानः—बाजोठ, सरिया, इंडोणींडी, करवडा, धूंसरुं, मुसळ, त्राक, रवैयो, कंकुनी घाटकी व सर्व नवां करेलां जोइए. नवां न कर्यां होय तो नकरो मूकवो जोइए. ३ पुंखनार स्त्रियो निर्दोष जोइए.

मउद, पउ, उआर अने जर ए गाते पान्य गर्ने मळी शेर एकवीसना थाकळा बनाववा) एक मोटी कथरोटने आखलिया उपर थापी नैर्मा नैरोप, पति थाकळा ए सर्व एकठुं करी गापनुं घृत शेर सवा करतुं रेडी, उपर घुत-खांड सवाशेर भभरावी, ते उपर श्वेत अने रक्त कनेर तथा पंचवर्णी फूल मूकी, वासमुट्टि भरी भूतबलिमंत्र त्रणवार भणी वासमुट्टि निक्षेप करीए, एम त्रणवार वास निक्षेप करीए.

भूतबलिमंत्र आ प्रमाणे बोलवो:—

ॐ नमो अरिहंताणं। ॐ नमो सिद्धाणं। ॐ नमो आयरियाणं। ॐ नमो उवज्झायाणं। ॐ नमो लोए सव्वसाहूणं। ॐ नमो आगासगामीणं। ॐ नमो चारणाइलद्धीणं। जे इमे किन्नरकिंपुरिसमहोरगगरुलसिद्धगंधव्वजक्खरक्खसपिसायभूयपेयसाइणिडाइणिपभिइणो जिणघरनिवासिणो निय निय निलयट्ठिया पवियारिणो सन्निहिया असन्निहिया य ते सव्वे इमं विलेवणधूवपुप्फफलपईवसणाहं बलिं पडिच्छंता तुट्ठिकरा भवंतु सिवंकरा भवंतु संतिकरा भवंतु सुत्थं जणं कुणंतु सव्वजिणाण सन्निहाणप्पभावओ पसन्नभावत्तणेण सव्वत्थ रक्खं कुणंतु सव्वत्थ दुरियाणि नासंतु सव्वासिवमुवसमंतु संति तुट्ठि पुट्ठि सिव सुत्थयकारिणो भवंतु। स्वाहा।

पछी ते बलिबाकुला अडधा बीजा भाजनमां राखी, आखलिया उपर मूकी एकांते पवित्र स्थानके मूकीए. बाकीनो अडधो बलि लइ परना तथा चैत्यना आगले भागे जिनपीठथी उंचे स्थानके, डांभ प्रमुख लांछने रहित शुद्ध होय ते स्त्रियामांनो एक शिखाबंध धारक मुक्त केश करी बलिबाकुलानी पोश भरे, बीजो केसरनुं कचोळुं, त्रीजो फूल चंगेरी, चोथो आरीसो, पांचमो थाळी वेलण,

छठ्ठो धूप, सातमो दीप, आठमो अक्षत फळादि, नवमो चामर, दसमो घंट, अगियारमो पाणी ए सर्व लइ पूर्व सन्मुख उभा रहे. बलिबाकुळावाळो श्रावक दशदिक्पाळनुं आह्वान करे. [दशदिक्पाळनुं आह्वान आ पुस्तकना ५४मा पाने आपेल छे त्यांथी जोइ लेवुं] बीजा बधा ते प्रमाणे बोले. पछी बलि उछाळे [विध्यंतरे कोइ प्रभुने पधरावी पछी दिक्पाळने बलि दे छे.] पछी मुहूर्त वेळाए प्रतिमा लइ रंगमंडपमां आवीने उभा रहे. त्यां लावी चंदनना छांटा दे. पछी जे पीठ स्थाने प्रभु स्थापवाना छे ते स्थानके फरता चक्रनी माटी, ऋषभशृंगनी माटी, गजदंतनी माटी, समूळो दर्भ, श्वेत सरसव, दुर्वा, जव, अखंड तंडुल अथवा व्रीहि; ए आठ वानां मूके. वचे चोखुणो रूपियो मूके. तेनी उपर सेवननो पाटलो मूके. पछी सुखड, केसर, कस्तूरी, बरास, अंबर, अगर अने मरीचकंकोल, सुवर्ण-रज वगेरेनो बनावेलो यक्षकर्दम सोनारूपाना कचोळामां राखी सेवनना पाटला उपर दक्षिणावर्त स्वस्तिक स्फार आकारे करे. ते साथियाने चारे पांखडीए एक श्वासे कूर्ममंत्र लखे. कूर्ममंत्रः—ॐ कूर्म निजपृष्ठे जिनबिंबं धारय धारय स्वाहा। पछी गुरु दिग्बंधमंत्र दिशिबंध करे. दिग्बंधमंत्रः—ॐ ह्रीँ क्ष्वीँ सर्वोपद्रवाद् बिंबं रक्ष रक्ष स्वाहा। पछी केसर कर्पूरादि मिश्रित वास-क्षेप करे. पछी मुहूर्त वेळाए स्वरोदय साधी शुद्ध वेळाए ॐ ह्रीँ जीरावलिपार्श्वनाथाय नमः एम सात वार कही सात नवकार कही, ॐ पुण्याहं पुण्याहं प्रीयन्तां प्रीयन्तां। एवो शब्द उच्चरी पछी ॐ कूर्म निजपृष्ठे जिनबिंबं धारय धारय स्वाहा। एम कही श्वास कुंभ करी (स्थिर करी) श्री जिनबिंब स्थापन करे. त्यारपछी प्रभुने जमणे पडखे मंगळकुंभ थापे. पछी १०८ तांत-णानी दीवेट करी, दीपपात्र संपूर्ण गायना घी वडे भरी, तेमां चार खुणावाळुं रूपानाणुं मूकी, पूर्वे करेला माणिक्य दीप वडे दीवो प्रगटावे. ते दीप जिनबिंब आगळ मूके. ते दीवो २४ प्रहर सुधी अखंड राखवो जोइए. पछी सचित्र वरगडुआ (घडा) बिंब आगळ

मूके. प्रतिमा आगळ एक लाख अखंड चोखानो साथियो करे. पछी खमासमण दइ प्रणाम करे. देरासरना बनावनार कडिया, सुतार, सलाट प्रमुखने रीझ–दान दइ प्रसन्न करे.

पछी मुहपत्ति लइनें आठ थोयवडे देव वांदे [विध्यंतरे संघसहित गुरु वांदे] पछी आचार्य, उपाध्याय तथा सुविहित गीतार्थ गुरु प्रदत्त वर्धमान विद्याए सघळी करणी करी प्रतिमाना मस्तके वास निक्षेप करे. अने जो ते गुरुनो जोग न मळे तो त्रण नवकार भणी ब्रह्मचारी श्रावक वास निक्षेप करे. पछी पांच शेर सुखडी प्रभु आगळ मूके. पछी गुरु उभा थई संतिकरं० तथा बृहत्शांति० कहे. पछी ॐ बिंबस्थापकाय गृहाधिपतये सौख्यं कुरु कुरु स्वाहा। आ मंत्रे मन्त्रीने कंकुना छांटा नाखे. पछी संघसहित गुरु वेरे. पछी बिंबस्थापक गृहस्थ संतिकरं नी एक नवकारवाळी गणे. वखत पहोंचतो न होय तो सांजे गणे अथवा वहेलां गणी होय तो पण प्रमाण.

पछी १०८ कुवानां पाणी मुहूर्त्त पहेलां शुभ दिवसे जळयात्रा विधिए, यथाशक्ति महोत्सव करी, लाव्यां होय ते पाणी गंगाजल युक्त करी, पंचामृत मेळवी स्नात्र भणावे. विधि प्रमाणे आरति मंगळ दीवो उतारे. पछी नैवेद्य मूके. तेमां पांच जातनी सुखडी, लापसी, सोपारी १०८, श्रीफळ ९, अनेक जातनां उत्तम फळ २४, सर्व जातना मेवा २४ ए संख्याए मूके. सिद्धचक्रनीं पूजा करे. गुरुनी नवांग पूजा करे. यथाशक्ति समस्त संघने पहेरामणी करे. नहींतर दश दिक्पाळ आदिकनी आह्वानादि क्रिया करनारने पहेरामणी करे. अथवा जघन्यथी चारने तो वस्त्र पंचांग पसाय आभरण मुद्रिका प्रमुख आपी भक्ति जणावे. पछी गुरु उदात्त स्वरे अजितशांति० स्तवन भणे. पछी घणा श्रावक स्नान करी जिन पूजे. प्रभुमुख जोइ यथाशक्ति द्रव्य भेट करे. त्यां विधि साचवतां घणी

वेळा थइ जाय ते कारणे मुहूर्त्त वेळाए ज प्रभु थाप्या पछी अनंतर म्हों जोयणां करे. पछी गुरु, संघसहित त्रण खमासमण दई इरियावही० पडिक्कमे. चार थोये देव वांदे. थोय जे मूळ नायक थाप्या होय ते प्रभुनी कहे. पछी बेसी नमुत्थुणं० कही जयवीयराय पर्यन्त कहे. स्तवने मोटी शांति बोले. पछी गुरु उभा थइ क्षेत्रदेवना आराधनार्थं करेमि काउस्सग्गं अन्नत्थ० कही एक लोगस्सनो काउस्सग्ग सागरवरगंभीरा लगी करी–पारी नमोऽर्हत्० कही नीचेनी स्तुति बोलेः—

यस्याः क्षेत्रं समाश्रित्य, साधुभिः साध्यते क्रिया । सा क्षेत्रदेवता नित्यं, भूयान्नः सुखदायिनी ॥१॥

पछी एक प्रगट नवकार कही भुवणदेवयाए करेमि काउस्सग्गं अन्नत्थ० कही एक लोगस्सनो काउस्सग्ग सागरवर–गंभीरा लगी करी–पारी नमोऽर्हत्० कही नीचेनी स्तुति बोलेः–

ज्ञानादिगुणयुतानां, नित्यं स्वाध्यायसंयमरतानाम् । विदधातु भुवनदेवी, शिवं सदा सर्वसाधूनाम् ॥२॥

पछी एक प्रगट नवकार कही खमासमण दइ क्षुद्रोपद्रवसमावणी करेमि काउस्सग्गं अन्नत्थ० कही एक नवकारनो काउस्सग्ग करी [विध्यंतरे उवसग्गहरंनो काउस्सग्ग चिंतवी) पारी नमोऽर्हत्० कही नीचेनी स्तुति बोलेः–

सर्वे यक्षाम्बिकाद्या ये, वैयावृत्यकरा जिने । क्षुद्रोपद्रवसंघातं, ते द्रुतं द्रावयन्तु मे ॥३॥

पछी एक प्रगट नवकार कही नीचेनी गाथाओ बोलेः–

उपसर्गाः क्षयं यान्ति, छिद्यन्ते विघ्नवल्लयः । मनः प्रसन्नतामेति, पूज्यमाने जिनेश्वरे ॥१॥

सर्वमंगलमांगल्यं, सर्वकल्याणकारणम् । प्रधानं सर्वधर्माणां, जैनं जयति शासनम् ॥२॥
एम कही नवकार० उवसग्गहरं० अने लोगस्स० फूल गुंथणीए सातवार कही नीचे वेसे. बिंबस्थापन महिमानो उपदेश दे.
पछी शेष अर्ध बलिबाकुला राखेला छे ते लइ देवता विसर्जन करे[1]. विसर्जन मंत्रः—
(१) ॐ नम इन्द्राय पूर्वदिगधिष्ठायकाय ऐरावणवाहनाय सहस्रनेत्राय वज्रायुधाय सपरिजनाय अमुक-
नगरे अमुकगृहे श्रीजिनबिंबप्रवेशमहोत्सवे पूजां बलिं गृहाण गृहाण स्वस्थानं गच्छ गच्छ स्वाहा ।
(२) ॐ नमो अग्निमूर्त्तये शक्तिहस्ताय मेषवाहनाय सायुधाय सपरिजनाय श्रीजिनबिंबप्रवेशमहोत्सवे
पूजां बलिं गृहाण गृहाण स्वस्थानं गच्छ गच्छ स्वाहा ।
(३) ॐ नमो यमाय दक्षिणदिगधिष्ठायकाय महिषवाहनाय दंडायुधाय कृष्णमूर्त्तये सपरिजनाय श्रीजिन-
बिंबप्रवेशमहोत्सवे पूजां बलिं गृहाण गृहाण स्वस्थानं गच्छ गच्छ स्वाहा ।
(४) ॐ नमो नैर्ऋताय खड्गहस्ताय शिववाहनाय सपरिजनाय श्रीजिनबिंबप्रवेशमहोत्सवे पूजां बलिं गृहाण
गृहाण स्वस्थानं गच्छ गच्छ स्वाहा ।
(५) ॐ नमो वरुणाय पश्चिमदिगधिष्ठायकाय मकरवाहनाय पाशहस्ताय सपरिजनाय श्रीजिनबिंबप्रवेश-
महोत्सवे पूजां बलिं गृहाण गृहाण स्वस्थानं गच्छ गच्छ स्वाहा ।

१ जो ते दिवसे सतर क अष्टोत्तरी स्नात्र के शांतिस्नात्र होय तो ते पूर्ण थया पछी आ दिक्पालनुं विसर्जन करे.

(६) ॐ नमो वायवे वायवीपतये ध्वजहस्ताय हरिणवाहनाय सपरिजनाय श्रीजिनबिंबप्रवेशमहोत्सवे पूजां बलिं गृहाण गृहाण स्वस्थानं गच्छ गच्छ स्वाहा।

(७) ॐ नमो धनदाय उत्तरदिगधिष्ठायकाय नरवाहनाय गदाहस्ताय सपरिजनाय श्रीजिनबिंबप्रवेशमहोत्सवे पूजां बलिं गृहाण गृहाण स्वस्थानं गच्छ गच्छ स्वाहा।

(८) ॐ नम ईशानाय ऐशानीपतये त्रिशूलहस्ताय वृषभवाहनाय सपरिजनाय श्रीजिनबिंबप्रवेशमहोत्सवे पूजां बलिं गृहाण गृहाण स्वस्थानं गच्छ गच्छ स्वाहा।

(९) ॐ नमो ब्रह्मणे ऊर्ध्वलोकाधिष्ठायकाय राजहंसवाहनाय सायुधाय सपरिजनाय श्रीजिनबिंबप्रवेशमहोत्सवे पूजां बलिं गृहाण गृहाण स्वस्थानं गच्छ गच्छ स्वाहा।

(१०) ॐ नमो नागाय पातालनिवासाय पद्मवाहनाय सायुधाय सपरिजनाय श्रीजिनबिंबप्रवेशमहोत्सवे पूजां बलिं गृहाण गृहाण स्वस्थानं गच्छ गच्छ स्वाहा।

आ प्रमाणे विसर्जन करे. पछी विसर्जन मुद्राए हाथ जोडी नीचेनो श्लोक बोले:—

देवदेवार्चनार्थाय, पुराऽऽहूता हि ये सुराः। ते विधायार्हतां पूजां, यान्तु सर्वे यथाऽऽगतम् ॥२॥

एम कही नमस्कार करे.

पछी प्रभावना करे. संघ सहित गुरुने घेर तेडीने अन्न-वस्त्रथी पडिलाभे. स्वामिवात्सल्य करे. संघने केसरना छांटणां करे. श्रीफळ तंबोळ दइने विसर्जन करे. संध्यावेळाए अथवा रात्रे प्रवेशकारक गृहस्थ मूळनायकना नामनी एक नवकारवाळी गणे. दश दिवस सुधी नित्य स्नात्र भणावे. नित्य सांजे सांझी अने सवारे प्रभातियां-गीत सधवा स्त्रीओ गाय. तेमने तंबोळ देवा. दशे दिवस रात्रि-जागरण करे. तेम हमेशां न बने तो त्रीजे, पांचमे, नवमे दिवसे तो अवश्य करे. दश दिवस सुधी एक भक्त आयंबिल प्रमुख तप करे. न थाय तो अन्य पासे करावे. नवमे दिवसे कुटुंबमां सर्वने आयंबिल करावे. दिन दशमां जो शक्ति होय तो अष्टोत्तरी स्नात्र करावे, तो ते घणुं श्रेयस्कर जाणवुं. दश दिवस सुधी नित्य १०८ नवकार अने १०८ उवसग्गहरं फूलगुंथणीए गणे. दश दिवस लगी मूळनायकनी नवकारवाळी गणे. दशमे दिवसे संध्या वखते अखंड चोखा एक पाली एटले सवा बे शेर, बुरु-खांड एक शेर, गायनुं घी शेर १, ए सर्व उत्तम पात्रमां मेळवी, गुरुनो योग मळे तो गुरु आदिक सहित, जिनगृह मंडपमां उभा रहे. गुरुनो योग न होय तो ब्रह्मचर्यनो धारक दक्ष श्रावक मंडपमां रही पात्रमांथी चोखा-घी-खांडनी पोश भरी समवसरणस्तव, सन्तिकरं तथा बृहत् शांति कहे।

## श्रीसमवसरण स्तव।

थुणिमो केवलिवत्थं, वरविज्जाणंदधम्मकित्तिऽत्थं। देविंदनयपयत्थं, तित्थयरं समवसरणत्थं ॥१॥
पयडिअसमत्थभावो, केवलिभावो जिणाण जत्थ भवे। सोहंति सव्वओ तहिं, महिमाजोयणमनिलकुमरा॥

वरिसंति मेहकुमरा, सुरहिजलं उउसुरा कुसुमपसरं। विरयंति वणा मणिकणग-रयणचित्तं महिअलं तो ॥३॥
अब्भिंतर मज्झ बहिं, तिवप्पमणिरयणकणयकविसीसा। रयणज्जुणरूप्पमया, वेमाणिअजोइभवणकया ॥४॥
वट्टम्मि दुतीसंगुल, तित्तीसधणुपिहुल पणसयधणुचा। छधणुसय इगकोसं-तरा य रयणमयचउदारा ॥५॥
चउरंसे इगधणुसय, पिहु वप्पा सड्ढकोसअंतरिआ। पढमबिआ बिअतइआ, कोसंतर पुव्वमिव सेसं ॥६॥
सोवाण सहसदस कर-पिहुच गंतुं भुवो पढमवप्पो। तो पन्ना धणु पयरो, तओ अ सोवाण पण सहसा ॥७॥
तो बिय वप्पो पन्ना-धणु पयर सोवाण सहसपण तत्तो। तइओ वप्पो छस्सय-धणु इगकोसेहिं तो पीढं ॥८॥
चउदार तिसोवाणं, मज्झे मणिपीढयं जिणतणुचं। दोधणुसय पिहुदीहं, सड्ढदुकोसेहिं धरणिअला ॥९॥
जिणतणुबारगुणुच्चो, समहिअ जोअणपिहू असोगतरू। तयहो य देवच्छन्दो, चउसीहासण सपयपीढा ॥१०॥
तदुवरि चउ छत्ततिआ, पडिरूवतिगं तहट्ठ चमरधरा। पुरओ कणयकुसेसय-ट्ठिअ फालिअ धम्मचक्कचउ ॥११॥
झयछत्तमयरमङ्गल-पंचालीदामवेइवरकलसे। पइदारं मणितोरण-तिअ धूवघडी कुणंति वणा ॥१२॥
जोयणसहस्स दंडा, चउज्झया धम्ममाणगयसीहा। ककुभाइजुया सव्वं, माणमिणं निअनिअकरेण ॥१३॥
पविसिअ पुव्वाइ पहू, पयाहिणं पुव्वआसण निविट्ठो। पयपीढठवियपाओ, पणमिअतित्थो कहइ धम्मं ॥१४॥
मुणि वेमाणिणि समणी, सभवणजोइवण देविदेवतिअं। कप्पसुरनरित्थितिअं, ठंति ग्गेयाइ विदिसासु ॥१५॥
चउदेवि समणी उद्धट्ठिआ, निविट्ठा नरनरित्थिसुरसमणा। इय पण सग परिस सुणन्ति, देसणं पढमवप्पंतो ॥

इय आवस्सयवित्ती, वुत्तं चुन्नीइ पुण मुणि निविट्ठा। वेमाणिणि समणी दो, उड्ढा सेसा ठिआ उ नव ॥१७॥
बीअन्तो तिरि ईसाणि, देवच्छन्दो अ जाण तइअन्तो। तह चउरंसे दु दु वावी, कोणओ वट्टि इक्किक्का ॥१८॥
पीअसिअरत्तसामा, सुरवणजोइभवणा रयणवप्पे। धणुदंडपासगयहत्थ, सोमजमवरुणधणयक्खा ॥१९॥
जयविजयाजिअअपरा–जिअत्ति सिअअरुणपीअनीलाभा। बीए देवीजुअला, अभयंकुसपासमगरकरा ॥२०॥
तइअ वहि सुरा तुंबरु-खट्टंगि कवाल जडमउडधारी। पुव्वाइदारवाला, तुंबरुदेवो अ पडिहारो ॥२१॥
सामन्नसमोसरणे, एस विही एइ जइ महिड्ढिसुरो। सव्वमिणं एगोऽवि हु, स कुणइ भयणेयरसुरेसु ॥२२॥
पुव्वमजायं जत्थ उ, जत्थेइ सुरो महिड्ढिमघवाई। तत्थोसरणं नियमा, सययं पुण पाडिहेराइं ॥२३॥
दुत्थिअ समत्थ अत्थिअ, जणपत्थिअअत्थसत्थसुसमत्थो। इत्थं थुओ लहु जणं, तित्थयरो कुणउ सुपयत्थं ॥२४॥

। इति श्री समवसरण स्तवं।

ए त्रणनो पाठ कही मंडप मध्ये वृष्टि करे. आ प्रमाणे त्रणवार थइ सर्वेनी वृष्टि करवी. पछी हाथ जोडी आ प्रमाणे कहेः—

या पाति शासनं जैनं, सद्यः प्रत्यूहनाशिनी। साऽभिप्रेतसमृद्ध्यर्थं, भूयाच्छासनदेवता ॥१॥
आह्वानं नैव जानामि, न जानामि विसर्जनम्। पूजार्चां नैव जानामि, त्वं गतिः परमेश्वरि ॥२॥
आज्ञाहीनं क्रियाहीनं, मन्त्रहीनं च यत्कृतम्। तत्सर्वं कृपया देवि, क्षमस्व परमेश्वरि ॥३॥

एम कही दीप मध्ये घी पूरी पाछे पगे नवकार बोलतां बोलतां बहार आवे. जिनगृहद्वार बंध करे. तालुं साचवे. ते द्वार प्रभात लगे उघाडवां नहीं. पछी आखी रात्रि रात्रिजागरण करे. प्रभाते घरधणी श्रीफळ रूपियो लइ देवगृह उघाडे. श्रीफळ रूपियो भेट करे. तंदुल वृष्टि जे करी छे ते जयणापूर्वक लइने ओळंगाय नहीं तेवे ठेकाणे परठवे. पछी घेर आवी न्हाइ धोइ अष्टप्रकारी पूजा करे. पछी घेर आवी पोताना कुटुम्बने हर्ष–जमण दे. फरी वर्ष दिवसे ते दिवस आवे त्यारे विशेष प्रकारे पूजा, रात्रिजागरण वगेरे करे.

। इति श्री जिनचैत्ये तथा जीर्णचैत्ये बिंबप्रवेशविधिः ।

## अथ नवीन प्रासादे नवीन जिनबिंब तथा प्राचीन जिनबिंब स्थापन विधि

बिंबप्रवेशनी पेठे दश दिवस पहेलां उत्सव मांडीए. नित्य त्रिकाळे सप्त स्मरण गणवां. त्रिकाळ जीरावली पार्श्वनाथ मंत्रे कंकु मन्त्री छांटा दे. विशेष धूप दशांगादि परिमल उखेववो. एम करतां मुहूर्तना त्रण दिवस बाकी रहे त्यारे शुभ लग्ने अखंड चोखा शेर पांचना अख्याणां पांच जुदा जुदा थाळमां लेवां अने तेमां पांच श्रीफळ मूकवां. तथा स्थापनामां एक चोखंडो रूपियो मूकवो. पछी शेवनने पाटले कूर्म मूर्ति आळेखी, ज्यां जिनपीठ होय त्यां चार खूणे चार अने एक आगळ एम पांच अख्याणां स्थापीए. पछी भूमिशुद्धि मंत्रे पीठ उपर वास निक्षेप करे. ते उपर समूळो दर्भ, सरसव, धरो, चाकनी माटी, वृषभशृंगनी माटी प्रमुख मंगळ द्रव्य मूकी ते उपर कूर्मनी मूर्तिनो पट्टक कूर्म मन्त्रे स्थापे. कूर्म मंत्र आ प्रमाणेः—

ॐ कूर्माय धात्रीधरणक्षमाय शेषचक्रप्रतिष्ठिताय ॐ क्षाँ क्षीँ याँ यीँ लाँ लीँ राँ रीँ नमः स्वाहा कूर्म शर्म

ॐ क्षाँ क्षीँ याँ यीँ लाँ लीँ राँ रीँ नमः स्वाहा कूर्म शर्मे निजपृष्ठे प्रासादं रक्ष निजपृष्ठे प्रासादं धारय धारय स्वाहा ॐ क्षाँ क्षीँ याँ यीँ लाँ लीँ राँ रीँ नमः स्वाहा कूर्म शर्मे निजपृष्ठे प्रासादं रक्ष रक्ष धारय धारय स्वाहा।

आ मंत्रे सातवार पीठ मंत्रित करी स्थापनीय मुद्राए कूर्म स्थापे. त्यारपछी उत्तराभिमुख अथवा पूर्वाभिमुख चैत्यवंदन करवुं. पछी वाजित्रनाद पूर्वक मोटा स्वरे गीतगान करवुं. पछी गुरु वर्धमान विद्यावडे वासाधिरोपण करे. वास नवो उत्तम केसर, सुखड ने घरासनो करवो. पछी चैत्यवंदन करे. पछी गुरु धर्मदेशना आपे, प्रासादनिर्माणनुं फळ कहे. पछी गृहस्थ सुतार, कडिया, सलाट वगेरेने सन्मान पूर्वक प्रसन्न करे. सहुने पहेरामणी करे. पछी लघु स्नात्र करे पछी एक कोरा कुंभमां पांचशेर अखण्ड चोखा, श्रीफळ एक, चोखंडो रूपियो एक मूकी, वाजित्र वाजते वाजते, गंधर्वने दान देते ए कुंभ ज्यां मूळ गभारो होय त्यां लावी पधरावे. पछी जे स्थाने देव बेसाडवा होय त्यां विशेष धूप करे. संतिकरं स्तवन भणे. पछी प्रासादने चारे खुणे उभा रहीने दरेक खूणे पूरुं तिजयपहुत्त० स्तोत्र भणे. कंकु मन्त्री सर्वत्र छांटे. आ सर्व नवीन प्रासाद स्थापवानो विधि छे.

। इति नवीन प्रासाद स्थापन विधि।

हवे जो ते प्रासादमां नवीन बिंब स्थापवुं होय तो "प्रतिष्ठाकल्प"मां कहेल विधि प्रमाणे विधि करवो. प्रतिष्ठानो नंद्यावर्त स्थापवो. अढार करणी श्रावकनी अने चार करणी साधुनी सर्व विधि साचववी. बिंब प्रतिष्ठा कराव्या पछी शुभ दिवसे पूर्वोक्त विधि साचवी ज्यां कूर्म स्थापना करी छे त्यां पहेलां सर्व दिशाए बलि-क्षेप करवो. पछी ते ज मूळ नायक देवनुं आठ स्तुतिए देववंदन

## अथ अष्टोत्तरी शत स्नात्र [बृहत् स्नात्र] विधि

मुहूर्तने दिवसे प्रभाते अंग अवयवे करी पूर्ण, चक्षु प्रमुख खोड रहित, डांम प्रमुख लांछन विनाना १०८ स्नात्रिया मेळववा. तेमांथी चार अति निपुण, स्पष्ट वक्ता, अखंड शिखा (चोटली) युक्त एवा वृद्ध श्रावक, शुद्ध जळ हाथमां लइ नीचेनो मंत्र बोलेः—

ॐ ह्रीँ अमृते अमृतोद्भवे अमृतवर्षिणि अमृतं स्रावय स्रावय स्वाहा ।

आ मंत्रे सात वार मंत्रीने जळ शुद्ध करे. पछी—

ॐ ह्रीँ यक्षाधिपतये नमः ए मंत्रे सातवार दातण मंत्री दातण करे, मुखशुद्धि करे. पछी मंत्रित जळे अंजलि भरी ॐ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ कामदेवाधिपते ममाभीप्सितं पूरय पूरय स्वाहा ।

ए मंत्र सातवार भणी मुख प्रक्षालन करे. पछी मंत्रित जळ लइ, पूर्व सन्मुख वेसी, सुगंध तेल तथा आमळा प्रमुखनुं चूर्ण तथा उपलेट प्रमुख उगटणे विधिपूर्वक तैलमर्दनादिक करी मंत्रित जळे स्नान करे.

ॐ ह्रीँ अमले विमले विमलोद्भवे सर्वतीर्थजलोपमे पां पां वां वां अशुचिः शुचिर्भवामि स्वाहा ।

आ मंत्र त्रणवार भणी हाथवडे सर्वांगने स्पर्श करे. आ प्रमाणे त्रणवार स्पर्श करीने मंत्रस्नान करे. पछी नवां, शुद्ध, धोयेलां बे वस्त्र हाथमां लइ ॐ ह्रीँ आँ क्रौँ नमः। ए मंत्रे त्रणवार मंत्रीने वस्त्र पहेरे.

पछी ते वृद्ध स्नात्रिया श्रावक बीजा त्रण श्रावक पासे जुदा जुदा केसर घसावे. तेनी त्रण जुदी वाटकी भरावे. तेमांथी एक देव

पूजा माटे, एक तिलकादिने माटे अने एक ग्रहादिकने आळेखवाने माटे. तथा बीजा बे श्रावको पासे पींजेला शुद्ध रूनी २१४ दिवेट भेगी करावे. तथा बे मोटी गेवाछ्रनी दिवेट एम कुल २१६ करावे. विध्यंतरे १०८ सुतरना तारवाळी बे दिवेट करावे. सूतनो दडो लइने वृद्ध स्नात्रिया, दक्ष पुरुष कंकणमंत्रे १०८ वार अथवा २१ वार मंत्रे. कंकण मंत्रः—

ॐ ह्रीँ अवतर अवतर सोमे सोमे कुरु कुरु वल्गु वल्गु सुमणे सोमणसे महुमहुरे ॐ कवली कः क्षः स्वाहा।

आ प्रमाणे मंत्रीने बधा स्नात्रियाने हाथे बांधे. तथा बीजां स्नात्र उपयोगी सर्व उपकरणोने बांधे. कंकण बंधावे तेने जघन्यथी आठ दिवसना ब्रह्मचर्यनुं पच्चख्खाण करावे.

पछी चार मुख्य श्रावक तिलकनुं केसर हाथमां लइ ॐ आँ ह्रीँ क्रौँ अर्हते नमः। ए मंत्र सातवार कही केसर मंत्री पोते अने बीजा सर्व स्नात्रियाने तिलक करे.

पछी चार वृद्ध स्नात्रिया श्री आदिदेव प्रमुखनी चार प्रतिमाने देरासरे राखी होय त्यां सामान्ये पूजी चारे श्रावक एक एक प्रतिमा थाळमां लइ ज्यां पीठस्थानक छे त्यां ॐ नमो अर्हत्परमेश्वराय चतुर्मुखाय परमेष्ठिने दिक्कुमारीपरिपूजिताय देवाधिदेवाय त्रैलोक्यमहिताय अत्र पीठे तिष्ठ तिष्ठ स्वाहा।

ए मंत्र त्रणवार भणी एक एक प्रतिमा अनुक्रमे थापे. पछी शुद्ध अख्याणा चार, श्रीफळ चार सहित ढोइए. प्रत्येक अख्याणामां पांचशेर चोखा लेवा. ते पंक्तिथी थापीए. अथवा विध्यंतरे परनाळिया बाजोठना चारे पाये थापीए. उत्तम धूप करीए.

। इति प्रतिमा स्थापन विधि।

पछी माटीना अथवा त्रांबाना शरावलां (रामपातर) बे कोरां लेवां अने ते दीपपात्रमां सधवा स्त्री पासे गायनुं घी पूरावबुं. अने पहेलां करावेली गेवाखत्रनी वाट (दिवेट) तेमां मूकाववी. तेनी पासे दीवा अजवाळवा. पछी ते बे दीवाने वृद्ध स्नात्रीया श्रावक-

ॐ घृतमायुर्वृद्धिकरं, भवति परं जैनदृष्टिसंपर्कात्। तत्संयुक्तः प्रदीपः, पातु सदा भावदुःखेभ्यः ॥१॥ स्वाहा।

आ मंत्र दरेक वखते त्रणवार भणीने स्थापना करे. पछी ते बे दीप एक सधवा स्त्री पासे, एक जिनबिंबना जमणे पडखे अने एक डावे पडखे दीवी पर मूकावीए. पछी केसर छंटावी दीपपूजन करीए. दीप-पात्र खसे नहीं ते माटे दीवीना चाडा साथे गेवा-सूत्र बांधी स्थिर करवुं.

पछी वृद्ध श्रावक अन्य स्नात्रिया बेने कंकणादिक बांधे. देवद्रव्यनी वृद्धि करावे. घी भरेली वाढी हाथमां आपे. ते बे श्रावक डाबा तथा जमणा दीवा पासे उभा रहे. स्नात्रनी क्षणे क्षणे घी पूरता जाय. एम जे जे उपकरण श्रावकना हाथमां आपवां ते ते श्रावक पासे देवद्रव्यनी वृद्धि करावीने आपवां.

। इति घृतदीपस्थापन विधि।

पछी वृद्ध श्रावक भगवंतना जमणे पासे पाटला उपर बेसी, माटली धोइ धूपी माटली बीजा श्रावक पासे झाली रखावे. पछी तेमां वृद्ध श्रावक सुखड-केसरनो साथियो करे. ते उपर ॐ ह्रीँ श्रीँ सर्वोपद्रवान् नाशय नाशय स्वाहा। ए मंत्र लखे. पछी

सुगंध जळ, पुष्प, चंदनथी अधिवासित रूपानाणुं अथवा पंचरत्ननी पोटली नीचेना मंत्रथी मंत्रेला वासवडे पूजीने माटलीमां मूकवी. मंत्रः—

ॐ ह्रीँ नानारत्नौघयुतं, सुगंधिपुष्पाधिवासितं नीरं । पतताद्विचित्रवर्ण, मंत्राढयं स्थापनाबिंबे ॥१॥ स्वाहा ।

पछी माटली आडणी अथवा पछेडीनी ढंढोणी करीने ते उपर मूकवी. त्यारपछी ॐ ह्रीँ ठः ठः ठः स्वाहाः । ए मंत्र सात वार भणी स्थापनीय मुद्राए गोळीने प्रतिमाजीना जमणे पडखे स्थापन करे. तथा वासफूले स्थापन मंत्र भणी पूजे.

पछी पंचामृत एकठा करी नीचेनो मंत्र बोलेः—

ॐ ह्रीँ जिनबिंबोपरि निपतत्, घृतदधिदुग्धादिद्रव्यपरिपूतं । गंधोदकसंमिश्रं, पंचसुधा(धं) हरतु दुरितानि ॥

आ मंत्र त्रणवार मंत्रीने पंचामृत माटलीमां पधराववुं [तथा विध्यंतरे तांबाकुंडीमां सधवा स्त्री पासे पंचामृत एकठुं करावी पछी माटलीमां पधरावे].

पछी ॐ ह्रीँ सर्वौषधिसंयुक्तया, सुगंधया घर्षितं सुगतिहेतोः । स्नपयामि जैनबिंबं, मंत्रिततन्नीरनिवहेन ॥

ए मंत्रे मंत्री, वास वडे पूजी, सर्वौषधि माटलीमां मूके. पछी १०८ तीर्थनां जळ मंत्रित करवानो मंत्रः—

ॐ ह्रीँ भः जलधिनदीद्रहकुंडेषु, यानि तीर्थोदकानि शुद्धानि । तैर्मंत्रसंस्कृतैरिह बिंबं स्नपयामि शुद्धयर्थम् ॥ स्वाहा ।

आ मंत्रे सातवार मंत्री वृद्ध श्रावक पोते अथवा सधवा स्त्री पासे माटलीमां पूरावे. पछी समूळो डाभ, मींढळ, मरडाशिंगी, ऋद्धिवृद्धि साथे, गेवाद्यत्र वडे कंकणमंत्रे मंत्री माटलीने कांठे बांधीए. पछी ते माटली उपर पान श्रीफळ मूकीने माटलीने दरीयाइ तास्ते ढांकीए. पछी ते माटलीने चंदनवडे पूजीए, फूल माळा पहेरावीए. १०७ नवाणनुं पाणी जे वध्युं होय ते, लघु मंगळकुंभने पुंजी तेमां भरी अणवरनी पेठे पडखे स्थापीए. पछी दक्ष श्रावक सात ( नवकार, उवसग्गहरं, संतिकरं, तिजयपहुत्त, नमिऊण, अजियसंति अने भक्तामर ) स्मरण गणे. अने बीजो श्रावक पासे बेसी अगरनो धूप करे. सात स्मरण गणतां वच्चे बोलवुं नहीं. स्थिर चित्ते गणवां.

। इति मंगल कलश स्थापन विधि ।

आ पछी नव ग्रह, दश दिक्पाळ, अष्ट मंगळ अने घंटाकर्णना पाटलाओ, जे पूर्वे पूज्या छे ते, पीठ सन्मुख लावी मुहूर्तने दिवसे प्रभाते वासफूले पूजी प्रतिमा पासे ऊंचे आसने स्थापीए. पछी दश दिक्पाळनुं विस्तारथी आह्वान करीए. (आ विधि पृष्ठ ५२ उपरथी जोइ लेवो )

पछी वृद्ध श्रावक स्नात्रिया शुद्ध पुरुष मर्वे मुहपत्ति लइ इरियावही० पडिकमे. चैत्यवंदन करी चार थोइथी देव वांदे. पछी नमुत्थुणं० कही स्तवनने ठेकाणे लघुशांति कहे. पछी जयवीयराय० कहे. त्यारपछी एक त्रांबाकुंडी लइ पवित्र जळे धोइ धूपी गेवाद्यत्र वांधी तेमां यक्षकर्दम वडे अथवा केसरवडे ॐ ह्रीँ नमः ए मंत्र लखवो. ते उपर कुंकुम अने वासफूले पूजित नारियेळ मूकवुं.

पछी ते चांचकुंडी परनाळियानी पीठ आगळ मूकवी. पछी स्नात्रियाओने आभरण पहेराववां, आभरण न होय तो केसरना करवां. पछी आठ दक्ष श्रावकने शकलीकरण करवुं. ते आ प्रमाणे:—

ॐ नमो अरिहंताणं हृदयाय नमः। एम कही हृदयने स्पर्श करवो. ॐ नमो सिद्धाणं शिरसे नमः स्वाहा। एम कही मस्तकने स्पर्श करवो. ॐ नमो आयरियाणं शिखायै वौषट्। एम कही शिखा (चोटली)ने स्पर्श करवो। ॐ नमो उवज्झायाणं कवचाय हुं। एम कही सर्वांगने स्पर्श करी कवच करीए. ॐ नमो लोए सव्वसाहूणं अस्त्राय फट्। एम कही अस्त्र मुद्राए अस्त्र धारण करीए. पछी एक दक्ष श्रावक उंचे स्वरे वज्रपंजर स्तोत्र कहे अने बीजा सांभळे.

## अथ वज्रपञ्जरस्तोत्रम्[1]

परमेष्ठिनमस्कारं, सारं नवपदात्मकम्। आत्मरक्षाकरं वज्र-पञ्जराभं स्मराम्यहम् ॥१॥
ॐ नमो अरिहंताणं, शिरस्कं शिरसि स्थितम्। ॐ नमो सिद्धाणं, मुखे मुखपटं वरम् ॥२॥
ॐ नमो आयरियाणं, अङ्गरक्षातिशायिनी। ॐ नमो उवज्झायाणं, आयुधं हस्तयोर्दृढम् ॥३॥
ॐ नमो लोए सव्वसाहूणं, मोचके पादयोः शुभे। एसो पंच नमुक्कारो, शिला वज्रमयी तले ॥४॥

---
१ आ स्तोत्र बोलतां जे जे अंगनुं नाम आवे ते ते अंगने हस्तवडे स्पर्श करवो.

सव्वपावप्पणासणो, वप्रो वज्रमयो बहिः। मङ्गलाणं च सव्वेसिं, खादिराङ्गारखातिका ॥५॥
स्वाहान्तं च पदं ज्ञेयं, पढमं हवइ मङ्गलम्। वप्रोपरि वज्रमयं, पिधानं देहरक्षणे ॥६॥
महाप्रभावा रक्षेयं, क्षुद्रोपद्रवनाशिनी। परमेष्ठिपदोद्भूता, कथिता पूर्वसूरिभिः ॥७॥
यश्चैवं कुरुते रक्षां, परमेष्ठिपदैः सदा। तस्य न स्याद् भयं व्याधि–राधिश्चापि कदाचन ॥८॥

। इति वज्रपञ्जरकवच ।

आ प्रमाणे शकलीकरण करी मींढळ कंकण समंत्रे मंत्री बांधे. पछी एक श्रावक केसर, पुष्प हाथमां लइ दिग्बंध करे. तेमां प्रथम अ आ पूर्वस्यां एम कही पूर्व सन्मुख केसरना छांटा नाखवा पुष्पो उडाडवां. ( आ प्रमाणे दरेक दरेक दिशा वखते करवुं) इ ई दक्षिणस्यां। उ ऊ पश्चिमे। ए ऐ उत्तरे। ओ औ ऊर्ध्वे। अं अः अधः।

पछी ग्रीवासूत्र लइ ॐ ह्रीँ क्ष्वीँ सर्वोपद्रवाद् बिंबं रक्ष रक्ष स्वाहा। ए मंत्रे सातवार मंत्री चारे दिशाना थांभले अथवा पीठना चार पाये बांधीए. पछी दीवाने केसर तथा पुष्पवडे पूजीए. पछी अग्रेसर चार पुरुषो हाथमां चार लघु कळश लइ धोइ धूपी चंदने पूजी, कंकण बांधी फूलमाळ पहेरावी, तेमां रूपामहोर मूकी, एक जण मंगळ माटलीमांथी पाणी लावी चार कळश भरे. ते चार श्रावक शांतिकविधि स्नात्र होय तो, नमोऽर्हत्० कहीने नीचेनी चार गाथाओ बोलेः—

- १. शरीरजा। पाठांतर. २ कोइ पण प्रकारना उपद्रवनी शांतिने माटे जे स्नात्र करवामां आवे तेने शांतिकविधि स्नात्र कहे छे

बिंब प्रवेश विधि

॥१२९॥

ॐ वरकणयसंखविद्दुम-मरगयघणसंन्निहं विगयमोहं। सत्तरीसयं जिणाणं, सव्वामरपूईयं वंदे स्वाहा ॥१॥
ॐ तं संतिं संतिकरं, संतिन्नं सव्वभया। संतिं थुणामि जिणं, संतिं विहेउ मे स्वाहा ॥२॥
ॐ रोगजलजलणविसहर-चोरारिमइंदगयरणभयाइं। पासजिणनामसंकित्तणेण पसमंति, सव्वाइं स्वाहा ॥३॥
ॐ भवणवइवाणमंतर-जोइसवासिविमाणवासि य। जे केई दुट्ठ देवा, ते सव्वे उवसमन्तु मम स्वाहा ॥४॥

आ चार गाथा भणी चारे श्रावक चारे कळशे चारे प्रतिमाने संघाते अभिषेक करे.

आ चार गाथा भणी चारे श्रावक चारे कळशे चारे प्रतिमाने संघाते अभिषेक करे.

जो पौष्टिक विधिस्नात्र[1] होय तो ॐ नमोऽर्हते परमेश्वराय चतुर्मुखाय परमेष्ठिने दिक्कुमारीपरिपूजिताय देवा-धिदेवाय अमुकगृहे[2] वृद्धस्नात्रे स्नात्रस्य कर्तुः कारयितुश्च ऋद्धिवृद्धिकल्याणं कुरु कुरु स्वाहा। आ प्रमाणे बोलवु

विमलकेवलभासनभास्करं, जगति जंतुमहोदयकारणम्[3]।
जिनवरं बहुमानजलौघतः, शुचिमनः स्नपयामि विशुद्धये ॥

१. कोइ पण प्रकारना उपद्रव वगेरनी शांतिना समये जे अष्टोत्तरी स्नात्र भणाववामां आवे तेने पौष्टिकविधिस्नात्र कहे छे.
२ आ 'अमुकगृहे' शब्दना स्थाने 'अस्मिन् जंबूद्वीपे, दक्षिणार्धभरते, मध्यखंडे, अमुकदेशे, अमुकनगरे, अमुकप्रासादे' अने जो समु-दायथी होय तो 'श्रीसंघगृहे' अने एक जण तरफथी होय तो 'तस्य गृहे' ए प्रमाणे कहेवुं. आमां ज्यां ज्यां 'अमुक' शब्द आवे त्यां ते ते देश, नगर अने प्रासादनुं विशिष्ट नाम मूकीने बोलवुं. ३ आ पाठ क्रीयाकारक मनमां बोले एवी प्रवृत्ति छे.

दशदिक्पाल विसर्जन विधि

॥१२९॥

स्नात्र करतां जगद्गुरु शरीरे, सकळ देवे विमळ कळश नीरे, आपणा कर्ममळ दूर कीधा, तेणे ते विबुध ग्रन्थे प्रसिद्धा;
हर्ष धरी अप्सरा वृंद आवे, स्नात्र करी एम आशिष भावे, जीहां लगे सुरगिरि जंबूदीवो, अमतणा नाथ जीवानुजीवो.

ॐ ह्रीँ श्रीँ परमात्मने अनन्तानन्तज्ञानशक्तये जन्मजरामृत्युनिवारणाय श्रीमते जिनेन्द्राय जलादिकं यजामहे स्वाहा।

आ अभिषेक मंत्र भणी चारे कळशे अभिषेक करे. अभिषेक करती वखते वे श्रावक ने बाजु चामर विंझे. वे श्रावक घंट वगाडे. बीजा वाजित्रो वगाडे. पाठ कहेतां छाना रहे. पाठ पूरो बोलाइ रहे एटले अभिषेक करे. ते पछी बीजा चार श्रावक चारे प्रतिमाने अंग लूछणां करे. चार वृद्ध श्रावक पूजा करे. बे बाजु राखेला दीवामां बे श्रावक घी पूरे. एक श्रावक धूप करे. बीजा चार श्रावक, एक मोटा बाजोठ उपर रातुं वस्त्र पाथरी ते उपर अखंड चोखानी ढगली करे, ते उपर पान मूके, ते उपर सोपारी तथा त्रांबानाणुं मूके. बीजो शुद्ध वस्त्र पाथरी, फळ मोदक एक एक सर्व जातनुं मूके. तथा जे जातनुं, सुखडी तथा मेवो वगेरे जे मेळव्युं होय तेनुं एक एक नंग चढावे. तथा एक श्रावक दरेक अभिषेक वखते यथाशक्ति लूंछणुं करी जैन याचकने आपे. आ प्रमाणे दरेक स्नात्र वखते करवुं.

पछी चंदन चढावी चार सेवंत्राना फूल प्रतिमाने माथे मूके. स्नात्र समये पण शिरप्रदेश फूले शून्य न राखवो. आ प्रमाणे १०८ वार दरेक अभिषेके जुदी जुदी पूजा करवी.

[अहीं कोइ ग्रामे अभिषेक जुदा करे, पूजा जुदा करे, अंगलूंछणां जुदा करे अने पाठ जुदा भणे छे. ते विधि उतावळुं स्नात्र पूरुं करवा माटे संभवे छे. पण बीजा कोइ ग्रन्थमां ए विधि देखातो नथी. मूळ विधि आठ श्रावकने शकलीकरण कर्युं छे ते ज पूजा वगेरे करे.] एम १०८ पूरा थया पछी जो माटलीमां पाणी वध्युं होय तो बीजा स्नात्रिया पासे तथा १०८ नाळवाना कळशे स्नात्र धणी पासे पखाळ करावीए. पछी खांड तथा उना पाणीवडे प्रतिमा शुद्ध करीए. पछी संक्षेपे पूजी स्नात्रकार चैत्यवंदन करे. स्तवननी जगाए अजियसंति० कहे. [विध्यंतरे आठ थोयवडे देव वांदे]

त्यारपछी अभिषेकना चार अथवा आठ कळश उगटी, धोइ, धूपी शुद्ध करीए. पछी तेमां सुगंधी पाणी भरी उत्तम फूल मूके. केसरना छांटा नाखे. अंगलूंछणे ढांके. वृद्ध श्रावक कुसुमांजलि सात भणावे. पछी आदिनाथ, अजितनाथ, शांतिनाथ अने पार्श्वनाथना चार कळश[1] क्रमसर भणावे, अथवा बे स्नात्र भणावी सुगंधी जळथी भरेला कळशथी स्नात्र करे. विशेष पूजा करे. कोरुं भाणुं एक मूके. पछी रांध्युं नैवेद्य सौभाग्यवती स्त्री पासे वाजते गाजते लावीने ढोवरावे. पछी विशेष दीवा अजवाळे. प्रभुने सिंहासने पधरावी, पूर्वे पूजित अष्ट मंगळ थापे. [अहीं विध्यंतरे दिक्पाळ पूज्या पछी अष्टमंगळ थापे छे.] पछी पुष्पवृष्टि करे. पछी विधिपूर्वक लूण पाणी उतारी, आरती तथा मंगळदीवो उतारवो. पछी चैत्यवंदन करवुं. स्तवनना स्थाने तिजयपहुत्त० कही जयवीयराय०कहेवा.

पछी अष्टोत्तरी स्नात्रना धणीने स्त्री सहित पीठ आगळ उभा राखी स्नात्रकारकना हाथ उपर कुंभ मूकवो. स्त्री स्वामीना खभा उपर हाथ अडाडीने उभी रहे. [अहीं कोइ गामे स्त्री–भर्तारना छेडाछेडी बांधे छे] ब्रह्मचारी होय तो एकलाना हाथ उपर पण

१ आ कळशो अमारा तरफथी प्रसिद्ध थयेल "स्नात्रपूजा कळशादिसंग्रह" नामना पुस्तकमां आपेल छे.

थापे. ते कुंभमां सुखडनो साथियो करी उपर रूपानाणु मूके. कुंभने कंठे ग्रीवासूत्र, ऋद्धि, वृद्धि प्रमुख बांधे, फूलमाळ पहेरावे. पछी एक मोटा नालवाळो कळश नवण–जळे भरी अखंड धाराए, स्नात्रकारकना हाथमां रहेला कुंभने भरे. अहीं बीजा बे श्रावक बे बाजु बे कळशवडे स्नात्रजळ मोटा कळशमां एवी रीते रेडता जाय के जेथी मोटा कळशनी धारा खंडित न थाय. धारा देवा मांडे एटले एक श्रावक मोटी शांतिनो पाठ पद–वर्ण शुद्ध रीते भणे. जेटली वारे कुंभ भराय अने शांतिपाठ पूरो थाय त्यांसुधी एक श्रावक नासिका चिंतावणीनो उपयोग देवरावे. पछी कुंभ उपर पूजित श्रीफळ मूके. ते उपर रातुं अथवा पीळुं वस्त्र ढांके. पछी शक्ति होय तो कुंभने बे हाथमां झाले, नहीं तो मस्तके धारण करे. तथा पूर्वे जे चार श्रावके ग्रह दिक्पाळ नोतर्या होय ते चारे श्रावक ग्रह दिक्पाल विसर्जन करे. तेमां प्रथम एक पूजक श्रावक ग्रहपट्टक पासे आवी विसर्जन मुद्रा करी—

ॐ नम आदित्याय सायुधाय सवाहनाय सपरिकराय पूजां वलिं गृहाण गृहाण स्वस्थानं गच्छ गच्छ स्वाहा।

आ प्रमाणे नवे ग्रहनुं पोतपोतानुं नाम लइने उपरना मंत्रथी विसर्जन करवुं.

पछी दिक्पाळना पट्ट आगळ पण एक पूजक पुरुष पोतपोताना विसर्जन मंत्रे विसर्जन करे, जेमके—

ॐ नम इन्द्राय सायुधाय सवाहनाय सपरिकराय पूजां वलिं गृहाण गृहाण स्वस्थानं गच्छ गच्छ स्वाहा।

आ प्रमाणे दशे दिक्पाळनुं जुदुं जुदुं नाम लइने विसर्जन करवुं.

त्यारपछी चार श्रावक, पूर्वे जे अर्ध वलि राखेल छे तेमांथी दशमो भाग नोखो पाडी, ए थाळ उपाडी जळ, धूप, दीप

वगेरे सर्व उपकरण लइ पूर्वे नोतर्या होय ते स्थानके आवी जे विधिए नोतर्या होय ते विधिए विसर्जन करवुं. पण एमां एटलो फेर समजवो के आह्वानने स्थाने गच्छ गच्छ बोले. जेमकेः—

ॐ नम इन्द्राय पूर्वदिगधिष्ठायकाय ऐरावणवाहनाय सहस्रनेत्राय वज्रायुधाय सपरिजनाय पूजां बलिं गृहाण गृहाण स्वस्थानं गच्छ गच्छ स्वाहा।

। इति श्री दश दिक्पाल विसर्जन विधि ।

पछी कुंभने धवळ मंगळ गातां, वाजित्र वगाडतां, दान आपतां, घरमां उंचे आसने पधरावी धूप दीप करीए. वधेलुं न्हवणनुं पाणी आखा घरमां छांटीए, घणा श्रावक माथे चढावे अने बीजा श्रावकोने वहेंची आपे. त्यारपछी बे श्रावको भूतबलि मन्त्रथी मंत्रेलो, रांधेला बलिनो जे दशांश राख्यो छे ते बलि घरमां अने बहार सघळे भूतबलि मंत्र भणवां भणतां वधावे (उछाळे). स्नात्रकारक कुंभ घरमां लइ जाय एटले बीजा स्नात्रिया चार थोयथी देव वांदे. स्तवनमां संतिकरं० स्तोत्र कहे. पछी संघभक्ति करवी. प्रभावना करवी. याचकने वस्त्रादिक आपवां. नैवेद्यनी रांधनारी बाइओने पटकूलादिक आपवां. ते वखते स्नात्रकारकना सगा-संबंधी होय ते स्त्री-भरथारने पहेरामणी करे. पछी गुरुसहित, संघ साथे, पीठ आगळ आवी, हाथ जोडी, नीचे प्रमाणे बोलेः—

ॐ आह्वानं नैव जानामि, न जानामि विसर्जनम्। पूजार्चां नैव जानामि, त्वं गतिः परमेश्वरि ॥१॥

ॐ आज्ञाहीनं क्रियाहीनं, मंत्रहीनं च यत्कृतम्। तत्सर्वं क्षमतां देवि, प्रसीद परमेश्वरि ॥२॥

सर्वमङ्गलमांगल्यं, सर्वकल्याणकारणम्। प्रधानं सर्वधर्माणां, जैनं जयति शासनम् ॥३॥

एम कही प्रणाम करे. पछी संघ सहित गुरुने घरे तेडी अशन-वस्त्रादिक वडे पडिलाभे. साधर्मी बंधुओने जमाडे.

[अहीं समाचारी विशेषे क्रियांतर घणां छे. ते देखीने व्यामोह न करवो. श्राद्धविधि, प्रतिष्ठाकल्प, जीर्ण स्नात्रकल्प, सामाचारी प्रमुख ग्रन्थोनुं अवलोकन करीने आ विधि योग्यरीते लख्यो छे. कोइ अरिहंत भक्ति साध्ये क्रियांतर होय तो साध्य शुभ होवाथी ते सफळ छे. गणधरसामाचारीमां पण घणो फेर छे. पण साध्य एक होवाथी सर्व सफळ छे. एम सर्व धर्मकृत्यमां जाणवुं. वळी विशेष एटलुं के बीजपल्लव गुरुपरंपराथी जाणवा.]

संवद्युगेन्दुनागेन्दु-प्रमिते माघवोज्ज्वले। पक्षे हि कविपंचम्यां, दर्भावत्यां पुरि स्थिते ॥१॥

पुण्यानुबन्धिपुण्याढ्य-पुण्यादिसिंधुसूरीणाम्। राज्ये प्राज्ञः सुज्ञानादि-सागराणां हि शिष्यकः ॥२॥

तेनेदं मंदमतिना, समुचितोऽष्टोत्तरीस्नात्रविधिमार्गः। ज्ञात्वा गुरुतोऽत्र यद्यदशुद्धं शोध्यं बुद्धिवरैः ॥३॥

॥ इति श्री अष्टोत्तरशतस्नात्र विधि ॥

## १८ अथ श्री शान्तिस्नात्र विधि

अथ प्रतिष्ठायां वा यात्रायां वा क्षुद्रोपद्रवशमनार्थमष्टाह्निकादौ शान्तिधारा कार्या

[प्रतिष्ठाने अवसरे, तीर्थयात्राने अवसरे अथवा अट्ठाइ प्रसंगे क्षुद्र उपद्रवनी शांतिने माटे शांतिस्नात्र करवुं.]

शुभ दिवसे विधिपूर्वक जळयात्रा करवी. (जळयात्रानो विधि पूर्वे कह्या प्रमाणे करवो.) पछी मुहूर्तने दिवसे प्रभाते स्नात्रकारक गृहस्थ अने डाम प्रमुख लांछन रहित एवा स्नात्रिया जघन्यथी ४ विधिपूर्वक स्नान करे ते आ प्रमाणेः–

ॐ ह्रीँ अमृते अमृतोद्भवे अमृतवर्षिणि अमृतं स्रावय स्रावय स्वाहा।

आ मंत्रे सात वार मन्त्री जळने शुद्ध करवुं. पछी–

ॐ ह्रीं यक्षाधिपतये नमः ए मंत्रे सातवार मन्त्री दातण करवुं. दातणवडे मुखशुद्धि करीने पछी मंत्रेला जळनी अजलि भरीः–

ॐ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ कामदेवाधिपतये इच्छितं पूरय पूरय स्वाहा। ए मंत्र सात वार भणी मुख प्रक्षालन करवुं.

पछी पूर्व दिशा सन्मुख बेसी तेल मर्दन करी पछीः–

ॐ ह्रीँ अमले विमले विमलोद्भवे सर्वतीर्थजलोपमे पां पां वां वां अशुचिः शुचिर्भवामि स्वाहा।

आ मंत्रनुं त्रण वार स्मरण करी हाथ वडे सर्वांगने स्पर्श करवो. एम त्रण वार स्पर्शी मंत्रस्नान करे.

सर्वमङ्गलमांगल्यं, सर्वकल्याणकारणम्। प्रधानं सर्वधर्माणां, जैनं जयति शासनम् ॥३॥

एम कही प्रणाम करे. पछी संघ सहित गुरुने घरे तेडी अशन–वस्त्रादिक वडे पडिलाभे. साधर्मी बंधुओने जमाडे.

[अहीं समाचारी विशेषे क्रियांतर घणां छे. ते देखीने व्यामोह न करवो. श्राद्धविधि, प्रतिष्ठाकल्प, जीर्ण स्नात्रकल्प, सामाचारी प्रमुख ग्रन्थोनुं अवलोकन करीने आ विधि योग्यरीते लख्यो छे. कोइ अरिहंत भक्ति साध्ये क्रियांतर होय तो साध्य शुभ होवाथी ते सफळ छे. गणधरसामाचारीमां पण घणो फेर छे. पण साध्य एक होवाथी सर्व सफळ छे. एम सर्व धर्मकृत्यमां जाणवुं. वळी विशेष एटलुं के बीजपल्लव गुरुपरंपराथी जाणवा.]

संवद्युगेन्दुनागेन्दु–प्रमिते माधवोज्ज्वले। पक्षे हि कविपंचम्यां, दर्भावत्यां पुरि स्थिते ॥१॥
पुण्यानुबन्धिपुण्याढ्य–पुण्यादिसिंधुसूरीणाम्। राज्ये प्राज्ञः सुज्ञानादि–सागराणां हि शिष्यकः ॥२॥
तेनेदं मंदमतिना, समुचितोऽष्टोत्तरीस्नात्रविधिमार्गः। ज्ञात्वा गुरुतोऽत्र यद्यदशुद्धं शोध्यं बुद्धिवरैः ॥३॥

॥ इति श्री अष्टोत्तरशतस्नात्र विधि ॥

## १८ अथ श्री शान्तिस्नात्र विधि

अथ प्रतिष्ठायां वा यात्रायां वा क्षुद्रोपद्रवशमनार्थमष्टाह्निकादौ शान्तिधारा कार्या

[प्रतिष्ठाने अवसरे, तीर्थयात्राने अवसरे अथवा अट्ठाइ प्रसंगे क्षुद्र उपद्रवनी शांतिने माटे शांतिस्नात्र करवुं.]

शुभ दिवसे विधिपूर्वक जळयात्रा करवी. (जळयात्रानो विधि पूर्वे कह्या प्रमाणे करवो.) पछी मुहूर्तने दिवसे प्रभाते स्नात्रकारक गृहस्थ अने डाम प्रमुख लांछन रहित एवा स्नात्रिया जघन्यथी ४ विधिपूर्वक स्नान करे ते आ प्रमाणेः—

ॐ ह्रीँ अमृते अमृतोद्भवे अमृतवर्षिणि अमृतं स्रावय स्रावय स्वाहा।

आ मंत्र सात वार मंत्री जळने शुद्ध करवुं. पछी—

ॐ ह्रीं यक्षाधिपतये नमः ए मंत्रे सातवार मंत्री दातण करवुं. दातणवडे मुखशुद्धि करीने पछी मंत्रेला जळनी अंजलि भरीः—

ॐ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ कामदेवाधिपतये इच्छितं पूरय पूरय स्वाहा। ए मंत्र सात वार भणी मुख प्रक्षालन करवुं.

पछी पूर्व दिशा सन्मुख बेसी तेल मर्दन करी पछीः—

ॐ ह्रीँ अमले विमले विमलोद्भवे सर्वतीर्थजलोपमे पां पां वां वां अशुचिः शुचिर्भवामि स्वाहा।

आ मंत्रनुं त्रण वार स्मरण करी हाथ वडे सर्वांगने स्पर्श करवो. एम त्रण वार स्पर्शी मंत्रस्नान करे.

पछी नवां शुद्ध धोयेलां वस्त्र लइ मंत्रे ते आ प्रमाणेः–ॐ ह्रीँ आँ[1] क्रौं नमः ।

ए मंत्र त्रण वार भणी वस्त्र मंत्री पहेरीए. पछी तिलकनुं केसर हाथमां लइः–ॐ आँ ह्रीँ क्लौँ अर्हते नमः ।

ए मंत्रे सात वार केसर मंत्री तिलक करवुं. पछी ग्रीवासूत्र (नाडाछडी)नो दडो लइ कंकण मन्त्रेः–

ॐ ह्रीँ अवतर अवतर सोमे सोमे कुरु कुरु वल्गु वल्गु निवल्गु निवल्गु सुमणे सोमणसे महुमहुरे ॐ कवलि कः क्षः स्वाहा ।

ए मंत्रे मन्त्री सर्व स्नात्रियाओने हाथे मींढोळ मरडाशींगी सहित नाडुं बांधे. तथा ए ज मंत्रे मींढोळ, मरडाशींगी, समूळो डाभ पण मन्त्रीए. पछी प्रभुनी अष्टप्रकारी पूजा करवी ते आ प्रमाणेः–

ॐ ह्रीँ श्रीँ परमपुरुषाय परमात्मने अनन्तानन्तज्ञानशक्तये जन्मजरामृत्युनिवारणाय श्रीमते जिनेन्द्राय जलं १, चन्दनं २, पुष्पं ३, धूपं ४, दीपं ५, अक्षतं ६, नैवेद्यं ७, फलताम्बूलं ८ यजामहे स्वाहा ।

पछी वृद्ध श्रावक विधिपूर्वक भूमिपीठे, गृहे वा चैत्यपासे पवित्र जळ–सोनावाणीए [सोनाना वरख सहित पाणी] भूमि शुद्ध करे, तेनो मंत्रः–ॐ ह्रीँ श्रीं श्रीजीराउली पार्श्वनाथ रक्षां कुरु कुरु स्वाहा ।

नवकार अने आ मंत्र फुलगुंथणीए (वाराफरती) सात वार गणी सर्वत्र सोनावाणी छांटवुं.

पछी वास चोखा अने पुष्प लइ नीचेना मंत्रे भूमि शुद्ध करवीः—ॐ ह्रीँ श्रीँ अर्हं भूर्भुवः स्वधाय स्वाहा ।

---

१ औं पाठांतर

पछी पूर्व दिशाए अथवा उत्तर दिशाए पीठ मांडीए अने ॐ ह्रीँ अर्हत्पीठाय नमः। ए मंत्रे सात वार मंत्री पीठनी पूजा करीए. पछी श्रीशांतिनाथ भगवाननी प्रतिमा स्थापीए, तेनो मंत्रः—

ॐ नमोऽर्हत्परमेश्वराय चतुर्मुखाय परमेष्ठिने दिक्कुमारीपरिपूजिताय देवाधिदेवाय त्रैलोक्यमहिताय अत्र पीठे तिष्ठ तिष्ठ स्वाहा।

आ मंत्र त्रण वार भणी श्रीशांतिनाथ भगवाननी पंचतीर्थी प्रतिमा स्थापीए. श्री शांतिनाथ भगवाननी प्रतिमाना अभावमां बीजा भगवाननी प्रतिमानी पण श्री शांतिनाथ भगवाननी कल्पना करवी, तेनो मंत्रः—

ॐ नमोऽर्हद्भ्यस्तीर्थंकरेभ्यो जिनेभ्योऽनाद्यनंतेभ्यः समबलेभ्यः समश्रुतेभ्यः समप्रभावेभ्यः समकेवलेभ्यः समतत्त्वोपदेशेभ्यः समपूजितेभ्यः समकल्पनेभ्यः समस्ततीर्थंकरनामपंचदशकर्मभूमिभवस्तीर्थंकरो यो यत्राराध्यते सोऽत्र प्रतिमायां सन्निहितोऽस्तु।

आ मंत्र वडे त्रण वार मंत्रीने जिनप्रतिमामां बीजा तीर्थंकर भगवाननी कल्पना (स्थापना) करवामां आवे छे.

पछी कोरा शरावलामां सधवा स्त्री पासे गोघृत पूरावीए, तेनो मंत्रः—

ॐ घृतमायुर्वृद्धिकरं, भवति परं जैनदृष्टिसंपर्कात्। तत्संयुतः प्रदीपः, पातु सदा भावदुःखेभ्यः ॥१॥ स्वाहा

आ मंत्र त्रणवार भणी घी पूरीए. पछी दीप प्रगट करीए तेनो मंत्रः—

ॐ अर्हं पंचज्ञानमहाज्योति-र्मयाय ध्वान्तघातिने। द्योतनाय प्रतिमाया, दीपो भूयात् सदाऽर्हतः ॥१॥

ए मंत्र त्रण वार बोली दीप प्रगटाववो.

पछी एक त्रांबानी माटली धोइ धूपी ते मध्ये केसर सुखडनो साथियो करी ते उपर नीचेनो मंत्र लखवोः—

ॐ ह्रीँ श्रीँ सर्वोपद्रवाशाशय नाशाय स्वाहा ।

ए मंत्र लखी तेना कंठे ग्रीवासूत्र, मींढळ, मरडाशींगी, समूल डाभ बांधीए. तेमां रुपियो एक तथा पंचरत्ननी पोटली मूकीए तेनो मंत्रः—

ॐ ह्रीँ श्रीँ नानारत्नौघयुतं, सुगन्धि पुष्पाधिवासितं नीरम्।
पततात्विचित्रवर्णं, मंत्राढयं स्थापनाबिंबे ॥१॥ स्वाहा ।

ए मंत्र वडे मंत्री पंचरत्न मूकीए. पछी ॐ ह्रीँ ठः ठः ठः स्वाहा । ए मंत्रे सात वार मंत्री ते माटली प्रभुजीने जमणे पासे स्थापीए. पछी वासपुष्पे पूजीए. पछी पंचामृतः-घृत १, दूध २, दहीं ३, साकर ४, पाणी ५, ए पांच एकठां करीः—

ॐ ह्रीँ जिनबिंबोपरि निपतद् घृतदधिदुग्धादिद्रव्यपरिपूतम् ।
गन्धोदकसंमिश्रं, पंचसुधं हरतु दुरितानि ॥१॥ स्वाहा ॥

ए मंत्रे त्रण वार मंत्री माटली मध्ये पंचामृत रेडीए. पछी तेमां तीर्थजळ तथा कुवानां पाणी नांखीए, तेनो मंत्रः—

ॐ ह्रीँ भू(भः)जलधिनदीद्रहकुण्डे-पु यानि तीर्थोदकानि शुद्धानि ।
तैर्मंत्रसंस्कृतैरिह, बिम्बं स्नपयामि शुद्ध्यर्थम् ॥१॥ स्वाहा ।

ए मंत्रे सात वार मंत्री माटली मध्ये जळ रेडीए. पछी तेमां सर्वौषधि नाखीए, तेनो मंत्रः—

ॐ ह्रीँ सर्वौषधिसंयुक्तया, सुगन्धया घर्षितं सुगतिहेतोः ।
स्नपयामि जैनबिम्बं, मंत्रिततन्नीरनिवहेन ॥१॥ स्वाहा ॥

ए मंत्रे मंत्री माटली मध्ये सर्वौषधि नाखीए. चंदनना छांटा नाखीए. पुष्प नाखीए. दरियाइ तास्तो (लीलुं वस्त्र) ढांकीए. पछी दश श्रावक धूप, दीप सहित, माटलीपर हाथ राखी नवकार १, उवसग्गहरं २, संतिकरं ३, तिजयपहुत्त ४, नमिऊण ५, अजितशांति ६, भक्तामर ७, ए सात स्मरण शुद्ध पाठे गणे.

पछी विधिथी स्नात्रपीठ उपर श्री शांतिनाथ तथा श्री ऋषभदेवनी पंचतीर्थी मूर्ति, सिद्धचक्रयुक्त स्थापवी. पछी सुवर्णना, रूपाना तथा अन्य धातुना कळश धोइ धूपी पंचामृत भरी श्री शांतिनाथनुं स्नात्र भणावीए. तेमां चार कुमार कुमारिका पवित्र श्वेत वस्त्र आभरणादिक पहेरे. पछी अष्ट प्रकारी पूजा भणावे.

स्नात्र करतां जगतगुरु शरीरे, सकल देवे विमल कलश नीरे; आपणा कर्ममळ दूर कीधा, तिणे ते विबुध ग्रंथे प्रसिद्धा ॥१॥
हर्ष धरी अप्सरावृंद आवे, स्नात्र करी एम आसीस भावे; जिहांलगे सुरगिरि जंबूदीवो, अमतणा नाथ जीवानुजीवो ॥२॥

श्रीमन्मंदरमस्तके शुचिजलैर्धौते सदर्भाक्षतैः, पीठे मुक्तिवरं विधाय रचितं तत्पादपुष्पस्रजा ।
इन्द्रोऽहं निजभूषणार्थममलं यज्ञोपवीतं दधे, मुद्राकंकणशेखराण्यपि तथा जनाभिषेकोत्सवे ॥१॥
विश्वैश्वर्यैकवर्यास्त्रिदशपतिशिरःशेखरस्पृष्टपादाः, प्रक्षीणाशेषदोषाः सकलगुणगणग्रामधामान एव ।

जायन्ते जन्तवो यच्चरणसरसिजद्वन्द्वपूजान्विताः श्री-अर्हंतं स्नात्रकाले कलशजलभृतैरेभिराप्लावयेत्तम् ॥
ॐ ह्रीँ श्रीँ परमपुरुषाय ॐ ह्राँ ह्रीँ ह्रूँ ह्रैँ ह्रौँ ह्रः अर्हते तीर्थोदकेन अष्टोत्तरशतौपधिना सह षष्टिलक्षकोटचैक-
प्रमाणकलशैः स्नपयामि, शान्तिं तुष्टिं पुष्टिं कुरु कुरु स्वाहा। आ मंत्र उच्चरते स्नात्र करीए. इति जलपूजा ॥१॥

जिनतनु चर्चतां सकल नाकी, कहे कुग्रह उष्णता आज थाकी;
सफळ अनिमेषता आज माकी, भव्यता अमतणी आज पाकी ।३। इति चन्दनपूजा ॥२॥

जगधणी पूजतां विविध फूले, सुरवरा ते गणे खीण अमूले;
खंत धरी मानवा जिनप पूजे, तस तणा पाप संताप धूजे ।४। इति पुष्पपूजा ॥३॥

जिनगृहे वासतां धूप पूरे, मिच्छत्त दुर्गंधता जाय दूरे;
धूप जिम सहज ऊरध (गति) सभावे, कारका उच्चगतिभाव पावे. ।५। इति धूपपूजा ॥४॥

जे जना दीपमाला प्रकाशे, तेहथी तिमिर अज्ञान नासे;
निज घटे ज्ञानजोती विकासे, जेहथी जगतना भाव भासे ।६। इति दीपपूजा ॥५॥

स्वस्तिक पूरतां जिनपआगे, स्वचेतसि [स्वस्तिक श्री] भद्र कल्याण जागे;
जन्मजरा मरणादि अशुभ भागे, नियत शिवशर्म रहे तास आगे ॥७॥ इति स्वस्तिकपूजा ॥६॥

ढोकतां भोज्य परभाव त्यागे, भविजना निजगुण भोज्य मागे;
हम भणी हम तणुं स्वरूप भोज्यं, आपजो तातजी जगतपूज्यं ।८। इति नैवेद्यपूजा ॥७॥

फळभरे पूजतां जगतस्वामी, मनुजगति वेल होय सफळ पामी;
सकळ मुनि ध्येयगति भेदरंगे, ध्यावतां फळ समाप्ति प्रसंगे ।९। इति फलपूजा ॥८॥

अष्टप्रकारी पूजा करी, पछी प्रभुने जमणे पडखे श्री शांतिदेवीनो कुंभ स्थापीए (कुंभ स्थापननी पेठे). पछी ग्रहस्थापन, दिक्पाळ स्थापन तथा नंद्यावर्त्त साथिया प्रमुख अष्ट मंगळनी स्थापना करवी. पछी दश दिक्पाळ अने ग्रहोने पवित्र बळिबाकळा देवा— खीर १, लापसी २, वडां ३, भात ४, करंबो ५, गळया–मोळा पुडला ६, खीचडो ७ सप्त धान्यनो–(चणा १, घउं २, जव ३, जार ४, मग ५, चोळा ६, अडद ७,) गोघृत शेर सवा, बूरु–खांड शेर सवा ए सर्व एकठां करी वासमुठी भरीः—

ॐ नमो अरिहंताणं, ॐ नमो सिद्धाणं, ॐ नमो आयरियाणं, ॐ नमो उवज्झायाणं, ॐ नमो लोए सव्वसाहूणं, ॐ नमो आगासगामीणं, ॐ नमो चारणाइलद्धीणं, जे इमे किन्नर किंपुरिस महोरग गरुल सिद्ध गंधव्व जक्ख रक्खस पिसाय भूय पेय सायणी डायणी पभीइओ जिणघरणिवासिणो निय निय निलयट्ठिया वीयारिणो संनिहिया असंन्निहिया ते सव्वे इमं विलेवण धूव पुप्फ पईव सणाहं बलिं पडिच्छंता तुट्ठिकरा भवंतु, पुट्ठिकरा भवन्तु खेमं(सिवं)करा भवन्तु, संतिकरा भवन्तु, सुत्थयणं कुणंतु, सव्वजिणाणं संनिहाणप्पहावप्पस-

## अथ वज्रपञ्जरस्तोत्रम्[1]

परमेष्ठिनमस्कारं, सारं नवपदात्मकम्। आत्मरक्षाकरं वज्र-पञ्जराभं स्मराम्यहम् ॥१॥
ॐ नमो अरिहंताणं, शिरस्कं शिरसि स्थितम्। ॐ नमो सिद्धाणं, मुखे मुखपटं वरम् ॥२॥
ॐ नमो आयरियाणं, अङ्गरक्षातिशायिनी। ॐ नमो उवज्झायाणं, आयुधं हस्तयोर्दृढम् ॥३॥
ॐ नमो लोए सव्वसाहूणं, मोचके पादयोः शुभे। एसो पंच नमुक्कारो, शिला वज्रमयी तले ॥४॥
सव्वपावप्पणासणो, वप्रो वज्रमयो बहिः। मङ्गलाणं च सव्वेसिं, खादिराङ्गारखातिका ॥५॥
स्वाहान्तं च पदं ज्ञेयं, पढमं हवइ मङ्गलम्। वप्रोपरि वज्रमयं, पिधानं देहरक्षणे ॥६॥
महाप्रभावा रक्षेयं, क्षुद्रोपद्रवनाशिनी। परमेष्ठिपदोद्भूता, कथिता पूर्वसूरिभिः ॥७॥
यश्चैवं कुरुते रक्षां, परमेष्ठिपदैः सदा। तस्य न स्याद् भयं व्याधि-राधिश्चापि कदाचन[2] ॥८॥

। इति वज्रपञ्जरकवच ।

पछी अष्टप्रकारी पूजानो सामान मेळवीए. १०८ नाळवाळा कळश क्षीरोदके पंचामृते भरी शुभ श्रावक स्नात्र करे. अथवा चार अथवा आठ कळशे नीचेनी गाथा भणीने स्नात्र करीए. नमोऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यः।

१ आ स्तोत्र बोलतां जे जे अंगनुं नाम आवे ते ते अंगने हस्तवडे स्पर्श करवो. २ शरीरजा। पाठांतर

ॐ शान्ति शान्तिनिशांतं, शांतं शांताशिवं नमस्कृत्य।
स्तोतुः शान्तिनिमित्तं, मंत्रपदैः शान्तये स्तौमि ॥१॥ ह्रीँ स्वाहा।

ॐ नमो जिणाणं सरणाणं मंगलाणं लोगुत्तमाणं ह्राँ ह्रीँ ह्रूँ ह्रैँ ह्रौँ ह्रः असिआउसा त्रैलोक्यललामभूताय क्षुद्रोपद्रवनाशनाय अर्हते नमः स्वाहा।

ॐ तं संतिं संतिकरं, संतिण्णं सव्वभया। संतिं थुणामि जिणं, संतिं विहेउ मे ॥१॥ स्वाहा ॥

ॐ रोगजलजलणविसहर-चोरारिमइंदगयरणभयाइं।
पासजिणनामसंकि-त्तणेण पसमंति सव्वाइं ॥२॥ स्वाहा ॥

ॐ वरकणयसंखविद्दुम-मरगयघणसंनिहं विगयमोहं। सत्तरिसयं जिणाणं, सव्वामरपूइयं वंदे ॥३॥ स्वाहा

ॐ भवणवइवाणमंतर, जोइसवासी विमाणवासी य।
जे केइ दुट्ठदेवा, ते सव्वे उवसमंतु मम ॥४॥ स्वाहा[1] ॥ एम भणी अभिषेक करवो. ?

---

१ आ नीचे आपेलो पाठ कोइ कोइ पूजन वखते बोलाववामां आवे छेः—ॐ नमोऽर्हते परमेश्वराय चतुर्मुखाय परमेष्ठिने दिक्कुमारीपरिपूजिताय दिव्यशरीराय देवाधिदेवाय अस्मिन् जंबूद्वीपे दक्षिणार्धभरते मध्यखंडे सौराष्ट्रदेशे अमुकग्रामे अमुकजिनप्रासादे अमुकगृहे शान्तिस्नात्रमहोत्सवे स्नात्रस्य कर्तुः कारयितुश्च ऋद्धिं वृद्धिं कल्याणं कुरु कुरु स्वाहा।
विमलकेवलभासनभास्करं, जगति जन्तुमहोदयकारणम्। जिनवरं बहुमानजलौघत, शुचिमनाः स्नपयामि विशुद्धये ॥१॥ [आगळ चालु]

(२) नमोऽर्हत्० कही नीचेनी गाथा बोलवी.

ओमितिनिश्चितवचसे, नमो नमो भगवतेऽर्हते पूजाम्।
शान्तिजिनाय जयवते, यशस्विने स्वामिने दमिनाम् ॥१॥ ह्रीं स्वाहा ॥

ॐ नमो जिणाणं०। ॐ तं संतिं संतिकरं इत्यादि गाथा चार भणी अभिषेक करवो. २

(३) नमोऽर्हत्० कही नीचेनी गाथा बोलवीः–

सकलातिशेषकमहा–सम्पत्तिसमन्विताय शस्याय।
त्रैलोक्यपूजिताय च, नमो नमः शांतिदेवाय ॥१॥ ह्रीं स्वाहा ॥

ॐ नमो जिणाणं०। ॐ तं संतिं संतिकरं इत्यादि गाथा चार भणी अभिषेक करवो. ३

(४) नमोऽर्हत्० कही नीचेनी गाथा बोलवीः–

ॐ सर्वामरसुसमूह—स्वामिकसंपूजिताय निजिताय।
भुवनजनपालनोद्यत–तमाय सततं नमस्तस्मै ॥१॥ ह्रीं स्वाहा ॥

---

स्नात्र करतां जगद्गुरुशरीरे, सकलदेवे विमळ कलश नीरे, आपणा कर्ममळ दूर कीधा, तेणे ते विबुध ग्रंथे प्रसिद्धा;
हर्ष धरी अप्सरावृंद आवे, स्नात्र करी एम आसीस भावे, जीहां लगी सुरगिरि जंबूदीवो, अमतणा नाथ जीवानुजीवो.
ॐ ह्रीं श्रीं परमात्मने अनन्तानन्तज्ञानशक्तये जन्मजरामृत्युनिवारणाय श्रीमते जिनेन्द्राय जलादिकं यजामहे स्वाहा।
( आ 'विमलकेवल'नो श्लोक अने ते पछीनो बधो पाठ दरेक स्नात्र वखते विधिकारक गृहस्थ स्वयं बोली जाय. )

ॐ नमो जिणाणं०। ॐ तं संति संतिकरं इत्यादि गाथा चार भणी अभिषेक करवो. ४

(५) नमोऽर्हत्० कही नीचेनी गाथा बोलवीः-

ॐ सर्वदुरितौघनाशन-कराय सर्वाशिवप्रशमनाय।
दुष्टग्रहभूतपिशाच-शाकिनीनां प्रमथनाय ॥१॥ ह्रीं स्वाहा।

ॐ नमो जिणाणं०। ॐ तं संतिं संतिकरं इत्यादि गाथा चार भणी अभिषेक करवो. ५

(६) नमोऽर्हत्० कही नीचेनी गाथा बोलवीः—

ॐ यस्येति नाममंत्र-प्रधानवाक्योपयोगकृततोषा।
विजया कुरुते जनहितमिति च नुता नमत तं शान्तिम् ॥१॥ ह्रीँ स्वाहा।

ॐ नमो जिणाणं०। ॐ तं संतिं संतिकरं इत्यादि गाथ चार भणी अभिषेक करवो. ६.

(७) नमोऽर्हत्० कही नीचेनी गाथा बोलवीः—

ॐ भवतु नमस्ते भगवति, विजये सुजये परापरैरजिते।
अपराजिते जगत्यां, जयतीति जयावहे भवति ॥१॥ ह्रीँ स्वाहा।

ॐ नमो जिणाणं०। ॐ तं संतिं संतिकरं इत्यादि गाथा चार भणी अभिषेक करवो. ७.

(८) नमोऽर्हत्० कही नीचेनी गाथा बोलवीः—

ॐ सर्वस्यापि च संघस्य, भद्रकल्याणमंगलप्रददे ।
साधूनां च सदा शिव-सुतुष्टिपुष्टिप्रदे जीयाः ॥१॥ ह्रीँ स्वाहा ।

ॐ नमो जिणाणं० । ॐ तं संतिं संतिकरं इत्यादि गाथा चार भणी अभिषेक करवो. ८.

(९) नमोऽर्हत्० कही नीचेनी गाथा बोलवी:—

ॐ भव्यानां कृतसिद्धे, निर्वृतिनिर्वाणजननि सत्त्वानाम् ।
अभयप्रदाननिरते, नमोऽस्तु स्वस्तिप्रदे तुभ्यम् ॥१॥ ह्रीँ स्वाहा ।

ॐ नमो जिणाणं० । ॐ तं संतिं संतिकरं इत्यादि गाथा चार भणी अभिषेक करवो ९.

(१०) नमोऽर्हत्० कही नीचेनी गाथा बोलवी:—

ॐ भक्तानां जन्तूनां, शुभावहे नित्यमुद्यते देवि ।
सम्यग्दृष्टीनां धृति-रतिमतिबुद्धिप्रदानाय ॥१॥ ह्रीँ स्वाहा

ॐ नमो जिणाणं० । ॐ तं संतिं संतिकरं इत्यादि गाथा चार भणी अभिषेक करवो. १०.

(११) नमोऽर्हत्० कही नीचेनी गाथा बोलवी:—

ॐ जिनशासननिरतानां, शान्तिनतानां च जगति जनतानाम् ।
श्रीसंपत्कीर्तियशो-वर्द्धिनि जयदेवि विजयस्व ॥१॥ ह्रीँ स्वाहा ॥

ॐ नमो जिणाणं० । ॐ तं संतिं संतिकरं इत्यादि गाथा चार भणी अभिषेक करवो. ११.

(१२) नमोऽर्हत्० कही नीचेनी गाथा बोलवी:—

ॐ सलिलानलविषविषधर–दुष्टग्रहराजरोगरणभयतः ।
राक्षसरिपुगणमारी–चौरेतिश्वापदादिभ्यः ॥१॥ ह्रीँ स्वाहा ॥

ॐ नमो जिणाणं० । ॐ तं संतिं संतिकरं इत्यादि गाथा चार भणी अभिषेक करवो. १२.

(१३) नमोऽर्हत्० कही नीचेनी गाथा बोलवी:—

ॐ अथ रक्ष रक्ष सुशिवं, कुरु कुरु शान्तिं च कुरु कुरु सदेति ।
तुष्टिं कुरु कुरु पुष्टिं, कुरु कुरु स्वस्तिं च कुरु कुरु त्वम् ॥१॥ ह्रीँ स्वाहा ।

ॐ नमो जिणाणं० । ॐ तं संतिं संतिकरं इत्यादि गाथा चार भणी अभिषेक करवो. १३.

(१४) नमोऽर्हत्० कही नीचेनी गाथा बोलवी:—

ॐ भगवति गुणवति शिवशान्ति–तुष्टिपुष्टिस्वस्तीह कुरु कुरु जनानाम् ।
ओमिति नमो नमो ह्राँ ह्रीँ ह्रूँ ह्रः यः क्षः ह्रीँ फुट् फुट् स्वाहा ॥१॥ ह्रीँ स्वाहा ॥

ॐ नमो जिणाणं० । ॐ तं संतिं संतिकरं इत्यादि गाथा चार भणी अभिषेक करवो. १४.

(१५) नमोऽर्हत्० कही नीचेनी गाथा बोलवीः–

ॐ एवं यन्नामाक्षर–पुरस्सरं संस्तुता जया देवी ।
कुरुते शान्तिं नमतां, नमो नमः शान्तये तस्मै ॥१॥ ह्रीं स्वाहा ॥

ॐ नमो जिणाणं० । ॐ तं संतिं संतिकरं इत्यादि गाथा चार भणी अभिषेक करवो. १५.

(१६) नमोऽर्हत्० कही नीचेनी गाथा बोलवीः–

ॐ इति पूर्वसूरिदर्शित–मंत्रपदविदर्भितः स्तवः शान्तेः ।
सलिलादिभयविनाशी, शान्त्यादिकरश्च भक्तिमताम् ॥१॥ ह्रीं स्वाहा॥

ॐ नमो जिणाणं० । ॐ तं संतिं संतिकरं इत्यादि गाथा चार भणी अभिषेक करवो. १६.

(१७) नमोऽर्हत्० कही नीचेनी गाथा बोलवीः—

ॐ यश्चैनं पठति सदा,श्रृणोति भावयति वा यथायोगम् ।
स हि शान्तिपदं यायात् , सूरिः श्रीमानदेवश्च ॥१॥ ह्रीं स्वाहा ॥

ॐ नमो जिणाणं० । ॐ तं संतिं संतिकरं इत्यादि गाथा चार भणी अभिषेक करवो. १७.

(१८) नमोऽर्हत्० कही नीचेनी गाथा बोलवीः–

ॐ स नमो विप्पोसहि-पत्ताणं संतिसामिपायाणं।
झ्रौं स्वाहा मन्तेणं, सव्वासिवदुरियहरणाणं ॥१॥ ह्रीँ स्वाहा ॥

ॐ नमो जिणाणं०। ॐ तं संतिं संतिकरं इत्यादि गाथा चार भणी अभिषेक करवो. १८

(१९) नमोऽर्हत्० कही नीचेनी गाथा बोलवी:-

ॐ संतिनमुक्कारो, खेलोसहिमाइलद्धिपत्ताणं।
सौं ह्रीँ नमो सव्वोसहि-पत्ताणं च देइ सिरिं ॥१॥ ह्रीँ स्वाहा ॥

ॐ नमो जिणाणं०। ॐ तं संतिं संतिकरं इत्यादि गाथा चार भणी अभिषेक करवो. १९.

(२०) नमोऽर्हत्० कही नीचेनी गाथा बोलवी:-

ॐ पणवीसा य असीया, पनरस पन्नास जिणवरसमूहो।
नासेउ सयलदुरियं, भवियाणं भत्तिजुत्ताणं ॥१॥ ह्रीँ स्वाहा ॥

ॐ नमो जिणाणं०। ॐ तं संतिं संतिकरं इत्यादि गाथा चार भणी अभिषेक करवो. २०.

(२१) नमोऽर्हत्० कही नीचेनी गाथा बोलवी:-

ॐ वीसा पणयाला वि य, तीसा पन्नत्तरी जिणवरिंदा।
गहभूअरक्खसाइणी, घोरुवसग्गं पणासंतु ॥१॥ ह्रीँ स्वाहा ॥

ॐ नमो जिणाणं० । ॐ तं सन्ति सन्तिकरं इत्यादि गाथा चार भणी अभिषेक करवो. २१.

(२२) नमोऽर्हत्० कही नीचेनी गाथा बोलवीः–

ॐ सत्तरि पणतीसा विय, सट्ठी पंचेव जिणगणो एसो।
वाहिजलजलणहरिकरि–चोरारिमहाभयं हरउ ॥१॥ ह्रीँ स्वाहा ॥

ॐ नमो जिणाणं० । ॐ तं सन्ति सन्तिकरं इत्यादि गाथा चार भणी अभिषेक करवो. २२.

(२३) नमोऽर्हत्० कही नीचेनी गाथा बोलवीः–

ॐ पणपन्ना य दसेव य, पन्नट्ठी तह य चेव चालीसा।
रक्खन्तु मे सरीरं, देवासुरपणमिया सिद्धा ॥१॥ ह्रीँ स्वाहा ॥

ॐ नमो जिणाणं० । ॐ तं सन्ति सन्तिकरं इत्यादि गाथा चार भणी अभिषेक करवो. २३.

(२४) नमोऽर्हत्० कही नीचेनी गाथा बोलवीः–

ॐ श्रीमते शांतिनाथाय, नमः शांतिविधायिने। त्रैलोक्यस्यामराधीश–मुकुटाभ्यर्चितांह्रये ॥१॥ ह्रीँ स्वाहा ॥

ॐ नमो जिणाणं० । ॐ तं सन्ति सन्तिकरं इत्यादि गाथा चार भणी अभिषेक करवो. २४.

(२५) नमोऽर्हत्० कही नीचेनी गाथा बोलवीः–

ॐ शांतिः शांतिकरः श्रीमान्, शांतिं दिशतु मे गुरुः ।
शांतिरेव सदा तेषां, येषां शांतिर्गृहे गृहे ॥१॥ ह्रीं स्वाहा।

ॐ नमो जिणाणं० । ॐ तं सन्ति सन्तिकरं इत्यादि गाथा चार भणी अभिषेक करवो. २५.

(२६) नमोऽर्हत्० कही नीचेनी गाथा बोलवी:—

ॐ उन्मृष्टरिष्टदुष्ट-ग्रहगतिदुःस्वप्नदुर्निमित्तादि ।
संपादितहितसंप-न्नामग्रहणं जयति शान्तेः ॥१॥ ह्रीँ स्वाहा ॥

ॐ नमो जिणाणं० । ॐ तं संतिं संतिकरं इत्यादि गाथा चार भणी अभिषेक करवो. २६.

(२७) नमोऽर्हत्० कही नीचेनी गाथा बोलवी:—

ॐ श्रीसंघजगज्जनपद-राजाधिपराजसन्निवेशानाम् ।
गोष्ठिकपुरमुख्यानां, व्याहरणैर्व्याहरेच्छान्तिम् ॥१॥ ह्रीँ स्वाहा ॥
ॐ श्री श्रमणसंघस्य शान्तिर्भवतु। श्रीजनपदानां शान्तिर्भवतु।
श्रीराजाधिपानां शांतिर्भवतु। श्रीराजसन्निवेशानां शांतिर्भवतु।
श्रीगोष्ठिकानां शान्तिर्भवतु। श्रीपौरमुख्याणां शांतिर्भवतु।
श्री पौरजनस्य शान्तिर्भवतु। श्री ब्रह्मलोकस्य शांतिर्भवतु।

ॐ ह्रीँ स्वाहा। ॐ स्वाहा ॐ स्वाहा ॐ श्रीपार्श्वनाथाय स्वाहा।

ॐ नमो तुह दंसणेण सामिय, पणासए (पणासिअं) रोगसोगदोहग्गं।
कप्पदुमेव जायइ, तुह दंसण पसमस्स फलहेउ ॥१॥ ह्रीँ स्वाहा ॥
ॐ नम एव पणवसहियं, मायाबीएण धरणनागिंदं।
श्रीकामराजकलियं, पासजिणंदं नमंसामि ॥१॥ ह्रीँ स्वाहा ॥
ॐ अट्ठेव य अट्ठसया, अट्ठ सहस्सा य अट्ठ कोडीओ।
रक्खन्तु मे सरीरं, देवासुरपणमिया सिद्धा ॥२॥ ह्रीँ स्वाहा ॥
ॐ थंभेइ जलजलणं, चिंतियमित्तो वि पंच नमुक्कारो।
अरिमारिचोरराउल, घोरुवसग्गं मम निवारेइ ॥१॥ ह्रीँ स्वाहा ॥
ॐ क्षेमं भवतु सुभिक्षं, सस्यं निष्पद्यतां जयतु धर्मः।
शाम्यन्तु सर्वरोगा, ये केचिदुपद्रवा लोके ॥१॥ ह्रीँ स्वाहा ॥

ॐ नमो जिणाणं०। ॐ तं संतिं संतिकरं इत्यादि गाथा चार भणी चारे कळशे अभिषेक करवो. २७.
पछी स्नात्रपूजा करी अष्टप्रकारी पूजा विशेष प्रकारे करे. आरति, मङ्गळदीवो करे. नैवेद्य ढोके.
पछी मुखवस्त्रिका लई नीचे प्रमाणे देव वांदेः—

प्रथम इरियावहि०। इच्छाकारेण संदिसह भगवन् चैत्यवंदन करुं? इच्छं कही चैत्यवंदन करे. नमुत्थुणं० अरिहंतचेइयाणं० अन्नत्थ० कही एक नवकारनो काउस्सग्ग करी–पारी नमोऽर्हत्० कही नीचेनी गाथा बोलवीः—

अर्हंस्तनोतु स श्रेयः–श्रियं यद्ध्यानतो नरैः। अप्यैन्द्री सकलात्रै हि, रंहसा सह सौच्यते ॥१॥

पछी लोगस्स०। सव्वलोए०। वंदणवत्तिआए०। अन्नत्थ० कही एक नवकारनो काउस्सग्ग करी–पारी नमोऽर्हत्० कही नीचेनी गाथा बोलवीः—

ओमिति मंता यच्छा–सनस्य नन्ता सदा यदंह्रींश्च। आश्रीयते श्रिया ते, भवतो भवतो जिनाः पान्तु ॥१॥

पछी पुक्खरवरदी०। वंदणवत्तिआए०। अन्नत्थ० कही एक नवकारनो काउस्सग्ग करी–पारी नमोऽर्हत्० कही नीचेनी गाथा बोलवीः—

नवतत्त्वयुता त्रिपदी–श्रिता रुचिज्ञानपुण्यशक्तिमता। वरधर्मकीर्तिविद्या–नन्दास्या जैनगीर्जीयात् ॥१॥

पछी सिद्धाणं बुद्धाणं०। श्रीशांतिनाथआराधनार्थं करेमि काउस्सग्गं वंदणवत्तिआए०। अन्नत्थ० कही एक लोगस्सनो काउस्सग्ग करी–पारी नमोऽर्हत्० कही नीचेनी गाथा बोलवीः—

श्रीशांतिः श्रुतशान्तिः, प्रशान्तिकोऽसावशान्तिमुपशान्तिम्।
नयतु सदा यस्य पदाः, सुशान्तिदाः सन्तु सन्तिजने ॥१॥

पछी श्रीद्वादशांगी आराधनार्थं करेमि काउस्सग्गं वंदणवत्तिआए० अन्नत्थ० कही एक नवकारनो काउस्सग्ग

करी–पारी नमोऽर्हत्० कही नीचेनी गाथा बोलवीः—

सकलार्थसिद्धिसाधन–बीजोपांगा सदा स्फुरदुपांगा । भवतादनुपहतमहा–तमोऽपहा द्वादशांगी वः ॥१॥

पछी श्रुतदेवता आराधनार्थं करेमि काउस्सग्गं अन्नत्थ० कही एक नवकारनो काउस्सग्ग करी–पारी नमोऽर्हत्० कही नीचेनी गाथा बोलवीः—

वद वदति न वाग्वादिनि, भगवति कः श्रुतसरस्वति गमेच्छुः । रंगत्तरंगमतिवर–तरणिस्तुभ्यं नम इतीह ॥१॥

पछी शासनदेवता आराधनार्थं करेमि काउस्सग्गं अन्नत्थ० कही एक नवकारनो काउस्सग्ग करी–पारी नमोऽर्हत्० कही नीचेनी गाथा बोलवीः—

उपसर्गवलयविलयन–निरता जिनशासनावनैकरताः । द्रुतमिह समीहितकृते, स्युः शासनदेवता भवताम् ॥१॥

पछी समस्तवेयावच्चगराणं संतिगराणं सम्मदिट्ठिसमाहिगराणं करेमि काउस्सग्गं अन्नत्थ० कही एक नवकारनो काउस्सग्ग करी–पारी नमोऽर्हत्० कही नीचेनी गाथा बोलवीः—

संघेऽत्र ये गुरुगुणौघनिधे सुवैया–वृत्त्यादिकृत्यकरणैकनिबद्धकक्षाः ।
ते शान्तये सह भवन्तु सुराः सुरीभिः, सदृष्टयो निखिलविघ्नविघातदक्षाः ॥१॥

पछी एक प्रगट नवकार बोली नमत्थुणं० । जावंति चेइयाइं० । जावंत केवि साहु० नमोऽर्हत्० कही स्तवनने स्थाने अजियसंति अथवा संतिकरं कही जय वीयराय० बोलवा.

पछी छेवटे वलियाकल्ला राख्या छे ते उछाळवा. पछी पहेलां स्थापन करेला शांतिदेवीना कुंभ आगळ बीजा चार कुंभ डाघ रहित घाटवंता लइने ते दरेकमां चोखा शेर सवा, रूपानाणुं, सोपारी ५, मूकी श्रीफळ एक लीला पीळा लुगडावडे ढांकी ग्रीवासूत्र बांधी फूलमाळे पूजीने शुभ श्रावक कुमारिकाना माथे स्थापी वाजते गाजते गीत गाते शांति कुंभ पासे आवी स्थापे. पछी शांति देवीने योग्य नैवेद्य धरीए ते आ प्रमाणेः—खीर, करंबो, घाट-लापसी, सुंवाळी २१, वडां २१, पंचधारी-लापसी, लाडवा मगदळना ९, दहीं एक पात्रमां नांखी ढोकीए. पछी त्यां मंगळदीवो उतारीए. पछी शांति उद्घोषणा पूर्वक क्षेत्रदेवी देवता पूजिए. पछी नीचे प्रमाणे देव वांदीएः—

इरियावहि० अन्नत्थ० कही एक लोगस्सनो काउस्सग्ग करी प्रगट लोगस्स कही पछी चैत्यवंदन नमुत्थुणं० वगेरे कही संतिकरं स्तवन कही जय वीयराय० कहेवा. पछी अरिहंत चेइयाणं० कही अन्नत्थ० कही एक नवकारनो काउस्सग्ग करी-पारी नमोऽर्हत्० कही नीचेनी स्तुति कहेवीः—

कल्लाणकंदं पढमं जिणिंदं, संतिं तओ नेमिजिणं मुणिंदं। पासं पयासं सुगुणिक्कठाणं, भत्तिइ वंदे सिरि वद्धमाणं ॥

पछी इच्छाकारेण संदिसह भगवन्, क्षेत्रदेवता आराधनार्थं करेमि काउस्सग्गं अन्नत्थ० कही एक लोगस्स० नो काउस्सग्ग करी-पारी नमोऽर्हत्० कही नीचेनी स्तुति बोलवीः—

यस्याः क्षेत्रं समाश्रित्य, साधुभिः साध्यते क्रिया। सा क्षेत्रदेवता नित्यं, भूयान्नः सुखदायिनी ॥१॥

पछी भुवणदेवयाए करेमि काउस्सग्गं अन्नत्थ० कही एक लोगस्सनो काउस्सग्ग करी-पारी नमोऽर्हत्० कही नीचेनी

स्तुति बोलवीः—

ज्ञानादिगुणयुतानां, नित्यं स्वाध्यायसंयमरतानाम्। विदधातु भुवनदेवी, शिवं सदा सर्वसाधूनाम् ॥१॥

पछी श्रीशांतिदेवताए करेमि काउस्सग्गं अन्नत्थ० कही एक नवकारनो काउस्सग्ग करी-पारी नमोऽर्हत्० कही नीचेनी गाथा बोलवीः—

श्रीचतुर्विधसंघस्य, शासनोन्नतिकारिणी। शिवशांतिकरी भूया-च्छ्रीमती शांतिदेवता ॥१॥

पछी क्षुद्रोपद्रवोपशमावणी करेमि काउस्सग्गं अन्नत्थ० कही एक नवकार, एक उवसग्गहरं, एक लोगस्स ए त्रणेनो भेळो काउस्सग्ग करी-पारी नमोऽर्हत्० कही नीचेनी स्तुति बोलवीः—

सर्वे यक्षाम्बिकाद्या ये, वैयावृत्त्यकरा जिने। क्षुद्रोपद्रवसंघातं, ते द्रुतं द्रावयंतु नः ॥१॥

पछी एक प्रगट नवकार कहेवो. पछी नवणना पाणीए बृहत्शांतिनो पाठ उच्चरते शांतिकळश भरवो. ते उपर नाळियेर मूकी तास्तो वींटी सौभाग्यवती स्त्री तेने माथे ले अने गाजते वाजते ग्रहस्थने घेर पधरावे. पछी विसर्जन करे. नवणनुं पाणी मंत्रित कळशमां भरी घरमां, घर फरती अथवा गाम फरती तेनी धारावाडी गाजते वाजते देवी.

॥ इति श्रीशांतिस्नात्र विधि ॥

(सकलभद्रगणिकृत)

# १९ अथ विसर्जन विधि



प्रथम जुवारनी धाणी शेर पांचनी करवी. पछी माणेक लाडु शेर सवाशेनो करवो, तेमां रूपानाणुं अने विंध्या वगरनुं मोती नाखवुं. पछी ते लाडवो धाणी उपर मूकवो. पछी पतासा, धूप, कुसुमांजलि पासे राखीने विसर्जन करवुं ते आ प्रमाणेः—

१ कुंभ विसर्जन–कुंभनी पासे जइने ॐ विसर विसर स्वस्थानं गच्छ गच्छ स्वाहा। एम बोलवुं.

२ अखंड दीप विसर्जन–अखंड दीपनी पासे जइने ॐ विसर विसर स्वस्थानं गच्छ गच्छ स्वाहा। एम बोलवुं.

३ नंद्यावर्त विसर्जन–नंद्यावर्तनी पासे जइने ॐ विसर विसर स्वस्थानं गच्छ गच्छ स्वाहा। एम बोलवुं.

४ नवग्रहनुं विसर्जनः—

(१) ॐनम आदित्याय सायुधाय सवाहनाय सपरिजनाय पूजां बलिं गृहाण गृहाण स्वस्थानं गच्छ गच्छ स्वाहा।
(२) ॐ नमश्चन्द्राय सायुधाय सवाहनाय सपरिजनाय पूजां बलिं गृहाण गृहाण स्वस्थानं गच्छ गच्छ स्वाहा।
(३) ॐ नमो भौमाय सायुधाय सवाहनाय सपरिजनाय पूजां बलिं गृहाण गृहाण स्वस्थानं गच्छ गच्छ स्वाहा।
(४) ॐ नमो बुधाय सायुधाय सवाहनाय सपरिजनाय पूजां बलिं गृहाण गृहाण स्वस्थानं गच्छ गच्छ स्वाहा।
(५) ॐ नमो बृहस्पतये सायुधाय सवाहनाय सपरिजनाय पूजां बलिं गृहाण गृहाण स्वस्थानं गच्छ गच्छ स्वाहा।

(६) ॐ नमः शुक्राय सायुधाय सवाहनाय सपरिजनाय पूजां वलिं गृहाण गृहाण स्वस्थानं गच्छ गच्छ स्वाहा ।
(७) ॐ नमः शनैश्चराय सायुधाय सवाहनाय सपरिजनाय पूजां वलिं गृहाण गृहाण स्वस्थानं गच्छ गच्छ स्वाहा ।
(८) ॐ नमो राहवे सायुधाय सवाहनाय सपरिजनाय पूजां वलिं गृहाण गृहाण स्वस्थानं गच्छ गच्छ स्वाहा ।
(९) ॐ नमः केतवे सायुधाय सवाहनाय सपरिजनाय पूजां वलिं गृहाण गृहाण स्वस्थानं गच्छ गच्छ स्वाहा ।

५ दश दिक्पाळ विसर्जनः—

(१) ॐ नम इन्द्राय सायुधाय सवाहनाय सपरिजनाय पूजां वलिं गृहाण गृहाण स्वस्थानं गच्छ गच्छ स्वाहा ।
(२) ॐ नमोऽग्नये सायुधाय सवाहनाय सपरिजनाय पूजां बलिं गृहाण गृहाण स्वस्थानं गच्छ गच्छ स्वाहा ।
(३) ॐ नमो यमाय सायुधाय सवाहनाय सपरिजनाय पूजां वलिं गृहाण गृहाण स्वस्थानं गच्छ गच्छ स्वाहा ।
(४) ॐ नमो नैर्ऋताय सायुधाय सवाहनाय सपरिजनाय पूजां वलिं गृहाण गृहाण स्वस्थानं गच्छ गच्छ स्वाहा ।
(५) ॐ नमो वरुणाय सायुधाय सवाहनाय सपरिजनाय पूजां वलिं गृहाण गृहाण स्वस्थानं गच्छ गच्छ स्वाहा ।
(६) ॐ नमो वायवे सायुधाय सवाहनाय सपरिजनाय पूजां वलिं गृहाण गृहाण स्वस्थानं गच्छ गच्छ स्वाहा ।
(७) ॐ नमो धनदाय सायुधाय सवाहनाय सपरिजनाय पूजां वलिं गृहाण गृहाण स्वस्थानं गच्छ गच्छ स्वाहा ।
(८) ॐ नम ईशानाय सायुधाय सवाहनाय सपरिजनाय पूजां वलिं गृहाण गृहाण स्वस्थानं गच्छ गच्छ स्वाहा ।

(९) ॐ नमो ब्रह्मणे सायुधाय सवाहनाय सपरिजनाय पूजां बलिं गृहाण गृहाण स्वस्थानं गच्छ गच्छ स्वाहा ।
(१०) ॐ नमो नागाय सायुधाय सवाहनाय सपरिजनाय पूजां बलिं गृहाण गृहाण स्वस्थानं गच्छ गच्छ स्वाहा ।

६ अष्ट मंगळ विसर्जन—अष्टमंगळना पाटला आगळ ॐ विसर विसर स्वस्थानं गच्छ गच्छ स्वाहा । एम बोलवुं.

७ घंटाकर्ण विसर्जन—घंटाकर्णना पाटला आगळ ॐ विसर विसर स्वस्थानं गच्छ गच्छ स्वाहा । एम बोलवुं.

[बीजे ठेकाणे एम पण छे के–ॐ नम आदित्येभ्यः सवाहनेभ्यः सपरिकरेभ्यः सायुधेभ्यः सर्वोपद्रवाद् रक्षत रक्षत स्वस्थानं गच्छत गच्छत स्वाहा । ए रीते कहेवुं ]

पछी विसर्जन मुद्राए हाथ जोडी आ प्रमाणे बोलवुं:—

जिनेन्द्रभक्त्या जिनभक्तिभाजां, येषां च पूजाबलिपुष्पधूपान् ।
ग्रहा गता ये प्रतिकूलतां च, ते सानुकूला वरदा भवन्तु ॥१॥

देवदेवार्चनार्थाय(नार्थं तु), पुराऽऽहूता हि ये सुराः । ते विधायार्हतां पूजां, यान्तु सर्वे यथागतम् ॥२॥
या पाति शासनं जैनं, सद्यः प्रत्यूहनाशिनी । सा ह्यभिप्रेतसिद्ध्यर्थं, भूयाच्छासनदेवता ॥३॥

कीर्तिश्रियो राज्यपदं सुरत्वं, न प्रार्थये किंचन देव यत्त्वाम् ।
मत्प्रार्थनीयं भगवन् प्रदेयं, स्वदासयते मानय सर्वदाऽपि ॥४॥

भूमौ स्खलितपादानां, भूमिरेवावलम्बनम् । त्वयि जिनापराधानां, त्वमेव शरणं मम ॥५॥
आह्वानं नैव जानामि, न जानामि विसर्जनम् । पूजार्चां नैव जानामि, त्वं गतिः परमेश्वरि ॥६॥
आज्ञाहीनं क्रियाहीनं, मंत्रहीनं च यत् कृतम् । तत्सर्वं क्षमतां देवि, प्रसीद परमेश्वरि ॥७॥
सर्वमंगलमांगल्यं, सर्वकल्याणकारणम् । प्रधानं सर्वधर्माणां, जैनं जयति शासनम् ॥८॥

। इति विसर्जन विधि ।



## २० अथ श्री जिन अभिषेक

चार स्नात्रियाओ, दरेक अभिषेक करती वखते, ते ते अभिषेकना पाणीथी भरेला चार कळशो लईने, दरेक अभिषेकनो श्लोक बोलीने ते चारे कळश जिनबिंब उपर नामे. दरेक वखते कळश नाम्या पछी बिंबनी चंदन, पुष्प, धूपथी पूजा करे.

(१) हिरण्योदकस्नात्र–सुपवित्रतीर्थनीरेण, संयुतं गंधपुष्पसंमिश्रम् ।
पततु जलं बिंबोपरि, सहिरण्यं मंत्रपरिपूतम् ॥१॥

(२) पंचरत्नस्नात्र–नानारत्नौघयुतं, सुगंधिपुष्पाधिवासितं नीरम् ।
पतताद्विचित्रवर्णं, मंत्राढ्यं स्थापनाबिंबे ॥२॥

(३) कषायजलस्नात्र–प्लक्षाश्वत्थोदुम्बर–शिरीषवल्कादिकल्कसंसृष्टम् ।
बिंबे कषायनीरं, पततादधिवासितं जैने ॥३॥

(४) मृत्तिकादिस्नात्र–पर्वतसरोनदीसं–गमादिमृद्भिश्च मंत्रपूतानि ।
उद्वर्त्य जैनबिंबं, स्नपयाम्यधिवासनासमये ॥४॥

(५) पंचगव्यदर्भोदकस्नात्र–दधिदुग्धघृतछगण–प्रस्रवणैः पंचभिर्गवांगभवैः ।
दर्भोदकसंमिश्रैः, स्नपयामि जिनेश्वरप्रतिमाम् ॥५॥

(६) सदौषधिस्नात्र–सद्देव्यादिसदौषधिवर्गेणोद्वर्तितस्य बिंबस्य।
संमिश्रं बिम्बोपरि पतज्जलं हरतु दुरितानि॥६॥
(७) पवित्रमूलिकास्नात्र–स्वपवित्रमूलिकावर्गमर्दिते तदुदकस्य शुभधारा।
बिंबेऽधिवाससमये, यच्छतु सौख्यानि निपतन्ती॥७॥
(८) प्रथमाष्टवर्गस्नात्र–नानाकुष्टाद्यौषधिसंमिश्रे तद्युतं पतन्नीरम्।
बिंबे कृतसन्मंत्रं, कर्मौघं हन्तु भव्यानाम्॥८॥
(९) द्वितीयाष्टवर्गस्नात्र–मेदाद्यौषधिभेदोऽपरोऽष्टवर्गः स्वमंत्रपरिपूतः।
जिनबिंबोपरि निपतन्, सिद्धिं विदधातु भव्यजने॥९॥
(१०) सर्वौषधिस्नात्र–सकलौषधिसंयुक्त्या, सुगंधया घर्षितं सुगतिहेतोः।
स्नपयामि जैनबिंबं, मंत्रिततन्नीरनिवहेन॥१०॥
(११) द्वितीयसर्वौषधिस्नात्र–सर्वामयदोषहरं, सर्वप्रियकारकं च सर्वविदः।
पूजाऽभिषेककाले, निपततु सर्वौषधिवृन्दम्॥११॥
(१२) शतमूलिकास्नात्र–अनन्तसुखसंघात–कन्दकादम्बिनीसमम्।
शतमूलमिदं बिंब–स्नात्रे यच्छतु वांछितम्॥१२॥

(१३) सहस्रमूलिकास्नात्र–सहस्रमूलसर्वर्द्धि–सिद्धिमूलमिहार्हतः।
स्नात्रे करोतु सर्वाणि, वांछितानि महात्मनाम् ॥१३॥

(१४) पुष्पस्नात्र–अधिवासितं सुमंत्रैः, सुमनःकिंजल्कराजितं तोयम्।
तीर्थजलादिसुयुक्तं, कलशोन्मुक्तं पततु बिंबे ॥१४॥

(१५) गन्धस्नात्र–गंधांगस्नानिकया, सन्मृष्टं तदुदकस्य धाराभिः।
स्नपयामि जैनबिंबं, कर्मौघोच्छित्तये शिवदम् ॥१५॥

(१६) वासस्नात्र–हृद्यैराह्लादकरैः स्पृहणीयैर्मन्त्रसंस्कृतैर्जैनीम्।
स्नपयामि सुगतिहेतोः, प्रतिमामधिवासितैर्वासैः ॥१६॥

(१७) चन्दनस्नात्र–शीतलसरससुगन्धिर्मनोमतश्चन्दनद्रुमसमुत्थः।
चन्दनकल्कः सजलो, मंत्रयुतः पततु जिनबिंबे ॥१७॥

(१८) केसरस्नात्र–काश्मीरजसुविलिप्तं, बिंबं तन्नीरधारयाऽभिनवम्।
सन्मन्त्रयुक्तया शुचि, जैनं स्नपयामि शुद्ध्यर्थम् ॥१८॥

(१९) तीर्थोदकस्नात्र–जलधिनदीह्रदकुण्डेषु, यानि सलिलानि तीर्थशुद्धानि।
तैर्मन्त्रसंस्कृतैरिह, बिम्बं स्नपयामि सिद्ध्यर्थम् ॥१९॥

(२०) कर्पूरस्नात्र–शशिकरतुषारधवला, निर्मलगंधा सुतीर्थजलमिश्रा।
कर्पूरोदकधारा, सुमंत्रपूता पततु बिंबे ॥२०॥

(२१) शुद्धजलस्नात्र–चक्रे देवेन्द्रराजैः सुरगिरिशिखरे योऽभिषेकः पयोभि-
र्नृत्यन्तीभिः सुरीभिर्ललितपदगमं तूर्यनादैः सुदीपैः।
कर्तुं तस्यानुकारं शिवसुखजनकं मंत्रपूतैः सुकुम्भै-
र्बिंबं जैनं प्रतिष्ठाविधिवचनपरः पूजयाम्यत्र काले ॥२१॥

॥ इति श्री जिन अभिषेक ॥

[ आचारादिनकरात् ]



## २१ परिशिष्टाणि

### परिशिष्ट १ [चोवीश तीर्थंकरोनां वर्णादिकनी विगत]

(१) श्री ऋषभदेव—वर्ण-सुवर्णना जेवो. लांछन-बळदनुं. जन्मनक्षत्र-उत्तराषाढा. राशि-धन. यक्ष-गोमुख नामनो. यक्षिणी-अप्रतिचक्रा(चक्रेश्वरी)नामनी. यक्षनुं स्वरूप-सुवर्णना जेवो वर्ण; हाथीनुं वाहन; चार हाथ; जमणा बे हाथमां एकमां माळा अने बीजामां वरद; डाबा बे हाथमां एकमां बीजोरानुं फळ अने बीजामां पाश. यक्षिणीनुं स्वरूप-सुवर्णना जेवो वर्ण; गरुडनुं वाहन; आठ हाथ; जमणा चार हाथमां वरद, बाण, चक्र अने पाश; डाबा चार हाथमां धनुष, वज्र, चक्र अने अंकुश.

(२) श्री अजितनाथ—वर्ण-सुवर्णना जेवो. लांछन-हाथीनुं. जन्मनक्षत्र-रोहिणी. राशि-वृष. यक्ष-महायक्ष नामनो. यक्षिणी-अजिता नामनी. यक्षनुं स्वरूप-चार मुख; श्याम वर्ण; हाथीनुं वाहन; आठ हाथ; जमणा चार हाथमां वरद, मुद्गर, माळा अने पाश; डाबा चार हाथमां बीजोरु, अभय, अंकुश अने शक्ति(नामनुं शस्त्र). यक्षिणीनुं स्वरूप-गौर(सफेद)वर्ण; लोहासन (गायनुं वाहन); चार हाथ; जमणा बे हाथमां वरद अने पाश; डाबा बे हाथमां बीजोरु अने अंकुश.

(३) श्री संभवनाथ—वर्ण-सुवर्णना जेवो. लांछन घोडानुं. जन्मनक्षत्र-मृगशिर. राशि-मिथुन. यक्ष-त्रिमुख नामनो. यक्षिणी-दुरितारि नामनी. यक्षनुं स्वरूप-त्रण मुख; दरेक मुखमां त्रण त्रण आंखो; श्याम वर्ण; मोरनुं वाहन; छ हाथ; जमणा त्रण हाथमां

नोळियो, गदा अने अभय; डावा त्रण हाथमां बीजोरु, सर्प अने माळा. यक्षिणीनुं स्वरूप-गौर वर्ण; घेटानुं वाहन; चार हाथ; जमणा वे हाथमां वरद अने माला; डावा वे हाथमां फळ अने अभय.

(४) श्री अभिनन्दन—वर्ण-सुवर्णना जेवो. लांछन वांदरानुं. जन्मनक्षत्र-श्रवण. राशि-मकर. यक्ष-ईश्वर नामनो. यक्षिणी-कालिकादेवी नामनी. यक्षनुं स्वरूप-श्याम वर्ण; हाथीनुं वाहन; चार हाथ; जमणा वे हाथमां बीजोरु अने माळा; डावा वे हाथमां नोळियो अने अंकुश. यक्षिणीनुं स्वरूप-श्याम वर्ण; कमळ उपर बेठेली; चार हाथ; जमणा वे हाथमां वरद अने पाश; डावा वे हाथमां नाग अने अंकुश.

(५) श्री सुमतिनाथ—वर्ण-सुवर्ण जेवो. लांछन क्रौंच पक्षीनुं. जन्मनक्षत्र-मघा. राशि-सिंह. यक्ष-तुंबरु नामनो. यक्षिणी-महाकाली नामनी. यक्षनुं स्वरूप-श्वेत वर्ण; गरुडनुं वाहन; चार हाथ; जमणा वे हाथमां वरद अने शक्ति(नामनुं शस्त्र); डावा वे हाथमां नाग अने पाश. यक्षिणीनुं स्वरूप-सुवर्ण जेवो वर्ण; कमळनुं आसन; चार हाथ; जमणा वे हाथमां वरद अने पाश; डावा वे हाथमां बीजोरु अने अंकुश.

(६) श्री पद्मप्रभस्वामी—वर्ण-रातो. लांछन-कमळनुं. जन्मनक्षत्र-चित्रा. राशि-कन्या. यक्ष-कुसुम नामनो. यक्षिणी-अच्युतादेवी नामनी. यक्षनुं स्वरूप-नील वर्ण; हरिणनुं वाहन; चार हाथ; जमणा वे हाथमां फळ अने अभय; डावा वे हाथमां नोळियो अने माळा. यक्षिणीनुं स्वरूप-श्याम वर्ण; मनुष्यनुं वाहन; चार हाथ; जमणा वे हाथमां वरद अने वीणा (पाठांतरे बाण); डावा वे हाथमां धनुष अने अभय.

(७) श्री सुपार्श्वनाथ—वर्ण-सुवर्ण जेवो. लांछन-साथियानुं. जन्मनक्षत्र-विशाखा. राशि-तुला. यक्ष-मातंग नामनो. यक्षिणी-शांतादेवी नामनी. यक्षनुं स्वरूप-नील वर्ण; हाथीनुं वाहन; चार हाथ; जमणा बे हाथमां बिलुफळ अने पाश; डाबा बे हाथमां नोळियो अने अंकुश. यक्षिणीनुं स्वरूप-सुवर्ण वर्ण; हाथीनुं वाहन; चार हाथ; जमणा बे हाथमां वरद अने माळा; डाबा बे हाथमां शूळ अने अभय.

(८) श्री चंद्रप्रभस्वामी—वर्ण-सफेद. लांछन-चंद्रनुं. जन्मनक्षत्र-अनुराधा. राशि-वृश्चिक. यक्ष-विजय नामनो. यक्षिणी भ्रकुटि नामनी. यक्षनुं स्वरूप-लीलो वर्ण; त्रण आंखो; हंसनुं वाहन; बे हाथ; जमणा हाथमां चक्र अने डाबा हाथमां मुद्‌गर. यक्षिणीनुं स्वरूप-पीळो वर्ण; भुंडनुं (पाठांतरे विलाडानुं) वाहन; चार हाथ; जमणा बे हाथमां तरवार अने मुद्गर; डाबा बे हाथमां ढाल अने पर्शु.

(९) श्री सुविधिनाथ—वर्ण-सफेद. लांछन-मगरनुं. जन्मनक्षत्र-मूल. राशि-धन. यक्ष-अजित नामनो. यक्षिणी-सुतारा-देवी नामनी. यक्षनुं स्वरूप-सफेद वर्ण; काचबानुं वाहन; चार हाथ; जमणा बे हाथमां बीजोरु अने माळा; डाबा बे हाथमां नोळियो अने भालो. यक्षिणीनुं स्वरूप-सफेद वर्ण; बळदनुं वाहन; चार हाथ; जमणा बे हाथमां वरद अने माळा; डाबा बे हाथमां कळश अने अंकुश.

(१०) श्री शीतलनाथ—वर्ण-सुवर्ण जेवो. लांछन-श्रीवत्सनुं. जन्मनक्षत्र-पूर्वाषाढा. राशि-धन. यक्ष-ब्रह्म नामनो. यक्षिणी

अशोकादेवी नामनी. यक्षनुं स्वरूप–चार मुख; दरेक मुखमां त्रण त्रण आंखो; सफेद वर्ण; कमळनुं आसन; आठ हाथ; जमणा चार हाथमां बीजोरु, मुद्गर, पाश अने अभय; डाबा चार हाथमां नोळियो, गदा, अंकुश अने माळा. यक्षिणीनुं स्वरूप–मगना जेवो (लीलो) वर्ण; कमळनुं वाहन(आसन); चार हाथ; जमणा बे हाथमां वरद अने पाश; डाबा बे हाथमां फळ अने अंकुश.

(११) श्री श्रेयांसनाथ—वर्ण–सुवर्ण जेवो. लांछन–गेंडानुं. जन्मनक्षत्र–श्रवण. राशि–मकर. यक्ष–ईश्वर नामनो. यक्षिणी मानवी देवी नामनी. यक्षनुं स्वरूप–सफेद वर्ण; त्रण आंखो; बळदनुं वाहन; चार हाथ; जमणा बे हाथमां बीजोरु अने गदा; डाबा बे हाथमां नोळियो अने माळा. यक्षिणीनुं स्वरूप–सफेद वर्ण; सिंहनुं वाहन; चार हाथ; जमणा बे हाथमां वरद अने मुद्गर; डाबा बे हाथमां कलश अने पाश.

(१२) श्री वासुपूज्यस्वामी—वर्ण–रातो. लांछन–भेंसनुं. जन्मनक्षत्र–शतभिषा. राशि–कुंभ. यक्ष–कुमार नामनो. यक्षिणी प्रचंडादेवी नामनी. यक्षनुं स्वरुप–श्वेत वर्ण; हंसनुं वाहन; चार हाथ; जमणा बे हाथमां बीजोरु अने बाण; डाबा बे हाथमां नोळियो अने धनुष. यक्षिणीनुं स्वरूप–श्याम वर्ण; घोडानुं वाहन; चार हाथ; जमणा बे हाथमां वरद अने शक्ति(नामनुं शस्त्र), डाबा बे हाथमां फुल अने गदा.

(१३) श्री विमलनाथ—वर्ण–सुवर्ण जेवो. लांछन–सूवरनुं. जन्मनक्षत्र–उत्तराभाद्रपदा. राशि–मीन. यक्ष–षण्मुख नामनो. यक्षिणी–विदिता नामनी. यक्षनुं स्वरूप–श्वेत वर्ण; मोरनुं वाहन; बार हाथ; जमणा छ हाथमां फळ, चक्र, बाण, तरवार, पाश

अने माळा; डाबा छ हाथमां नोळियो, चक्र, धनुष, ढाल, अंकुश अने अभय. यक्षिणीनुं स्वरूप–हरताल जेवो वर्ण; कमळनुं आसन; चार हाथ; जमणा बे हाथमां बाण अने पाश; डाबा बे हाथमां धनुष अने नाग.

(१४) श्री अनंतनाथ—वर्ण–सुवर्ण जेवो. लांछन–बाज पक्षीनुं. जन्मनक्षत्र–स्वाति. राशि–तुला. यक्ष–पाताळ नामनो. यक्षिणी–अंकुशादेवी नामनी. यक्षनुं स्वरूप–त्रण मुख; लाल वर्ण; मगरनुं वाहन; छ हाथ; जमणा त्रण हाथमां कमळ, तरवार अने पाश; डाबा त्रण हाथमां नोळियो, ढाल अने माळा. यक्षिणीनुं स्वरूप–सफेद वर्ण; कमळनुं आसन; चार हाथ; जमणा बे हाथमां तरवार अने पाश; डाबा बे हाथमां ढाल अने अंकुश.

(१५) श्री धर्मनाथ—वर्ण–सुवर्ण जेवो; लांछन–वज्रनुं. जन्मनक्षत्र–पुष्य. राशि–कर्क. यक्ष–किन्नर नामनो. यक्षिणी–कंदर्पा नामनी. यक्षनुं स्वरूप–त्रण मुख; लाल वर्ण; काचबानुं वाहन; छ हाथ; जमणा त्रण हाथमां बीजोरु, गदा अने अभय; डाबा त्रण हाथमां नोळियो, कमळ अने माळा. यक्षिणीनुं स्वरूप—गौर वर्ण; मत्स्यनुं वाहन; चार हाथ; जमणा बे हाथमां कमळ अने अंकुश; डाबा बे हाथमां कमळ अने अभय.

(१६) श्री शांतिनाथ—वर्ण–सुवर्ण जेवो. लांछन–हरणनुं. जन्मनक्षत्र–भरणी. राशि–मेष. यक्ष–गरुड नामनो. यक्षिणी–निर्वाणी नामनी. यक्षनुं स्वरूप—सूवरनुं वाहन; सूवरना जेवुं मुख; श्याम वर्ण; चार हाथ; जमणा बे हाथमां बीजोरु अने कमल; डाबा बे हाथमां नोळियो अने माळा. यक्षिणीनुं स्वरूप–गौर वर्ण; कमळनुं आसन; चार हाथ; जमणा बे हाथमां पुस्तक अने

कमळ; डाबा बे हाथमां कमंडळ अने कमळ.

(१७) श्री कुंथुनाथ—वर्ण-सुवर्ण जेवो. लांछन-बकरानुं. जन्मनक्षत्र-कृत्तिका. राशि-वृषभ. यक्ष-गंधर्व नामनो. यक्षिणी-बलादेवी नामनी. यक्षनुं स्वरूप-श्याम वर्ण; हंसनुं वाहन; चार हाथ; जमणा बे हाथमां वरद अने पाश; डाबा बे हाथमां बीजोरु अने अंकुश. यक्षिणीनुं स्वरूप-सफेद वर्ण; मोरनुं वाहन; चार हाथ; जमणा बे हाथमां बीजोरु अने शूळ; डाबा बे हाथमां भुषुंढी नामनुं शस्त्र (जेना उपरना भागमां लोढाना खीला होय छे ते) अने कमळ.

(१८) श्री अरनाथ—वर्ण -सुवर्णजेवो. लांछन-नंद्यावर्त साथियानुं. जन्मनक्षत्र-रेवती. राशि-मीन. यक्ष-यक्षेन्द्र नामनो. यक्षिणी-धारणी नामनी. यक्षनुं स्वरूप-छ मुख; दरेक मुखमां त्रण त्रण आंखो; श्याम वर्ण; हरिण (पाठांतरे शंख)नुं वाहन; बार हाथ; जमणा छ हाथमां बीजोरु, बाण, तरवार, मुद्गर, पाश अने अभय; डाबा छ हाथमां नोळियो, धनुष, ढाल, शूळ, अंकुश अने माळा. यक्षिणीनुं स्वरूप-कृष्ण वर्ण; चार हाथ; कमळनुं आसन; जमणा बे हाथमां बीजोरु अने कमळ; डाबा बे हाथमां पाश अने माळा.

(१९) श्री मल्लिनाथ—वर्ण-प्रियंगु जेवो. लांछन-कळशनुं. नक्षत्र-अश्विनी. राशि-मेष. यक्ष-कुबेर नामनो. यक्षिणी-वैरोट्यादेवी नामनी. यक्षनुं स्वरूप-चार मुख; इंद्रधनु जेवो (पचरंगी) वर्ण; गरुडना जेवुं मुख; हाथीनुं वाहन; आठ हाथ; जमणा चार हाथमां वरद, पाश (पाठांतरे परशु) शूळ अने अभय; डाबा चार हाथमां बीजोरु, शक्ति (नामनुं शस्त्र), मुद्गर, अने माळा.

बीजोरु, शक्ति (नामनुं शस्त्र), मुद्गर अने माळा. यक्षिणीनुं स्वरूप–कृष्ण वर्ण; कमळनुं आसन; चार हाथ; जमणा बे हाथमां वरद अने माळा; डाबा बे हाथमां बीजोरु अने शक्ति(नामनुं शस्त्र).

(२०) श्री मुनिसुव्रतस्वामी—वर्ण–काळो. लांछन–काचबानुं. जन्मनक्षत्र–श्रवण. राशि–मकर. यक्ष–वरुण नामनो. यक्षिणी–वरदत्ता नामनी. यक्षनुं स्वरूप–चार मुख; दरेक मुखमां त्रण त्रण नेत्रो; सफेद वर्ण; बळदनुं वाहन; जटारूप मुगटथी शोभतो; आठ हाथ; जमणा चार हाथमां बीजोरु, गदा, बाण अने शक्ति(नामनुं शस्त्र); डाबा चार हाथमां नोळियो, कमळ, धनुष अने पर्शु. यक्षिणीनुं स्वरूप–गौर वर्ण; भद्रासन उपर बेठेल; चार हाथ; जमणा बे हाथमां वरद अने माळा; डाबा बे हाथमां बीजोरु अने कुंभ(पाठांतरे शूळ).

(२१) श्री नमिनाथ—वर्ण–सुवर्ण जेवो. लांछन–नील कमळनुं. जन्मनक्षत्र–अश्विनी. राशि–मेष. यक्ष–भृकुटि नामनो यक्षिणी–गांधारी नामनी. यक्षनुं स्वरूप–चार मुख; दरेक मुखमां त्रण त्रण नेत्रो; सुवर्ण जेवो वर्ण; बळदनुं वाहन; आठ हाथ; जमणा चार हाथमां बीजोरु, शक्ति(नामनुं शस्त्र), मुद्गर अने अभय; डाबा चार हाथमां नोळियो, पर्शु, वज्र अने माळा. यक्षिणीनुं स्वरूप–सफेद वर्ण; हंसनुं वाहन; चार हाथ; जमणा बे हाथमां वरद अने तरवार; डाबा बे हाथमां बीजोरु अने घडो.

(२२) श्री नेमिनाथ—वर्ण–श्याम. लांछन–शंखनुं. जन्मनक्षत्र–चित्रा. राशि–कन्या. यक्ष–गोमेध नामनो. यक्षिणी–कुष्मांडी (अंबिका)नामनी. यक्षनुं स्वरूप–त्रण मुख; श्याम वर्ण; पुरुषनुं वाहन; छ हाथ; जमणा त्रण हाथमां बीजोरु, पर्शु अने चक्र;

डावा त्रण हाथमां नोळियो, शूळ अने शक्ति(नामनुं शस्त्र). यक्षिणीनुं स्वरूप–सुवर्ण जेवो वर्ण; सिंहनुं वाहन; चार हाथ;जमणा बे हाथमां बीजोरु अने पाश; डाबा बे हाथमां पुत्र अने अंकुश.

(२३) श्री पार्श्वनाथ—वर्ण–प्रियंगु जेवो. लांछन–सर्पनुं. जन्मनक्षत्र–विशाखा. राशि–तुला. यक्ष–पार्श्व नामनो. यक्षिणी–पद्मावती नामनी. यक्षनुं स्वरूप–हाथिजेवुं मुख; सर्पनी फेणथी शोभित मस्तक; श्याम वर्ण; काचबानुं वाहन; चार हाथ; जमणा बे हाथमां बीजोरु अने सर्प; डाबा बे हाथमां नोळियो अने सर्प. यक्षिणीनुं स्वरूप–सुवर्णनो वर्ण; कुकडानुं वाहन; चार हाथ; जमणा बे हाथमां कमळ अने पाश; डाबा बे हाथमां फळ अने अंकुश.

(२४) श्री महावीरस्वामी—वर्ण–सुवर्ण जेवो. लांछन–सिंहनुं. जन्मनक्षत्र–उत्तराफाल्गुनी. राशि–कन्या. यक्ष–मातंग नामनो. यक्षिणी–सिद्धायिका नामनी. यक्षनुं स्वरूप–श्याम वर्ण; हाथीनुं वाहन; बे हाथ; जमणा हाथमां नोळियो; डाबा हाथमां बीजोरु. यक्षिणीनुं स्वरूप–लीलो वर्ण; सिंहनुं वाहन, चार हाथ, जमणा बे हाथमां पुस्तक अने अभय, डाबा बे हाथमां बिजोरु अने बाण(पाठांतरे वीणा).

# परिशिष्ट २

## [चोवीस तीर्थंकरोनां लांछन, राशि, नक्षत्र, वर्ग, योनि तथा राशिमेल]

नक्षत्रयोनिश्च षडष्टकं च। वर्गाष्टकं नाडिगतं च ऋक्षं॥ देवादि नक्षाणि विशोपकाश्च। षड्भिः प्रकारैः प्रतिमा विलोक्यते॥
देवाभिधानवर्गांक आत्मवर्गांकयोर्द्वयोः॥ संमील्याष्टगुणो भक्तौ देयं लभ्यं विशोपकाः॥

| प्रभु | लांछन | राशि | नक्षत्र | वर्ग | योनि | राशिमेल |
|---|---|---|---|---|---|---|
| १ ऋषभ | वृषभ | धन | उ.षा. | मानव | नकुल | मेष-मिथुन-सिंह-कन्या—तुला-धन-कुम्भ-मीन-कर्क. |
| २ अजित | गज | वृष | रोहिणी | मानव | सर्प | वृष-कर्क-सिंह-कन्या-तुला-वृश्चिक-मकर-कुम्भ-मीन, |
| ३ संभव | अश्व | मिथुन | मृगशीर्ष | देव | सर्प | मिथुन-सिंह-कन्या-तुला-धन-मकर-कुम्भ-मीन-मेष. |
| ४ अभिनन्दन | कपि | मकर | श्रवण | देव | मार्जार | मकर-मीन-मेष-वृष-कर्क-सिंह-कन्या-तुला-वृश्चिक. |
| ५ सुमति | क्रौञ्च | सिंह | मघा | राक्षस | उन्दूर | सिंह-तुला-वृश्चिक-धन-कुम्भ-मीन-मेष-वृष-मिथुन. |
| ६ पद्मप्रभ | कमल | कन्या | चित्रा | राक्षस | वाघ | वृष-मिथुन-कर्क-कन्या-वृश्चिक-धन-मकर-मीन-कुम्भ. |
| ७ सुपार्श्व | स्वस्तिक | तुला | विशाखा | राक्षस | वाघ | तुला-धन-मकर-कुम्भ-मीन-मेष-वृष-मिथुन-कर्क-सिंह. |
| ८ चन्द्रप्रभ | शशी | वृश्चिक | अनुराधा | देव | मृग | वृष-कर्क-सिंह-कन्या-वृश्चिक-धन-मकर-मीन-कुंभ. |
| ९ सुविधि | मकर | धन | मूल | राक्षस | श्वान | कुम्भ-धन-मीन-मेष-मिथुन-कर्क-सिंह-कन्या-तुला. |
| १० शीतल | श्रीवत्स | धन | पूर्वाषाढा | मानव | वानर | धन-कुंभ-मीन-मेष-मिथुन-कर्क-सिंह-कन्या-तुला |
| ११ श्रेयांस | खड्गी | मकर | श्रवण | देव | वानर | मकर-मीन-मेष-वृष-कर्क-सिंह-कन्या-तुला-वृश्चिक |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| १२ वासपूज्य | महिष | कुम्भ | शतभिषा | राक्षस | अश्व | कुम-मेष-वृष-कर्क-सिंह-कन्या-तुला-वृश्चिक-धन-मिथुन. |
| १३ विमलनाथ | सूकर | मीन | उ.भा | मानव | छाग | मीन-वृष-मिथुन-कर्क-सिंह-कन्या-वृश्चिक-धन-मकर. |
| १४ अनन्तनाथ | सींचाणो | तुला | स्वाति | देव | हस्ती | मेष-मिथुन-कर्क-सिंह-तुला-धन-मकर-मीन-कुंभ-वृष. |
| १५ धर्मनाथ | वज्र | कर्क | पुष्प | देव | छाग | कर्क-कन्या-तुला-वृश्चिक-धन-मकर-कुंभ-मेष-वृष. |
| १६ शांतिनाथ | मृग | मेष | भरणी | मानव | हस्ती | मेष-मिथुन-कर्क-सिंह-तुला-धन-मकर-कुम्भ-वृश्चिक. |
| १७ कुथुनाथ | छाग | वृष | कृत्तिका | राक्षस | छाग | वृष-कर्क-सिंह-कन्या-तुला-वृश्चिक-मकर-कुम्भ-मीन. |
| १८ अरनाथ | नंद्यावर्त | मीन | रेवती | देव | हस्ती | मीन-वृष-मिथुन-कन्या-सिंह-कर्क-वृश्चिक-धन-मकर. |
| १९ मल्लिनाथ | कुम्भ | मेष | अश्विनी | देव | अश्व | मेष-मिथुन-कर्क-सिंह-तुला-वृश्चिक-धन-मकर-कुंभ. |
| २० मुनिसुव्रत | कूर्म | मकर | श्रवण | देव | वानर | मकर-मीन-मेष-वृष-कर्क-मिथुन-कन्या-तुला-वृश्चिक. |
| २१ नमिनाथ | नीलोत्पल | मेष | अश्विनी | देव | अश्व | मिथुन-कर्क-सिंह-तुला-मेष-वृश्चिक-धन-मकर-मीन. |
| २२ नेमिनाथ | शङ्ख | कन्य | चित्रा | राक्षस | वाघ | वृष-मिथुन-कर्क-कन्या-वृश्चिक-धन-मकर-मीन-कुम्भ. |
| २३ पार्श्वनाथ | सर्प | तुला | विशाखा | राक्षस | वाघ | मेष-मिथुन-कर्क-सिंह-तुला-धन-मकर-मीन-कुंभ-वृष. |
| २४ वर्धमान | सिंह | कन्या | उ फा | मानव | वृषभ | वृष-मिथुन-कर्क-कन्या-वृश्चिक-धन-मकर-कुम्भ-मीन, |

## परिशिष्ट ३

### [मुद्राओनी समजण]

१ वज्रमुद्रा—डाबा हाथ उपर जमणो हाथ मूकी बे हाथ कांडा उपर लावीने टचली आंगळी तथा हाथना अंगुठा भेगा करवा. बाकीनी आंगळीओ सर्व फोरवीने राखवी.

२ पद्ममुद्रा—बे हाथना अंगुठा मध्य वच्चे उभा राखीने बाकीनी सर्व आंगळीओ फोरवीने उंची राखवी.

३ चक्रमुद्रा—जमणा हाथ उपर डाबो हाथ आवे, बे हाथ उपराउपरी आडा राखीने सर्व आंगळीओ उपर आंगळीओ पहोळी करीने राखवी. ते मध्ये डाबा हाथनी आंगळीओ जमणा हाथनी तरफ राखवी.

४ परमेष्ठिमुद्रा—जमणा हाथनी पांच आंगळीओ उभी राखी ते मध्ये वचली आंगळी मध्य वच्चे राखीने आंगळीओ दाबीने बतावनी.

५ अंजलिमुद्रा—बे हाथनी आंगळीओ जोडाजोड आडी राखीने बे हाथना अंगुठा उपर अधर राखवा.

६ सौभाग्यमुद्रा—बे हाथनी आंगळीओ भीडावीने तर्जनी आंगळी अनामिका मध्ये भरावीने आंटी पाडीने बतावची.

७ गरुडमुद्रा—दश आंगळीओने भरावी उथलावीने टचली आंगळीओ बे उभी करीने बतावची.

८ मुक्ताशुक्तिमुद्रा—मोतीनी छीपनी जेम बे हाथ भेगा करीने ललाटे लगाडवा.

९ तर्जनीमुद्रा—डाबो हाथ छाती उपर मूकीने जमणी दिशा सामो आडो राखीने जमणा हाथनी मुठी उपर मूकीने तर्जनी आंगळी उभी राखीने बताववी.

१० मुद्गरमुद्रा—जमणो हाथ उभो राखीने बताववो. हेठळ डाबो हाथ आडो राखवो.

११ प्रवचनमुद्रा—बे हाथनी त्रण त्रण आंगळीओ समी राखीने बे हाथनी तर्जनी आंगळीओ आडी राखीने अंगुठा भरावीने बताववी. ते मध्ये जमणा हाथनी आंगळीओ डाबी तरफ भीडावीने डाबी तरफनी आंगळीओ जमणी तरफ भीडावी छाती उपर राखी बताववी.

१२ धेनुमुद्रा—गायना चार आंचळनी जेम आंगळीओ भीडावीने मुद्रा करीने बताववी. आंटी पाडीने बताववी.

१३ गणधरमुद्रा—जमणो हाथ उभो राखीने माळा गणीए ते आकारे बताववी. हेठळ डाबो हाथ आडो राखवो.

१४ अंकुशमुद्रा—तर्जनी आंगळी उभी राखीने वचली आंगळी अर्धी वांकी वाळवी.

१५ कच्छपमुद्रा—एक हाथनी चार आंगळीओ उंधी राखी बीजा हाथनी चार आंगळी उपर उंधी मूकीने बे हाथना अंगुठा छुटा फरकाववा.

१६ मत्स्यमुद्रा—एक हाथनी त्रण आंगळीओ तर्जनी, मध्यमा अने अनामिका—उंधी राखीने बीजा हाथनी ए ज त्रण आंगळीओ उपर स्थापी बे बाजुए बे हाथनी कनिष्ठिकाओ तथा बे अंगुठा फरकावी देखाडवा.

१७ आसनमुद्रा—बेठाना आकारे बताववी.

# परिशिष्ट ४

## [ बीजाक्षर कोष ]

१ प्रणवः ॐ ध्रुवः बीजं. विनयप्रदीपः तेजोबीजं वा।
२ ऐं वाग्तत्त्वबीजं।
३ क्लीँ कामबीजं।
४ ह्रीँ शक्तिबीजं।
५ ह्रँ शिवबीजं. शिनशासनबीजं।
६ क्षि पृथ्वीबीजं।
७ पः अप्बीजं।
८ ॐ तेजोबीजं।
९ स्वा वायुबीजं।
१० हाँ आकाशबीजं।
११ ह्रीँ मायाबीजं, त्रैलोक्यनाथबीजं।
१२ क्रौँ अंकुशबीजं, निरोधबीजं वा।
१३ आँ पाशबीजं।
१४ फुट् विसर्जनबीजं चालनं वा।
१५ वषट् दहनबीजं।
१६ वोषट् पूजाग्रहणम् आकर्पणम् वा।
१७ संवोषट् आकर्पणं।
१८ ब्लूं द्रावणं।
१९ ब्लैं आकर्पणम्।
२० ग्लौँ स्तंभनं।
२१ क्ष्मौँ महाशक्तिः (ह्रीं महाशक्तिः)।
२२ वौँषट् आह्वानं।

२३ ऐ छलनं ।
२४ क्ष्वीँ विपापहारबीजं ।
२५ चः चंद्रबीजं ।
२६ घः ग्रहणबीजं वैरबंध वा ।
२७ द्राँ द्रीँ क्लीँ ब्लूँ सः पंच बाण ।
२८ ह्रूँ विद्वेषणं द्वेषे बीजं वा ।
२९ स्वाहा शांतिकं होमबीजं वा ।
३० स्वधा पौष्टिकं ।
३१ नमः शोधनं बीजं ।
३२ ह्र गगनबीजं ।
३३ श्रीँ लक्ष्मीबीजं, ज्ञानबीजं वा ।
३४ अर्हं ज्ञानबीजं जिनराजबीजं ।
३५ ई विष्णुबीजं ।
३६ इ हरबीजं ।
३७ ल स्तंत्रबीजं ।
३८ क्षः फुट् अस्त्रबीजं ।
३९ यः विसर्जनं उचाटनं वा ।
४० य वायुबीजं ।
४१ जूँ विद्वेषणबीजं ।
४२ ह्लीं अमृतबीजं ।
४३ क्ष्वीँ सोमबीजं ।
४४ ख खादनबीजं ।
४५ हं सः विपापहारबीजं ।
४६ क्ष्म्रीँ पिंडबीजं ।
४७ ग्राँ ग्रों ग्रीँ ग्रूँ ।
ब्लाँ ब्लीँ ब्लैं ब्लौँ ।

इति बीजकोष [ पूज्य आचार्य श्री जयसिंहसूरिद्वारा प्राप्त ]

# परिशिष्ट ५

[ बिंबप्रवेश, अष्टोत्तरीस्नात्र के शांतिस्नात्रमां जोईता सामाननी यादी. ]

[आ यादीमां नवग्रह, दश दिक्पाळ, ध्वजापूजन, कुंभस्थापन वगेरे क्रियाओमां जोईती चीजोनो समावेश थई जाय छे.]

गांधीनी दुकानेथी मळतो सामान—

वंदु शेर १।
पीपामूळ शेर १।
श्रीफळ नंग. १५१
खारेक शेर ५)
टोपरां शेर ५)
सुकी द्राक्ष शेर १।
जायफळ नंग १४१
राती सोपारी नंग १५
काळी सोपारी नंग ७
मींढळ-मरडाशींगी नंग १५१
सेवर्धनी सोपारी शेर ३॥।
टोपराना गोळा नंग ११०
पिस्ता शेर १।
चारोळी शेर १।
अखरोट नंग १४१
तज शेर १।
लविंग शेर ०॥
पलची शेर ०॥
जावंत्री शेर ०॥
रोठी सोपारी शेर १०)
कमळकाकडी शेर ०॥
बदाम शेर ४)
बदामना गोळा शेर १।
पीठी शेर १)
आवळा शेर १
कंकोडी शेर ०॥।
कपूर तोला ४
रतांजळी नवटांक
मरचकंकोळ दाणा १०
खांड-बुरु शेर १०)
किद्रूप धूप शेर १०)
मीठुं शेर १।
हळदर शेर ०।
धाणाजीरुं शेर ०।
राई नवटांक
मेथी „
गोळ शेर १०)
गुलाल तोला ५)
सिंदूर तोला ५)
खडी शेर १)
(पीठ धोळवा माटे)
जटामांसी

सरैयानी दुकानेथी तथा विद्याशाळापांथी मळतो सामानः—

अगरनो चुवो तोलो ०।
सुखडना तेलनी शीशी नं० २
पाकुं तेल शेर १)

अगरनुं लाकडुं शेर १)
काचो हिंगळोक तोलो १)
बरास उंचो तोला ४)
बरास हलको तोला १०)
केसर तोला १०)
सुखडना ककडा नंग २
(बशेर बशेरना)
गोरुचंदन बे वाल
अंबर बे वाल
कस्तूरी चार वाल
दशांग धूप शेर ५)
अगरबाट शेर १)
वासक्षेप शेर १॥
अत्तर तोला बे
पुंजणी नंग बे
मोरपींछ नंग बे
वाळाकुंची नंग बे

रुपाना वरख थोकडी २०
सोनाना वरख पांच वाल
कामळी नंग ४
सर्वौषधि
कषायचूर्ण
सदौषधि
शतमूलिका
अष्टवर्ग पहेलो
" बीजो
आठ जातनी माटी
गुलाबजळ

शेठना घरेथी मळतो सामान:-

सोनानी नवकारवाळी
रूपानी "
स्फटिकनी "
केरबानी "
अकलबेरनी नवकारवाळी
परवाळानी "
गोमेदकनी "
नवग्रहनो पाटलो
दश दिक्पाळनो पाटलो
अष्टमंगळनो पाटलो
रूपाना पुंखणां
सोनानी वाटकी

चोरानी दुकानेथी मळतो सामान:-

फानस मोटां नग बे
फानस नानां नग ४
कंकावटी नंग १
वेलण नंग ४
चाकु नंग-१
कातर नंग-१
कागळ तथा पेन्सील.

दीवासळीनी पेटी नंग ६
चींझणा नंग-२
तांबाना खीला नंग ४
(छ इंचना)
लोढानी खीली नवटांक
(बे त्रण इंचनी)

सोनीने त्यांथी मळतो सामान:—

सोनानां फूल वाल २
रूपानां फूल वाल ८
रूपानी समाणी नंग-१
(आंगी रचवा माटे)

झवेरीनी दुकानेथी मळतो सामान:—

पंचरत्ननी पोटली नंग ३०
अणविंध्युं मोती नंग १

काપडियाने त्यांथी मळतो सामानः–

पांचपटो गज १।
लीलो रेजो गज ५॥
पीळो रेजो गज ७)
जांबली रेजो गज ०।
काळो रेजो गज ०॥
आसमानी रेजो गज ०॥
लीली छींट गज ०॥
धोळुं रेशमी गज ३)
लाल रेशमी गज ५॥
लाल कसबी (ध्वजा माटे) गज १
लाल कसुंबानो ताको १
नेनसुखनो ताको १
गरणां खादीनां नंग ४
धोतियां नंग १२
खेस नंग १२
पंचियां नंग ५
अंगलूछणां शुद्ध झीणी खादीना
पाघडीयो (सरपाव माटे)
साडीयो (सरपाव माटे)

कुंभारने त्यांथी मळतो सामानः–

माटलां मोटां नंग १५
माटली नानी नंग १५
लोटी नंग २५
घडा नंग १०
कुंडी नंग १०
काची इंटो नंग ४००
दीवाढांकणी नंग ५१
शरावलां नंग ५१
(जाब विनानां)
कोडियां नंग ३०
अष्ट मंगळचीतरेला घडा नंग ७
चीतरेला सादा घडा नंग १०
माटी
अडाया छाणानो भूको

कंदोइ पासे घरे तैयार करावावानुं नैवेद्यः–

+कणसइना लाडु नग १५१
लाकडशी लाडु शेर १०)
पेंडा
घेवर
खाजां
बरफी
खारीपुरी

+ नैवेद्य माटे एक प्रकारथी वधारे पोतानी शक्ति होय तेटली जातनां नैवेद्य धरी शकाय छे. अष्टोत्तरी स्नात्रने बदले शांतिस्नात्र होय तो नैवेद्य नं. ४१ जाणवां

टोपरापाक
मगज
सुतरफेणी
मोहनथाळ
मेसुर
पतासा शेर १०
माणेकलाडु

फळवाळाने त्यांथी लाववानो सामान*

बीजोरां नंग ३
शेरडीना सांठा नंग ५

* पोतानी शक्ति प्रमाणे एक जातिथी मांडीने अनेक प्रकारनां फळो धरी शकाय. अष्टोत्तरी स्नात्रने बदले शांतिस्नात्र होय तो फळो नग ४१ समजवां. प्रभुनी प्रतिष्ठा वखते धरवाना जुदां समजवां.

केळां नंग १५१
तरबुच
पोपैया
जामफळ
दाडम
नारंगी
मुसंबी
केरी
फणस

माळीने त्यांथी लाववानो सामानः—

अघेडानी सोटी नं २
आसोपालवना तोरण
फुल दरेक जातनां रोज (रोज जोईए तेटलां)
डाभ
धरो

अनाज भेळां करवानी विगत

चोखा मण २)
चणा शेर ७)
मग शेर ७)
चोळा शेर ७)
अडद शेर ७)
जव शेर ७)
जुवार शेर १२)
गोधम शेर १०)
डांगर शेर १८)
तल काळा शेर ०॥
सरसव शेर १।
ममरा शेर ०।
चणानी दाळ शेर ०॥
मगनी दाळ शेर ०॥
(फोतरावाळी)
अडदनी दाळ शेर ०॥
(फोतरावाळी)
चणानो लोट शेर २)
घउंनो लोट शेर १५)
अडदनो लोट शेर ४)
चोळानो लोट शेर ४)
चोखानो लोट शेर २)
घउंनां फाडा शेर ७)
अखंड चोखा गणेला पक्क लाख
मींढि [वरो] शेर २)
धोळा सरसव नवटांक
कपासिया शेर १)
वाल शेर १)

परचुरण सामानः—

गायनुं घी मण १)
भेंसनुं घी मण ०॥
फोलसा शेर ५)
कुंवारी कन्याए कांतेलुं—
सुतर शेर १।
सुतरनी आंटी नंग १
फळश रूपाना नंग ४
" सोनानो नंग १
" १०८ नाळवानो नंग १
वाटकी नानी नंग २५
रूपानी वाटकी नंग १
रूपानी रकाबी नंग १
रकाबी नग २५
थाळ नंग ५१
मोटा थाळ नंग ७
सादा पाटला (खीला विनाना) नंग २०
बाजोठी नंग १०
जीभवाळां कोडियां नंग ४
रामणदीवो नंग १
मोड

| | | | |
|---|---|---|---|
| [illegible] | [illegible] नंग २ | पांचना [illegible] „ ४ | चोपिया „ २ |
| [illegible] | [illegible] आडी [illegible] (पाणी भरवा माटे) | तीर्थनां पाणी | तपेलीओ नानी मोटी „ १० |
| [illegible] | [illegible] नंग २ | छोडिया (होम माटे):- | तावेथा „ २ |
| [illegible] | तांबाकुंडी „ २ | पींपळना | झारो „ १ |
| [illegible] नंग ५ | [illegible] „ २ | आंबाना | तावडी मोटी „ १ |
| [illegible] नंग ५ | [illegible] „ १ | फोठना | तावडी नानी „ १ |
| [illegible] ४ | कनात „ १ | उमराना | वाटका „ २५ |
| [illegible] नंग २ | पुंठिडुं „ १ | आसोपालवना | थाळी „ १५ |
| [illegible] नंग २ | [illegible] पट नंग १ | गुगळ दोर ५ | कांसानी थाळी „ १० |
| [illegible] बाजोठ नंग १ | पगा „ २ | यज्ञ यक्षिणीनां रेशमी वस्त्रो | वाढी „ २ |
| [illegible] नंग १ | रेशमीनो पट „ १ | सोनानी सळी | तपेलुं मोटुं „ १ |
| [illegible] नंग २ | सेवननी पाटली „ १ | चोपंडा रूपिया नंग २ | तपेलुं नानुं „ १ |
| [illegible] नंग २ | गंगाजळ | नागरवेलनां पान (रोज जोईए तेटलां) | पाणीना वेगडा „ २ |
| [illegible] नंग २ | [illegible] | बीजां वासणनी विगतः- | कथरोट „ ५ |
| [illegible] नंग २ | [illegible] बाजोठ नंग १ | तांबानी गोळी नंग १ | लोटा „ ५ |
| [illegible] नंग १ | भोरसियो „ २ | फडछी „ २ | तळवानो सोयो „ १ |
| [illegible] नंग १ | | | |

कुंभस्थापन, दीपस्थापन तथा जुवारा वाववानी विधिमां जोईता सामाननी यादीः—

चीतरेलो कुंभ १
नाडाछडी दडो १
अघेडानी लेखण
दशांगधूप नवटांक
धूपधाणुं
कुसुमांजलि माटे वासचोखा
कंकु नवटांक
चोखा शेर १।
सोपारी शेर १)
रूपिया रोकडा ३
छुटा पेसा एक रूपियाना
एक रूपियानुं परचुरण
पचरत्ननी पोटली नंग २
नागरवेलना पान „ १०
श्रीफळ „ ३
मींढळ „ १२
डाभ अने धरोवाळुं ग्रीवासूत्र
फूलहार नं. ५
केसर (घसेलुं) तोलो ०।
व्रीहि शेर १।
वासक्षेप नवटांक
जीभवाळुं मोटुं कोडियु नं १
१०८ के २७ तारनी दीवेट
पलाळेली माटी
सरावलां (काळा डाघ वगरनां) ४, ८ के १२
खातर-अडाया छाणानो भूको तथा कोरी माटी
गरम पाणी
दूध शेर १।
सात धान्य शेर २॥
[जव, जुवार, घरी, चणा, मग, सरसव अने घऊ]
स्नात्रनो सामान [बाजोठ वगेरे]
सामान्य रीते अष्टप्रकारी पूजानो सामान
सोनाना वरख थोकडी १
कंकोडी
आंवळां
तेल
रूपेरी वरख थोकडी १
गायनुं घी
मोटु फानस
लीलो पीळो तास्तो
छुटां फूल
वाढी
थाळी वेलण
वांसनां जवारियां नग ४
तांवानो खीलो छ इचनो
चंदरवो (कुंभ उपर बांधवो)
अगरवाट
कंद्रूप धूप
पांच फळ
पांच नैवेद्य
पतासां
साकर
घंट
दर्पण
चामर
पखो
कळश
अंगलुछणां

जलयात्राना सामाननी यादी:–

सिंहासन
बाजोठ
चंदरवो
तोरण
पुंठियुं
पुंखणां
कानस बे (श्रीफल युक्त)
घी शेर ०।
नागरवेलनां पान नंग ७१
सोपारी ,, ५१
बदामो ,, ३१
पतासां ,, २५
धोतियां ,, १२
नेप ,, १२
दंडिया ,, २
कमान ,, २
कामळी नंग २
थाळी ,, ४
कंकु
नाडाछडी
दुध शेर ३)
श्रीफळ नंग ११
छुटां फूल
फूलनी माळाओ
आरती-मंगळदीवो
रूनो गाळो (पोल)
सरपोस
कळश नंग ४
रकाबीओ नंग ७
वाटकीओ ,, १०
पींछणो
फोलसा
साकरिया चणा नंग ३५
खारेक ,, ३५
सोनाना वरख थोकडी १
रूपेरी वरख ,, २
घंटडी
चामर
दर्पण
पाटला नग ३
(ग्रह दिक्पाळ, अष्टमंगळना)
पाटला नंग १२
सादा घडा (डाघ वगरना) नंग ४
पाणीनो लोटो
पाणी सींचवानी दोरी
(सुतरनी)
रेजो लीलो बे ककडा
रेजो पीळो बे ककडा
मुहपत्ति नग १२
नारंगी ,, ५
केळां ,, ८
खाजां नंग ३
पुरी ,, ४
चीपियो ,, १
चोखा शेर ३)
कंद्रूप धूप
दशांग धूप
अगरबत्ती
वासक्षेप
कपूर
घसेलुं केसर (बे वाटकी)
थाळी–वेलण
मींढळ मरडाशींगी नंग ७
नावानी कुंडी
रूपानाणुं
छुटा पैसा
धूपधाणुं
अघेडानी लेखण
आसोपालव के आंबानां तोरण

पंचामृत
अंगलुंछणां नंग ४
लुगडाना ककडा ,, २
सात धान्यना वाकळा
पेंडा नंग ५
जामफळ ,, ८
लाडवा ,, ८
दाडम ,, ५
पंचरत्ननी पोटली नं. ३
नीशान डंको
वाजिंत्रो
चामर
पालखी
रथ
छडी
रामणदीयो
छत्र
श्रीशांतिनाथजीनी प्रतिमा

दूध (धारावाडी वास्ते)
मोड
घाटडी

१०७ कुवानां पाणी लेवा जतां जरूरी सामाननी यादीः—

कंकु
नाडाछडी
नागरवेलनां पान नंग १२१
सोपारी ,, ११५+
बदाम ,, ११५
खारेक ,, ११५
पतासां ,, ११५
श्रीफळ ,, २

+ जो २७ कुवानां पाणी लाववानां होय तो चीजो नंग ३१ लेवी. पान ५१ लेवां.

घीनो प्यालो
रूनो गालो
दीवासळीनी पेटी
घसेलुं केसर
वासक्षेप
दशांग धूप
चोखा शेर १।
सर्वजातनां फूल
गागर नंग १
गरणुं नंग १
पंचियुं नंग १
धोतियां नंग ३
खेस नंग ३
कामळी नंग २
दुशाल नंग २
पाटला नंग ६
थाळीयो नंग ५
थाळी-वेलण

घंटडी
दर्पण
पीत्तळनी लोटी
फानस
धूपधाणुं
पीळुं लुगडुं
लाल कसुंबो गज ०॥
कोलसा
वींझणो
सोनेरी रूपेरी वरख
सात धान्यनां वाकळा
पंचरत्ननी पोटली नंग १
वाटकी नंग ५
मींढळ मरडाशिंगा नंग ५
माटीनां कोडियां नंग ४
कुंडी नंग २
गाडी (वाहन)
वैला

खांड शेर ३)
लाडवा नंग २
पुरी नंग २
खाजा नंग २
घीसियो नंग १
कलश नंग १
रकेबी नंग १

नवग्रह, दशदिक्पाळ अने
अष्टमंगळ पूजननो
सामानः—

केशर तोलो ।)
कस्तुरी वाल १
लुगडाना ककडा नंग २
बरास तोलो ०॥
काळो हिंगळोक तोलो ०॥
गोरोचन वाल २
कपूर तोलो ०।
रतांजलिनुं लाकडुं नवटांक
अम्बर वाल ०॥
मरच कंकोल दाणा ८
वासक्षेप शेर ०।
कंकु नवटांक
अगरनो भुको तोलो ०।
सुगन्धनुं तेल तोलो १)
अगरनुं लाकडुं
दूध शेर १)
दहीं नवटांक
नाडाछडी श्रण दडा
मींढळ नंग १०
मरडाशींगी
सोनेरी वरख थोकडी १
रूपेरी वरख थोकडी १
फानस प्याला साथे नंग ३
दशांग धूप शेर ०॥
घेवर नंग ५
घेंदीदळ (घोटाना लोटना)
नंग ५
पेंडा नंग ५
चुरमाना लाडु नंग ४
ममराना लाडु नंग ४
गोळधाणीना लाडु नंग ३
मगनी दाळना लाडु नंग ४
चणानी दाळना लाडु ,, ४
पुरी ,, ५
खाजा ,, ५
अडदनी दाळना लाडु ,, ५
मोतैया लाडु ,, २
काळा तलना लाडु ,, ४
पतासा ,, ५०
गलेफां ,, ५
मेसूर ककडा ५
(पम वे श्रण जातनां नैवेद्यना
पांच पांच ककडा)
नागरवेलनां पान नंग ५१
नवग्रहनो पाटलो
दशदिक्पालनो पाटलो
अष्टमंगळनो पाटलो
सीला वगरना पाटला नंग १०
लीली द्राक्ष नवटांक
शेरडी धोळी नंग ५
राती सोपारी नंग १५
काळी सोपारी ,, ४
नारंगी ,, ७
जंबीर ,, ७
मोसंबी ,, ७
बीजोरां ,, ३
श्रीफळ ,, ७

दाडम नंग ७
केळां „ ५
उजळी बादाम „ ५
खारेक „ ५
सोपारी „ ३५
अखरोट „ ३५
बदाम „ ३५
जायफळ „ ३१
कमलकाकडी „ ३५
तज ककडा „ ३५
लवींग „ ३५
एलची „ ३५
बदाम „ ३५
काजु „ ३१
साकर „ ३१
रूपिया तथा पैसा
चंपो
डमरो

जासुद
गुलाब
अघेडानी कलम नंग २
समूळो डाभ
धरो
राती धोळी कणेर
कुमुद
सफेद मोगरो
बहुवर्णी फूल (सर्वजातनां फूल मालती, जाई, मचकुंद वगेरे)
पांचपटो गज १।
पीळुं रेशमी „ १
धोळुं रेशमी „ १।
पीळां ×शींगोडां नंग २गज ०॥
रातां „ „ ३ „ ०॥।

×शींगोडा एटले शींगोडाना आकारे त्रण खुणावाळी घेडवाळेला कपडाना ककडा समजवा

काळां शींगोडां नंग ३ गज ०॥।
आसमानी „ „ २ „ ०॥
लीलां „ „ १ „ ०।
जामली „ „ १ „ ०।
लीली छींट „ १ „ ०।
रेशमी धोळुं „ ६ „ १॥
सुतराऊ धोळुं „ ८ „ २
धोतियां नंग १२
खेस „ १२
पंचियां „ ३
रूमाल „ ३
कामळी „ २
सुतराऊ धोळा सवा गजना ककडा नग ३
[पाटलाना अस्तर माटे]
अङ्गलुंछणां नंग २
हाथ लुंछवाना ककडा नंग ३
ओरसियो (चंदन घसवानो)

ओरसडो
नानी सरल
सात धान्यना चाकळा शेर १।
आरती
मङ्गळदीवो
चामर
घंटडी
दर्पण
फानस
कळश नंग ४
थाळीवेलण
केरवानी माळा
अकलबेरनी माळा
स्फटिकनी माळा
सोनानी माळा
रूपानी माळा
गोमेदकनी माळा

पंचरत्ननी पोटली नंग ३
[सोनुं, रूपुं, मोती, माणेक अने प्रवाल]
कळशी
तागां
नारीयेळ
सोरगियो
देगडा नंग २
तावडी नंग २
मोटुं तपेलुं
नानी तपेलीओ
पाटला नंग २॥
पाटी नंग १०
पीतिया ,, २
ढांकणावाळी पाटी नंग ३
गुगळनी गोळी ,, १
नाडानी पुडी ,, १
कागोट ,, ४
मोटा थाळ ,, २०

नंद्यावर्त पूजननो सामान तथा नैवेद्यः—

बाजोठ
नंद्यावर्तनो पाटलो
केसर, बरास अने कस्तूरी मिश्रित चोखा
सोपारी नंग ९
पान ,, ९
पतासा ,, ९
श्रीफळ ,, ९
पैसा-रुपिया
पंचरत्ननी पोटली नग १
करंडीयो [बांधवा माटे]
घरख
चुरमाना लाडु नंग ७
पुरी नग ७
कंसारनुं पात्र
करंबानुं पात्र
घांटनु पात्र
खीरनु पात्र
भातनुं पात्र

घंटाकर्णपूजननो सामानः—

घंटाकर्णनी थाळी
अगरना ककडा नंग १०८
सफेद फूल ,, १०८
धूप
दीप
रूपियो
श्रीफळ
सुखडी शेर १॥
[कांसानी थाळीमां]
रेशमी ककडो (बांधवा माटे)
वरख
यक्षकर्दम

ध्वजापूजननो सामानः—

औषधीओ
ध्वजादंड
पाघडी
सोनानो कळश नग १
कळश नंग ४
१०८ नाळचावाळो कळश १
१०८ अथवा २७ कुवानुं पाणी
तीर्थजळ
गुलाबी खेस
मुद्रपट्टीओ
दश दिक्पालनो पाटलो
पंखणां
मोड
घाटडो
नाडु
कंकु

कपूर
मींढळ
मरडाशींगी
फूल (सर्वे जातनां)
पंचरत्ननी पोटली
पान
सोपारी
पतासां
वासक्षेप
वाकळा कोरा (सात धान्यना) शेर १।
छवेरा वावेलां शरावलां
पुंखणा
(धूसरू सांबेलुं, त्राक, रवैयो, सरैया)
संपुट

### शिखरमां मूकवानो सामान

सोनाना इन्द्र
रूपानां इंद्राणी
ढोलीओ
गादी तकीओ
रेशमनी दोरी
तांबानुं पवालुं
खांड
घी
शिखर उपरनी पाघडी
पंचरत्ननी पोटली
सोनावाणी
वाकळा
धूप
दीप
नैवेद्य
फळ
फूल
रूपानी हांलडी

### भगवाननी गादी नीचे मूकवानो सामानः–

फरता चाकनी माटी
वृषभशृंगनी माटी
गजदंतनी माटी
समूळो डाभ अने धरो
पंचरत्ननी पोटली
सफेद सरसव
जव
काचवो (चांदीनो)
चोखंडो रूपियो
अखंड चोखा

### यक्षकर्दमनी दश वस्तुओ

केसर
सुखड
अगर
बरास
कस्तूरी
गोरोचंदन
रतांजली
काचो हिंगळोक
मरच कंकोल
सोनानो वरख

### अष्ट गंधनी आठ वस्तुओ

बरास
केसर
कस्तुरी
सुखड
अगर
अम्बर
मरच कंकोळ
काचो हिंगळोक

## पंचामृतनी पांच वस्तुओ

दूध
दहीं
घी
साकर
पाणी

## रक्षा पोटली

सरसवनी

## पंच गव्य

गायनुं छाण
" मूत्र
" दूध
" दहीं
" घी

## चार पात्रनी यादी

कंसार
करंबो
चणाना बाकळा
पाणी

## सोळ पात्रनी यादी

कंसार
दहीं
भात
करंबो
मालपुडा
चोखाना पुडा
खीर
अडदनां वडां
रोटली
चणाना बाकळा
मगना बाकळा
कंकु
हळदर

सोपारीना ककडा
पान
पाणी
[साथे चार हांसवाळा दीवडा। वांसनी सळियो त्रीस, हळदर कंकुनो घोळ]

## त्रण रेखा

सुखड
केसर
कंकु

## आठ जातनी माटी

नदी संगमनी
गज दंतनी
पद्म सरोवरनी
गंगा नदीनी
उधेइनी
वृषभशृंगनी
पर्वत शिखरनी
राजदरबारनी
फरता चक्रनी

## पाटला आलेखननो सामान

केसर
सुखड
कस्तूरी
हिंगळोक
कपूर

## प्रतिष्ठानो सामान

गादी नीचे मूकवानो सामान (जुओ पानुं १९२)
सेवननो कूर्मवाळो पाटलो
यक्षकर्दम
अष्ट मंगळनो घडो

(चोखा शेर १। सोपारी नंग ७ युक्त)
मङ्गळ कुंभ
सुखडी शेर सवापांच
श्रीफळ नंग ९
सोपारी ,, १०८
फळो शक्ति प्रमाणे (२४-२४ नंग)
सर्व जातना मेवा (२७-२७ नंग)
कंसार शेर १।
वाकळा

## बिंब प्रवेश वखते सामैयाना सामाननी यादी

१ थाळ-चोखा शेर २। सात सोपारी, एक रुपियो रोकडो अने पंच-तीर्थनी प्रतिमा साथे
२ थाळ-डांगरनुं अख्याणुं शेर १३ रूपानाणा साथे
३ थाळ-चार हांसवाळो माणिक्य दीवो रूपानाणा साथे
४ थाळ-अष्ट मङ्गळ साथे
५ थाळ-नंद्यावर्त आळेखेला अने पासे पूजेला अङ्गलुंछणां नंग२ साथे
६ थाळ-चे परगडा, चोखा शेर २।, रूपानाणुं, सोपारी नंग ७
७ थाळ-चोखा शेर सवा पांच, श्रीफळ, रूपानाणुं
८ संपुट
९ पुंखणां
१० वरघोडानो बधो सामान
११ प्रभुने तेडवा जाय त्यां स्नात्र भणाववानो सामान

## शुद्धिपत्रक

| पृष्ठ | पंक्ति | अशुद्धि | शुद्धि |
|---|---|---|---|
| ५ | १० | सर्वोपद्रव | सर्वोपद्रवाद् |
| ६ | ५ | नागग्राम | ग्रहनाग |
| ७ | १ | ॐ मिति | ॐ मिति |
| ७ | ५ | नन्दा स्याज्जेन- | नन्दास्या जैन- |
| ९ | १५ | सरे पद्ममहाह्रदे | सरः पद्ममहाद्रहः |
| | | मीता सीतोद्के | सीता सीतोदका |
| २१ | २ | सूरपूज्याय | सुरपूज्याय |
| ३९ | ९ | ह्रौं | ह्रौं |
| ४२ | ४ | पसो | पैसो |
| ६० | १० | नमोऽग्निमानवाय | ॐ नमोऽग्निमानवाय |
| ६८ | १२ | नन्दा स्याज्जैन- | नन्दास्या जैन- |
| ७३ | १० | -श्चन्दनद्रुम- | -श्चन्दनद्रुम- |
| ७६ | २ | वाग्वादिनी | वाग्वादिनि |
| ७९ | १ | नद्यावर्त | नंद्यावर्त |
| ८१ | ४ | वाग्वादिनी | वाग्वादिनि |
| ८२ | ६ | क्ष्वि | क्ष्वीं |
| ९० | १२-१४ | ह्रा | ह्रीं |
| ९१ | ४ | ह्रीं ै मानव्यै | ह्रीं श्रीं मानव्यै |
| ९२ | ३ | शीलतायै | शीतलायै |
| ९६ | ६ | सर्वोपधिमयं | सर्वौपधिमयं |
| ९७ | ९ | काय | कार्य |
| १०० | १ | घण्टाकण | घण्टाकर्ण |
| १०८ | ४ | सागे आवे | सामे आवे |
| ११४ | १२ | देवदेवार्चनाथाय | देवदेवार्चनार्थाय (नार्थं तु) |
| १२२ | १ | अष्टोत्तरी शत | अष्टोत्तर शत |
| १२५ | ४ | स्वाहाः | स्वाहा |
| १२९ | १ | -संन्निहं | -सन्निहं |

| पृष्ठ | पंक्ति | अशुद्धि | शुद्धि |
| --- | --- | --- | --- |
| १३१ | ८ | भ ावी | भणावी |
| १३५ | ८ | अजलि | अंजलि |
| १३९ | ८ | श्वत | श्वेत |
| १३९ | १३ | जनाभिपेकोत्सवे | जैनाभिपेकोत्सवे |
| १४० | २ | अहते | अर्हते |



| पृष्ठ | पंक्ति | अशुद्धि | शुद्धि |
| --- | --- | --- | --- |
| १४५ | १२ | सौराष्ट्रदेशे | अमुकदेशे |

१४४ मा पृष्ठनो ११मी तथा १२मी लाईन आ प्रमाणे सुधारवी-
"पछी अष्टप्रकारी पूजानो सामान मेळवी शुभ श्रावक १०८ नाळचा वाळो कळश अथवा चार के आठ कळश क्षीरोदके पंचामृते भरी नीचेनी गाथा भणी स्नात्र करे."




इति श्री विंब प्रवेश विधि